दास्तान-ए-

मुल्ला नसरुद्दीन

मैं खोजा नसरुद्दीन, मियां!
आजाद हमेशा रहा किया!
यह झूठ न कोई बकता हूं!
मैं कभी नहीं मर सकता हूं!

लियोनिद सोलोवयेव कृत

दास्तान-ए-
मुल्ला नसरुद्दीन

पुनःलेखन एवं संपादन
वेद प्रकाश
चित्रांकन
शंकर नायक

प्रकाशक
अक्षरमाला साहित्य संस्थान
6/49, गली नं॰ 5, नाले के पास
विश्वास नगर, दिल्ली-110032

अनुक्रम

मुल्ला नसरुद्दीन

सूरज का गोला पश्चिम की पहाड़ियों के पीछे छिप गया था। सूरज छिपने के बाद मशरिक, मगरिब, सुमाल और जुनूब में फैली सुर्खी भी धीरे-धीरे सिमटने लगी थी। फिजां में ऊंटों के गले में बंधी घंटी की घनघनाहट गूंज रही थी।

एक काफिला बड़ी तेजी के साथ बुखारा शहर की तरफ बढ़ा जा रहा था। काफिले में सबसे पीछे एक गधे पर सवार जो शख्स था, वह गर्दो-गुब्बार में इस तरह लथपथ हो चुका था कि उसके तमाम बदन पर गर्द की एक मोटी तह जम चुकी थी जिससे उसका चेहरा तक पहचान में न आता था।

दीन-हीन हालत में काफिले के पीछे गधे पर सवार चला आ रहा यह शख्स कोई और नहीं, मुल्ला नसरुद्दीन था।

मुल्ला नसरुद्दीन!

बुखारा का मनमौजी-फक्कड़ इंसान, यतीमों और गरीबों का सहारा, सूदखोरों और जबरन टैक्स वसूल करने वालों का कट्टर दुश्मन...और बुखारा के अमीर क़ी आंखों में चुभने वाला कांटा था मुल्ला नसरुद्दीन!

अपने वफादार गधे के साथ शहर-दर-शहर खाक छानते हुए वह दस बरस से अपने मादरे-वतन बुखारा से दूर रहा था, लेकिन उसकी आंखों में हमेशा अपने वतन के मजलूम लोगों की चीखो-पुकार, अमीर-उमरावों के जुल्म कौंधते रहते थे।

इन दस वर्षों में वह बगदाद, इस्ताम्बूल, बख्शी सराय, तेहरान तिफलिस, अखमेज और दमिश्क जैसे सभी मुल्कों में घूम आया था। वह जहां भी जाता, गरीबों का मुहाफिज और जुल्म करने वाले अमीर-उमरावों का दुश्मन बन जाता। वह गरीबों और यतीमों के दिलों में कभी न भुलाई जाने वाली यादें और जुल्म के पैरोकारों के दिलों में खौफ के साए छोड़ जाता।

अब वह अपने प्यारे वतन बुखारा लौट रहा था, ताकि बरसों से भटकती अपनी जिंदगी को वह कुछ चैन-सुकुन-भरे ठहराव के पल दे सके।

काफिले के पीछे चल रहा मुल्ला नसरुद्दीन हालांकि गर्दो-गुब्बार में पूरी तरह लथपथ हो चुका था मगर फिर भी वह खुश था। इस धूल-मिट्टी से उसे सोंधी-सोंधी खुशबू आती महसूस हो रही थी, आखिर यह मिट्टी उसके अपने प्यारे वतन बुखारा की जो थी।

काफिला जिस वक्त शहर की चारदीवारी के करीब पहुंचा, फाटक पर तैनात

पहरेदार फाटक बन्द कर रहे थे। काफिले के सरदार ने दूर से ही मोहरों से भरी थैली ऊपर उठाते हुए चिल्लाकर पहरेदारों से कहा—'खुदा के वास्ते रुको, हमारा इंतजार करो।'

हवा की सांय-सांय और घंटियों की घनघनाहट में पहरेदार उनकी आवाज न सुन सके और फासला होने के कारण उन्हें मोहरों से भरी थैली भी दिखाई न दी। फाटक बंद कर दिए गए—अंदर से मोटी-मोटी सांकलें लगा दी गईं और पहरेदार बुर्जियों पर चढ़कर तोपों पर तैनात हो गए।

धीरे-धीरे अंधेरा फैलना शुरू हो गया था। हवा में तेजी के साथ-साथ कुछ ठंडक भी बढ़ने लगी थी। आसमान पर सितारों की टिमटिमाहट के बीच दूज का चांद चमकने लगा था।

सरदार ने काफिले को वहीं चारदीवारी के पास ही डेरा डालने का हुक्म दे दिया।

बुखारा शहर की मस्जिदों की ऊंची-ऊंची मीनारों से झुटपुटे की उस खामोशी में अजान की तेज-तेज आवाजें आने लगीं।

अजान की आवाज सुनकर काफिले के सभी लोग नमाज के लिए इकट्ठा होने लगे मगर मुल्ला नसरुद्दीन अपने गधे के साथ एक ओर को खिसक लिया।

वह अपने गधे के साथ चलते हुए कहने लगा—'ऐ मेरे प्यारे गधे! काफिले के इन लोगों को तो खुदा ने सब कुछ अता किया है जिसके लिए ये व्यापारी नमाज पढ़कर खुदा का शुक्रिया अदा करें। ये लोग शाम का खाना खा चुके हैं और अभी थोड़ी देर बाद रात का खाना खाएंगे। मेरे वफादार गधे! मैं और तू तो अभी भूखे हैं। हमें न तो शाम का खाना मिला है और न ही अब रात को मिलेगा। हम किस चीज के लिए खुदा का शुक्रिया अदा करें। अगर अल्लाह हमारा शुक्रिया चाहता है तो मेरे लिए पुलाव की तश्तरी और तेरे लिए एक गट्ठर तिपत्तियां वाला घास भिजवा दे।'

काफिले से काफी दूर आकर उसने अपने गधे को पगडंडी के किनारे एक पेड़ से बांध दिया और पास ही एक पत्थर अपने सिरहाने रखकर नंगी जमीन पर ही लेट गया। ऊपर टिमटिमाते सितारों-भरे आसमान पर उसकी नजरें टिक गईं। आसमान में टिमटिमाते सितारों का जाल-सा बुना हुआ था। पिछले दस सालों से अक्सर इन सितारों को देखते-देखते उसकी अच्छी खासी जान-पहचान हो गई थी। अक्सर वह इन सितारों को निहारता रहता था, कभी बगदाद से, कभी इस्ताम्बूल से, कभी दमिश्क से तो कभी तेहरान से।

तमाम शहरों से उसे आसमान और आसमान पर टिमटिमाते हुए सितारे एक ही जैसे लगते थे। वही गहरा और खामोश-सा आसमान और वही टिम-टिम करते जाने-पहचाने सितारे।

दुनिया-भर के शहरों में सरहद ने आकर जो गहरी-गहरी अपने-पराए की

खाई खोदी हुई हैं, ऐसा कुछ भी आसमान और उसके सितारों के दरम्यां उसने कभी महसूस न किया था।

उसे हमेशा यही लगता कि रातों की शांत व पवित्र दुआओं की आवाजें उसे बड़े धनवानों से भी धनवान बना देती थी और आखिर वह खुद को धनवान महसूस करे भी क्यों नहीं। उसे वह सब कुछ हासिल था, जो दुनिया के बड़े-बड़े रईसों को भी हासिल न था। इस दुनिया में हर आदमी का अपना-अपना नसीब होता है। भले ही अमीर लोग सोने-चांदी के बर्तनों में खाना खाएं, लेकिन वे अपनी सभी रातें छत के नीचे गुजारने को ही मजबूर हैं। इस तरह (मुल्ला नसरुद्दीन की तरह) सर्द और सितारों-भरे आसमान को निहारते हुए और कल्पना की उड़ान भरते हुए अमीर लोग कभी भी सोचने का मौका नहीं जुटा सकते—ऐसा उन बेचारों का नसीब कहां, जो उन्हें इस तरह की सहूलियत मिल सके।

एकजुट होकर नमाज अदा करते लोग अपनी इबादत पूरी करके अपने-अपने खेमों में भोजन की व्यवस्था में जुट गए।

चारदीवारी के बाहर बड़े-बड़े कड़ाहों के नीचे आग जलने लगी। जिबह के लिए तैयार भेड़ें और बकरियां बुरी तरह मिमियां उठीं। कड़ाहों के नीचे जलती आग ने भुनते हुए मसालों की गंध हवा में बिखेर दी।

मुल्ला नसरुद्दीन हवा के रुख को पहचानकर, उस जगह पर जा लेटा, जहां पर यह भूख जगाने वाली खाने के गंध न पहुंच सके।

तारों को निहारता हुआ वह सोच रहा था कि कल जब वह बुखारा शहर में प्रवेश करेगा तो उसे फाटक पर ही चुंगी अदा करनी पड़ेगी। हालांकि उसे बुखारा छोड़े दस बरस बीत चुके थे मगर अभी तक उसे बुखारा के सभी रिवाजों की पूरी जानकारी थी। उसने यही सोचकर अपनी रकम का आखिरी हिस्सा बचाकर रख छोड़ा था।

वह दुनिया के भले ही किसी भी मुल्क में रहा हो, उसे अपने बुखारा की और बुखारा के रीति-रिवाजों की हमेशा याद आती रहती थी। लेटा-लेटा वह अपने प्यारे वतन की याद में खो गया।

उसे अपने वतन से बेहद प्यार था। धूप से तपे तांबई चेहरे पर काली दाढ़ी और साफ-शफ्फाक आंखों वाला खुशमिजाज मुल्ला नसरुद्दीन तेल की चिकनाई से सनी पगड़ी, पैबंद लगे कोट और फटे जूते पहने अपने वतन से जितनी दूर होता, वतन के लिए उसके दिल में उतना ही प्यार उमड़ता।

उसे अपने बुखारा की ऊंची-ऊंची मिनारें, चरागाह, खेत, गांव और रेगिस्तान खूब याद आते थे। उसे पता चल चुका था कि पुराना अमीर गारत हो चुका है, लेकिन उसके बाद बना नया अमीर उससे भी काइयां और संगदिल था।

इस नए अमीर ने पहले अमीर से भी ज्यादा आवाम पर जुल्मो-सितम ढा रखे थे। आवाम को तरह-तरह की चुंगी लगाकर लूटा जा रहा था। वैसे नया अमीर बड़ा ही धार्मिक था। वह साल में दो बार शेख बहाउद्दीन की पवित्र दरगाह पर सजदा करने जाता था, जो बुखारा शहर के पास ही थी।

लूट-खसोट पूरे जोरों पर थी। खेत-खलिहान सूखकर जल चुके थे। धरती में दरारें पड़ गई थीं। दस्तकारियां समाप्त हो चुकी थीं और व्यापार लगातार घटता जा रहा था।

मुल्ला नसरुद्दीन ने सोचते-सोचते एक गहरी सांस ली और करवट बदलकर फिर अपनी सोचो में गुम हो गया।

सुबह की अजान के साथ ही पूरा कारवां उठ गया। ऊंट वालों ने सामान ऊंटों पर लादना शुरू कर दिया। सौदागर अपनी पगड़ियां दुरुस्त करने लगे। नसरुद्दीन भी उठा, सबसे पहले अपनी अंटी में खुंसी थैली टटोली, वह सलामत थी, फिर अपने गधे के करीब आकर उसकी पीठ पर हाथ फेरा—'ऐ मेरे वफादार गधे! चल, अपने मुल्क में दाखिल होने का मुबारक वक्त आ गया है।'

ऊंटों के गले की घंटियां बज उठीं और कारवां फाटक की ओर बढ़ गया।

फाटक में दाखिल होते ही सब एक ओर रुक गए।

पूरी सड़क पहरेदारों ने घेरी हुई थी। सिपाहियों की तादाद भी काफी थी। कुछ तो कायदे से वर्दियां पहने थे, मगर कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्हें वर्दी पहनने का सलीका तक न था। अमीर की नौकरी में अभी वे नए थे और उन्हें रिश्वतखोरी का पूरा मौका नहीं मिला था। वे चीख-चिल्ला रहे थे, उस लूट के लिए लड़ाई-झगड़ा और धक्का-मुक्की कर रहे थे, जो उन्हें व्यापारियों से हासिल होने वाली थी।

फाटक के करीब ही एक चाय की दुकान थी। वर्दी पहने अफसर-सा दिखाई देने वाला एक तुंदियल व्यक्ति बाहर आया। उसके पैरों में जूतियां थीं। उसके मोटे और थुलथुले चेहरे पर अय्याशी, बदकारी और जलालत के भाव स्पष्ट दिखाई दे रहे थे।

उसने एक ललचाई नजर से व्यापारियों की ओर देखा, फिर बोला—'हे सौदागरों! बुखारा में तुम्हारा स्वागत है। खुदा करे तुम्हें अपने काम में... अपने इरादों में कामयाबी हासिल हो। ऐ व्यापारियों! आपको यह इल्म होना चाहिए कि अमीर का हुक्म है कि जो सौदागर अपने माल का मामूली-सा हिस्सा भी छिपाने की कोशिश करेगा, उसे बेंत लगा- लगाकर मार डाला जाएगा।'

यह सुनकर व्यापारी कुछ विचलित हुए और परेशानी की हालत में रंगी दाढ़ियां सहलाने लगे। कर अधिकारी बड़ी मशक्कत के बाद पहरेदारों की ओर पलटकर बोला—'ऐ बुखारा के वफादारों! अपना काम शुरू करो।'

आदेश पाते ही सिपाही चीखते-चिल्लाते ऊंटों पर झपट पड़े। वे खुशी से

चीख-चिल्ला रहे थे, जैसे किसी लूट में शरीक हो रहे हों और अधिक-से-अधिक माल एक-दूसरे से पहले लूट लेना चाहते हों। सन के मोटे-मोटे रस्से उन्होंने अपनी तलवारों से काट डाले और देखते-ही-देखते सामान की गांठें खोल डालीं। सड़क पर कीमती सामान बिखरा दिखाई देने लगा, इसमें कीमती कपड़ों के थान, चाय, काली मिर्च, कपूर, गुलाब के इत्र की शीशियां तथा तिब्बती औषधियों के डिब्बे थे।

व्यापारी बेबस से खड़े सिपाहियों की लूट-खसोट देख रहे थे।

जिसके मन में जो आ रहा था, वह एक-दूसरे की नजर बचाकर अपनी जेब के हवाले कर रहा था।

केवल दो घड़ी...।

यह सिलसिला केवल दो घड़ी चला, फिर सभी सिपाही कर अधिकारी के पीछे जाकर खड़े हो गए।

लूट के माल से भरी उनकी जेबें फटी जा रही थीं।

फिर शुरू हुई शहर में आने और सामान लाने की वसूली।

गधा और गधे के रिश्तेदार

बुखारा में दाखिल होते समय व्यापार के लिए मुल्ला नसरुद्दीन के पास कोई सामान न था उसे तो सिर्फ शहर में दाखिल होने का टैक्स अदा करना था।

अधिकारी ने पूछा—'तुम कहां से आए हो और आने का सबब क्या है?'

मुहर्रिर ने सींग से भरी स्याही में नेजे की कलम डुबोई और मुल्ला नसरुद्दीन का बयान दर्ज़ करने के लिए तैयार हो गया।

मुल्ला नसरुद्दीन ने बताया—'हुजूरे आला! मैं ईरान से आया हूं। बुखारा में मेरे कुछ सम्बंधी रहते हैं, उन्हीं से मिलने आया हूं।'

यह सुनकर अधिकारी ने कहा—'अच्छा तो तुम अपने सम्बंधियों से मिलने आए हो, तुम्हें मिलने वालों का कर अदा करना पड़ेगा।'

'लेकिन हुजूर! मैं उनसे मिलूंगा नहीं।' मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा—'मैं तो एक जरूरी काम से यहां आया हूं।'

'काम से आए हो?' अधिकारी चीखा, उसकी आंखों में चमक उभर आई—'इसका मतलब है कि तुम अपने रिश्तेदारों से भी मिलोगे और काम भी निबटाओगे। तुम्हें दोनों कर अदा करने पड़ेंगे, मिलने वालों का भी और काम का भी। इसके अलावा उस अल्लाह के सम्मान में मस्जिदों की अराइश के लिए अतिया अदा करो जिस अल्लाह ने रास्ते में डकैतों से तुम्हारी हिफाजत की।'

मुल्ला नसरुद्दीन ने सोचा—'मैं चाहता था कि वह अल्लाह इस समय मेरी इन मुफ्तखोरों से हिफाजत करता, डकैतों से बचाव तो मैं खुद कर लेता।' लेकिन वह खामोश ही रहा क्योंकि उसे मालूम था कि इस बातचीत के प्रत्येक शब्द का मूल्य उसे दस तंके देकर चुकाना पड़ेगा। उसने चुपचाप अपनी अंटी में से थैली निकालकर शहर में दाखिले का, रिश्तेदारों का, व्यापार का तथा मस्जिदों के निर्माण का कर अदा किया। सिपाही इस फिराक में आगे को झुक-झुककर देख रहे थे कि देखें, इसके पास कितनी रकम और है, मगर जब कर अधिकारी ने उन्हें सख्त निगाह से घूरा तो वे पीछे हट गए।

मुहर्रिर की नेजे की कलम तेजी से रजिस्टर पर चल रही थी।

कर अदा करने के बाद भी नसरुद्दीन की थैली में कुछ तंके बच गए थे। कर अधिकारी की आंखों में वे तंके खटक रहे थे और वह तेजी से सोच रहा था कि वह तंके भी इससे कैसे हथियाए जाएं?

कर अदा करने के बाद मुल्ला नसरुद्दीन चलने को हुआ तो अधिकारी चिल्लाया—'ठहरो!' मुल्ला नसरुद्दीन पलटकर उसका चेहरा देखने लगा।

'इस गधे का कर कौन अदा करेगा? यदि तुम अपने रिश्तेदारों से मिलने आए हो तो जाहिर है कि तुम्हारा गधा भी अपने रिश्तेदारों से मिलेगा, इसका कर अदा करो।'

मुल्ला नसरुद्दीन ने फिर अपनी थैली का मुंह खोला और बड़ी ही नम्रता से बोला—'मेरे आका! आपने बिल्कुल दुरुस्त फरमाया है। हकीकत में बुखारा में मेरे गधे के सम्बंधियों की तादाद बहुत ज्यादा है, वरना जैसे यहां काम चल रहा है, उसे देखते हुए तो तुम्हारे अमीर बहुत पहले ही तख्त से उतार दिए गए होते और मेरे हुजूर! आप अपने लालच की वजह से न जाने कब के सूली पर चढ़ा दिए गए होते।'

इससे पहले कि कर अधिकारी उसकी बात का अर्थ समझ पाता, मुल्ला नसरुद्दीन उछलकर अपने गधे पर बैठा और उसे ऐड़ लगाकर सरपट दौड़ाता हुआ एक गली में जा घुसा। वह लगातार अपने गधे का हौसला बढ़ाते हुए कह रहा था—'और तेज—और तेज मेरे वफादार दोस्त! जल्दी भाग वरना तेरे इस मालिक को एक और 'कर' अपना ये सिर देकर चुकाना पड़ेगा—और तेज मेरे वफादार गधे, और तेज...।'

मुल्ला नसरुद्दीन का गधा भी अलग किस्म का था। मालिक ना भी कहे तब भी वह हालात को देखकर अपनी चाल बदल लेता था। उसके लम्बे और सतर्क कानों ने फाटक से आती चिल्ल-पौं और कर अधिकारी की डकराहट सुन ली थी जो अपने सिपाहियों को उस शैतान को पकड़ लाने का आदेश दे रहा था—'जाओ, जल्दी जाओ—पकड़कर लाओ उस काफिर को, आखिर वह है कौन!'

हवा में तैरती इन आवाजों ने मुल्ला नसरुद्दीन के गधे के पैरों में जैसे बिजली भर दी हो। वह किसी की भी परवाह किए बिना भागा जा रहा था। वह इतनी तेजी से भाग रहा था कि मुल्ला नसरुद्दीन को भी अपने पांव ऊपर उठाने पड़ रहे थे।

वह तो बिल्कुल गधे की पीठ पर पड़ी जीन से चिपक गया था। उसकी बाजुएं गधे की गर्दन से लिपटी हुई थीं।

यह देखकर गली के कुत्ते डर और घबराहट के मारे भौंकने लगे कि या अल्लाह! ये क्या बवाल आ गया। गली में घूमते-चुगते मुर्गे-मुर्गियां और उनके चूजे डरकर इधर- उधर भाग रहे थे। राहगीर अचरज से दीवारों के साथ सटकर खड़े हो गए थे। कोई समझ नहीं पा रहा था कि क्या मुसीबत है? किसी की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था।

उधर कुछ सिपाही उसकी खोज में इधर-उधर निकल पड़े थे। कर अधिकारी अभी तक क्रोध से थरथरा रहा था। उसकी आंखें लाल हो गई थीं और नथुने फड़फड़ा रहे थे। एक आशंका फांस की तरह उसके हलक में फंसी हुई थी कि वह आजाद खयालात वाला निडर आदमी कहीं मुल्ला नसरुद्दीन तो नहीं था?

आखिर ऐसी बेबाक बात मुल्ला नसरुद्दीन के सिवाए और कह ही कौन सकता था?

उधर लोग भी आपस में खुसर-फुसर करने लगे थे।
'ये जवाब तो मुल्ला नसरुद्दीन के ही योग्य था।'
दोपहर होते-होते यह चर्चा पूरे शहर में पहुंच चुकी थी कि एक व्यक्ति ने द्वार पर ऐसी बात कही। जिसने भी सुना, उसने यही कहा—ऐसा जवाब तो मुल्ला नसरुद्दीन ही दे सकता है।

बुखारा की यादें

मुल्ला नसरुद्दीन को दोपहर हो गई, किन्तु उसका कोई सगा-सम्बंधी उसे नहीं मिला। यहां तक कि उसे अपना वह मकान भी देखने को न मिला, जहां उसने जन्म लिया था, जहां वह खेल-कूदकर बड़ा हुआ था। मकान के बाहर एक बगीचा था, जहां छायादार हरे-भरे वृक्ष थे। कुछ दूरी पर एक झरना था जिसकी संगीतमय आवाज मन को आत्म- विभोर कर दिया करती थी।

किन्तु अब उस स्थान पर ऊसर मैदान था, जहां मकान था। वहां अब मलबे के ढेर थे। टूटी-फूटी दीवारें खड़ी थीं। एक ओर चटाइयों के जले-कटे टुकड़े सड़ रहे थे। इधर-उधर कांटेदार झाड़ियां और बेतरतीब घास उग आई थी। इंसान तो क्या वहां परिन्दा भी कभी आया हो, ऐसा नहीं लगता था।

हैरानी से उस मंजर को देखते हुए मुल्ला नसरुद्दीन आगे बढ़ा तो मलबे के एक ढेर से काले तेल की एक पतली-सी धार निकली और धूप में चमकती हुई मलबे के दूसरे ढेर में लुप्त हो गई।

वह एक काला सांप था। इंसानों द्वारा खाली छोड़ी गई जगह पर रहने वाला एक भयानक जीव। जहां कोई नहीं रहता, वहां इस जैसे भयानक जीव अपना अधिकार जमा लेते हैं।

मुल्ला नसरुद्दीन की आंखों के सामने गुजरे वक्त का एक-एक लम्हा बारी-बारी थिरकता रहा। उसकी आंखें नम हो गईं। कलेजा गमजदा हो गया।

न जाने वह कब तक यूं ही खड़ा रहता कि एकाएक किसी के खांसने की आवाज सुनकर चौंक पड़ा। खांसने वाले के शरीर को हिला देने वाली किसी बूढ़े शख्स की खांसी की आवाज थी वह। मुल्ला नसरुद्दीन ने पलटकर देखा, फटे हाल एक बूढ़ा उबड़-खाबड़ धरती को लांघता हुआ अपनी राह चला जा रहा था।

नसरुद्दीन लपककर उसके पास पहुंचा—'अस्सलामालेकुम चाचा।'

बूढ़ा ठिठककर उसे इस प्रकार देखने लगा, मानो पहचानने की कोशिश कर रहा हो।

बिना रुके मुल्ला नसरुद्दीन कह रहा था—'अल्लाह आपको सेहत और बरकत बख्शे। क्या आप बता सकते हैं कि यह खण्डर किसके मकान के हैं? कौन रहता था यहां?'

'तुम... तुम कौन हो बेटा? क्यों जानना चाहते हो?'

'मैं तो एक मुसाफिर हूं चाचा।' मुल्ला नसरुद्दीन बोला—'एक अर्से बाद बुखारा आया हूं। काफी बदला-बदला-सा लग रहा है सब कुछ।'

'ठीक कहते हो बेटा—बहुत कुछ बदल गया है बुखारा में। यह जो खण्डहरात तुम देख रहे हो, यह जीनसाज शेर मुहम्मद का घर था। एक जमाने में मैं उनसे खूब वाकिफ था। शेर मुहम्मद मुल्ला नसरुद्दीन के वालिद थे। ख्वाजा नसरुद्दीन के विषय में तो तुमने अवश्य ही सुना होगा।'

मुल्ला नसरुद्दीन उसके और करीब आ गया और बोला—'हां-हां चाचा! उसके बारे में कुछ सुना तो है, मगर आप यह तो बताएं कि मुल्ला नसरुद्दीन के वालिद शेर मुहम्मद और उनका परिवार सब कहां गए? मुल्ला नसरुद्दीन कहां है?'

'धीरे बोलो बेटा, धीरे बोलो।' कंपकंपी-सी लेकर बूढ़ा बोला—'बुखारा में हजारों जासूस हैं। यदि उन्होंने हमारी बातें सुन लीं, तो हम लोग एक नई परेशानी में पड़ जाएंगे। वाकई तुम परदेशी हो, तभी तो नहीं जानते कि बुखारा में मुल्ला नसरुद्दीन का नाम लेने पर भी पाबंदी है—सख्त पाबंदी। उसका तो नाम लेना ही जेल पहुंचा देने के लिए काफी है मेरे बेटे। तुम जरा मेरे नजदीक आओ—मैं तुम्हें बताता हूं कि शेर मुहम्मद का क्या हुआ।'

मुल्ला नसरुद्दीन की बड़ी-बड़ी आंखें घबराहट और खलबली से फैल गईं, फिर वह बूढ़े के करीब आया और मन में अनुमान लगाते हुए कि उसके पिता का क्या हुआ होगा. उसकी आंखें सोचने वाले अंदाज में सिकुड़ गईं।

बूढ़े ने खंगार-खांसकर अपना गला साफ किया, फिर मुल्ला नसरुद्दीन के कान के पास सरगोशी-सी करने लगा—'बेटा! यह वाकया पुराने अमीर के जमाने का है। मुल्ला नसरुद्दीन को उसकी हरकतों के लिए बुखारा से निकाले जाने के कोई अट्ठारह-बीस महीने के बाद एक दिन अचानक यह खबर बुखारा में फैल गई कि वह जासूस बनकर दुबारा बुखारा में लौट आया है।'

'क्या यह खबर सच्ची थी?'

'अरे नहीं बेटा! अफवाह थी, अफवाह। कोरी बकवास।' बूढ़े ने उसी राजदाराना अंदाज में गुफ्तगू की—'यह अफवाह अमीर के कानों तक भी पहुंच गई कि वह यहां गैरकानूनी धंधे कर रहा है। अमीर का मजाक उड़ाने वाले नगमे लिख रहा है और आवाम में बदफैली फैला रहा है।'

'फिर?' व्याकुलता से मुल्ला ने पूछा—'फिर क्या हुआ बुजुर्गवार?'

'होना क्या था बेटा! सिपाही नसरुद्दीन की तलाश में जुट गए। जमीन-आसमान एक कर दिया। बुखारा का चप्पा-चप्पा छान मारा, मगर सारी कवायद बेकार गई। मुल्ला नसरुद्दीन तो क्या, उसकी परछाईं भी उन्हें नहीं मिली। आखिर होता तो मिलता न।'

'फिर...?' मुल्ला की बेचैनी और उत्सुकता बढ़ती ही जा रही थी।

'सिपाहियों की इस नाकामी पर अमीर बहुत झुंझला गया और उसके हुक्म से नसरुद्दीन के वालिद, चाचा, मामू वगैरह दूर-पास के रिश्तेदारों और यहां तक कि हमदर्द और दोस्तों तक की गिरफ्तारी का हुक्म जारी कर दिया गया और सिपाहियों को हुक्म दिया गया कि उन लोगों को तब तक तकलीफें दें, जब तक कि वे मुल्ला नसरुद्दीन का पता न बता दें।' कहकर बूढ़ा एक पल के लिए रुका, फिर पुनः बोला—'यह तो खुदा का शुक्र है बेटे कि उन लोगों को खुदा ने शान्त रहने और तकलीफें जज्ब करने की हिम्मत बख्शी लिहाजा मुल्ला नसरुद्दीन अमीर के हाथों में न पड़ा, लेकिन उसके वालिद जीनसाज शेर मुहम्मद तकलीफें सहने की वजह से बीमार पड़ गए और उनकी मौत हो गई।'

'और बाकियों का क्या हुआ? मेरा मतलब है, उसके बाकी रिश्तेदार और दोस्त वगैरह?'

'अमीर के कहर से बचने के लिए वे सब बुखारा छोड़कर भाग गए। किसी को नहीं मालूम कि अब वे लोग कहां हैं। अमीर के हुक्म से उन लोगों के मकान और बगीचे वगैरह तहस-नहस कर दिए गए, ताकि उन लोगों की याद भी बाकी न बचे।'

'लेकिन उन्हें बिना वजह क्यों परेशान किया गया बुजुर्गवार? उन्हें क्यों सताया गया?' मुल्ला नसरुद्दीन चीखकर बोला—'मुल्ला नसरुद्दीन तो उस वक्त वहां था ही नहीं, यह बात तो मैं भी जानता हूं।'

मुल्ला की आंखों में आंसू आ गए, लेकिन वह बूढ़ा अपनी कमजोर नजरों की वजह से उन्हें न देख पाया।

'यह कौन कह सकता है कि मेरे बेटे कि वह यहां था भी या नहीं।'

'मैं कह रहा हूं। मुल्ला नसरुद्दीन की जहां जब इच्छा होती है, वह आता-जाता है। बेमिसाल मुल्ला नसरुद्दीन हर कहीं है और कहीं भी नहीं।'

बूढ़ा खामोशी से आगे बढ़ गया और अधिक रुकना शायद अब उसे गंवारा नहीं था।

मुल्ला नसरुद्दीन भी अपने गधे की ओर बढ़ गया, फिर उसके गले में हाथ डालकर बोला—'ऐ मेरे वफादार दोस्त। मेरे प्यारे हमसफर! तूने देख लिया न कि इस दुनिया में तेरे सिवा मेरा कोई और हमदर्द नहीं है। मेरी इस आवारा जिन्दगी में तू ही मेरा वफादार और सच्चा हमदर्द है।'

शान्त खड़े गधे ने इस अंदाज में अपनी आंखें मिचमिचाईं, मानो अपने मालिक के गम में शरीक होने की ताकीद कर रहा हो। पत्तियों को चबाता उसका जबड़ा रुक गया था और कुछ पत्तियां मुंह से बाहर लटक रही थीं।

गमजदगी की इससे बड़ी मिसाल और भला क्या हो सकती थी?

काफी देर बाद मुल्ला अपने गम पर काबू पा सका। उसके चेहरे पर आंसुओं की लकीरें सूखकर सफेद पड़ गई थीं। सामान्य होकर उसने एक गहरी सांस

ली, फिर उसके चेहरे पर दृढ़ता दिखाई देने लगी—इरादों की दृढ़ता। उसने गधे की पीठ पर प्यार से एक धौल जमाया और अपेक्षाकृत ऊंची आवाज में बोला—'कोई बात नहीं मेरे दोस्त! कोई फिक्र नहीं—मेरे दोस्त! मेरे लिए यही बड़ी बात है कि बुखारा के लोग अब भी मुझे याद रखे हुए हैं और लोग अब भी मुझे जानते हैं। किसी-न-किसी तरह हम अपने कुछ हमदर्द खोज ही लेंगे और अमीर के बारे में ऐसे-ऐसे नगमें लिखेंगे कि वह अपने तख्त पर बैठा अपने बाल नोचेगा—आ मेरे दोस्त! अब चलें।'

घोड़े का सौदा

अपने गधे की लगाम थामे मुल्ला नसरुद्दीन आगे बढ़ा जा रहा था। दोपहर का दूसरा प्रहर गुजर चुका था। गर्मी की ज्यादती की वजह से चारों तरफ सन्नाटा था। धूल भरी गुब्बार उड़ रही थी। मुल्ला पसीने से तरबतर आगे बढ़ा जा रहा था।

बाजार से गुजरते हुए उसने जानी-पहचानी सड़कों को देखा। कहवा, चाय की दुकानों व मीनारों को पहचाना। आठ-दस वर्षों के बाद भी कुछ चीजें ज्यों-की-त्यों थीं। हमेशा की तरह तालाब के किनारों पर मरियल कुत्ते आज भी सो रहे थे।

मुल्ला नसरुद्दीन वहीं तालाब के किनारे एक पत्थर पर बैठ गया। बगल में ही चायखाना था। उसने अपनी अंटी में से थैली निकाली, अब वह बिल्कुल खाली थी। गधे को उसने चरने के लिए एक ओर छोड़ दिया था। उसी से मुखातिब होकर वह बड़बड़ाया—'बेटे! थैली बिल्कुल खाली है—सत्यानाश हो टैक्स अफसर का—सारी रकम निकलवा ली वरना सामने वाली चाय की दुकान से एक चाय ही पी लेते—लेकिन खैर, कोई बात नहीं, खुदा भला करेगा—कोई युक्ति लड़ाते हैं।'

तभी उसकी नजर उस व्यक्ति पर पड़ी जो उसकी कंगाली का कारण था। यह वही कर अधिकारी था जो घोड़े पर चढ़ा चाय की दुकान की ओर आ रहा था। दो सिपाहियों ने उसके घोड़े की लगाम पकड़ी हुई थी और धीरे-धीरे घोड़े के साथ भाग रहे थे।

सिपाहियों ने चाय की दुकान के बाहर बड़े सम्मान से अपने अधिकारी को उतारा। वह मोटा तुंदियल दुकान में चला गया। दुकान के मालिक ने उसे बाहर से ही लपक लिया। खींसे निपोरते हुए वह उसे अन्दर ले गया और सम्मानपूर्वक रेशमी गद्दे पर बैठाया।

फिर उसने बेहतरीन चाय का प्याला उसकी खिदमत में पेश किया।

बाहर तालाब के किनारे बैठा मुल्ला नसरुद्दीन यह सब देख रहा था। उसका इतना आदर सम्मान होते देखकर मुल्ला के सीने पर सांप लोट रहे थे। वह

बुदबुदाया—'देखो तो, मेरी कमाई किस ऐश से उड़ा रहा है।'

अधिकारी ने सुड़क-सुड़ककर चाय पी, फिर वहीं गद्दे पर लुढ़क गया।

जल्दी ही उसके खर्राटों की आवाज चायखाने में गूंजने लगी। कभी-कभी उसके होंठ चटखने और हलक से गर्र-गर्र की आवाज भी सुनाई देने लगती थी।

दूसरे मेहमानों ने इस खयाल से धीरे-धीरे बोलना शुरू कर दिया कि कहीं कर अधिकारी की नींद में खलल न पड़ जाए। पहरेदार उसके अगल-बगल बैठकर पत्तों से उसकी मक्खियां उड़ा रहे थे।

कुछ देर बाद जब अधिकारी गहरी निद्रा में सो गया तो दोनों ने आंखों-ही-आंखों में कुछ इशारा किया, फिर उठकर बाहर आ गए। घोड़े के आगे घास डाली और नारियल की पैंदी का एक हुक्का लेकर दुकान की बगल में ही झाड़ियों से घिरे कुछ सुनसान और अंधकारपूर्ण स्थान में चले गए।

कुछ देर बाद ही मुल्ला ने हवा में गांजे की महक तैरती महसूस की। कुछ ही देर में पहरेदार मदहोश हो चुके थे।

सुबह शहर के फाटक पर घटी घटनाओं के मद्देनजर मुल्ला नसरुद्दीन ने सोचा कि कहीं पहरेदार उसे पहचान न लें, अब यहां से खिसक लेने में ही भलाई है।

'बेटा! नसरुद्दीन! पेट भरने के लिए आधा तंका कहां से आएगा।' उसने सोचा फिर आसमान की ओर चेहरा उठाकर बड़बड़ाया—'या खुदा! मदद कर! तूने न जाने कितनी बार मुल्ला नसरुद्दीन की मदद की है। हे मेरे परवरदीगार! आज फिर मुल्ला नसरुद्दीन पर रहमत की नजर कर।'

'अरे सुन!' तभी किसी ने उसे पुकारा।

मुल्ला ने पलटकर देखा। एक सजी-धजी घोड़ा गाड़ी उसके सामने खड़ी है। एक आदमी कीमती साफा और कीमती कपड़े पहने गाड़ी की खिड़की से झांक रहा है। उसे देखकर मुल्ला समझ गया कि अल्लाह ने उसकी सुन ली है और कोई खुदाई मददगार आ पहुंचा है।

जबकि उस रईस अजनबी ने सिर से पांव तक उसे देखते हुए बड़े ही रुआब से कहा—'मुझे यह घोड़ा बहुत पसंद है। बोल, क्या यह बिकाऊ है?'

उसका इशारा नसरुद्दीन से चार कदम की दूरी पर चर रहे कर अधिकारी के घोड़े की तरफ था। मुल्ला का गधा उससे कुछ ही दूरी पर था। ऐसा लगता था जैसे उस अरबी और शफ्फाक तथा चमकीली आंखों वाले उस घोड़े का मालिक मुल्ला नसरुद्दीन ही हो। आसपास कोई दूसरा था भी नहीं।

मुल्ला भी सारी स्थिति को समझ गया और बात बनाते हुए बोला—'दुनिया में ऐसा कौन-सा घोड़ा है जो बिक नहीं सकता।'

अजनबी रईस उत्साह से भरकर पुनः बोला—'सुनो दोस्त! शायद तुम्हारी जेब बिल्कुल खाली है, इसलिए मेरी बात ध्यान से सुनो। मैं यह नहीं जानना

चाहता कि यह घोड़ा किसका है या तुम्हारे पास कहां से आया या पहले इसका मालिक कौन था, मुझे कुछ नहीं जानना है। तुम्हारे कपड़ों पर पड़ी गर्द से लगता है कि तुम कहीं बहुत दूर से आ रहे हो, मेरे लिए यही काफी है। तुम मेरी बात समझ रहे हो न?'

मुल्ला नसरुद्दीन मुंह से कुछ नहीं बोला। उसने केवल सिर हिला दिया। वह फौरन समझ गया कि अमीर क्या कहना चाहता है... वह इससे भी आगे की बात समझ गया कि अब क्या होने वाला है। अब तो उसने तहेदिल से यह दुआ करनी शुरू कर दी कि कोई गुस्ताख मक्खी अन्दर सो रहे कर अधिकारी की नाक-मुंह पर भिन-भिनाकर कहीं उसे जगा न दे, वरना सारा खेल ही बिगड़ जाएगा। पहरेदारों की तो उसे कोई अधिक फिक्र थी नहीं, क्योंकि गांजे की महक हवा में अभी भी अपनी मौजूदगी दर्ज करा रही थी जिससे जाहिर था कि वे दोनों नशे में धुत्त पड़े होंगे।

अपनी समझ के अनुसार अमीर बड़े ही काबिलाना अंदाज में धीरे-धीरे उसे लाइन पर ला रहा था। वह अपनी बात बड़ी ही गम्भीरता से कह रहा था तथा अपनी बात कहने का उसका अंदाज भी बड़ा दार्शनिकों जैसा था—'तुम्हें यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि फटे-पुराने चिथड़े पहनकर ऐसे शानदार घोड़े पर चढ़ना तुम्हें शोभा नहीं देता। मत भूलो कि यह बात तुम्हारे लिए खतरनाक भी साबित हो सकती है, क्योंकि कोई भी इस बात पर शक-शुबह कर सकता है कि इस भिखारी के पास आखिर इतना बढ़िया घोड़ा कहां से आया? तुम मेरी बात समझ रहे हो ना?'

मुल्ला नसरुद्दीन की आंखों में उसके लिए प्रशंसा के भाव दिखाई देने लगे और वह स्वीकारने वाले अंदाज में जल्दी-जल्दी सिर हिलाने लगा, मानो कहना चाहता हो कि वाह मेरे आका! यह तो तुमने बड़े पते की बात कही।

अपनी बात का रंग चढ़ते देखकर अमीर ने उसे कुछ खौफजदा करने की नीयत से कहा—'बरखुर्दार! इस बात की भी बड़ी गुंजाइश है कि तुम्हें कैद में डाल दिया जाए।'

मुल्ला नसरुद्दीन का सिर स्वीकारने वाले अंदाज में जल्दी-जल्दी हिला। अपनी आंखों में भी उसने खौफजदा होने के भाव पैदा कर लिए, फिर बड़े ही अदब से वह बोला—'आप दुरुस्त फरमाते हैं मेरे आका! सचमुच यह घोड़ा मेरे जैसों की औकात से कहीं बाहर की चीज है। मेरी यह फटी-पुरानी और भिखमंगों जैसी पोशाक तो किसी गधे पर ही चढ़ने के काबिल है। मुझे तो ऐसे शानदार अरबी घोड़े पर सवारी करने की बात तो सपने में भी नहीं सोचनी चाहिए।'

मुल्ला नसरुद्दीन का जवाब सुनकर रईस बड़ा खुश हुआ। वह थोड़ा और गरूर से बोला—'हालांकि तुम काफी गरीब हो, मगर मुझे खुशी है कि गरूर

ने तुम्हें अंधा नहीं किया है। नाचीज गरीब को नरमाई ही अच्छी लगती है। ऐ मुसाफिर सुन्दर फूल बादाम के शानदार दरख्त पर ही शोभा पाते हैं, न कि किसी कटीली झाड़ी पर। यदि तुम्हें यह थैली चाहिए तो बताओ।' उसने एक थैली निकालकर नसरुद्दीन को दिखाते हुए खनखनाई—'इसमें पूरे तीन सौ तंके हैं।'

'तीन सौ तंके!' धमाका-सा हुआ मुल्ला नसरुद्दीन के जेहन में। भौंचक्का-सा होकर वह एकदम से चिल्लाया—'चाहिए—चाहिए।'

उसके हड़बड़ाहट और चिल्लाने का कारण यही था कि एक गुस्ताख मक्खी अन्दर कर अधिकारी की नाक पर भिनभिनाई थी, जिस कारण वह बहुत जोर से छींककर कुनमुनाया था और उसकी छींक की आवाज नसरुद्दीन को बाहर साफ-साफ सुनाई दी थी। कहीं यह मौका हाथ से न निकल जाए, यही सोचकर वह जल्दी से बोला—'चाहिए! मैं समझता हूं कि इस समय मुझे किसी घोड़े की नहीं, बल्कि इसकी सख्त जरूरत है। चांदी के तीन सौ तंके लेने से भला कौन इंकार कर सकता है मेरे आका! अरे यह तो ठीक ऐसे ही है जैसे किसी को सड़क पर पड़ी कोई थैली मिल जाए।'

अमीर ऐसे अंदाज में मुस्कराया, मानो उसनें कोई बड़ी बाजी जीत ली हो। बोला—'लगता है तुम्हें सड़क पर कोई दूसरी ही चीज मिली है, लेकिन मैं इस रकम से उस चीज को बदलने को तैयार हूं जो तुम्हें सड़क पर मिली है, यह लो तीन सौ तंके—उस चीज के बदले अब ये तुम्हारे हुए।'

मुल्ला नसरुद्दीन ने थैली ले ली।

अमीर ने अपने चेचक के दाग से भरे चेहरे वाले नौकर की तरफ देखा, वह बग्गी के घोड़ों के पास खड़ा चाबुक से अपनी पीठ खुजला रहा था। उसका चेहरा खुरदरा और पत्थर की तरह कठोर था तथा आंखों में मक्कारी भरी चमक थी। मक्कारी में वह किसी भी सूरत में अपने मालिक से कम दिखाई नहीं दे रहा था। अपने मालिक का इशारा पाकर वह कर अधिकारी के घोड़े की ओर बढ़ने लगा। अपने मालिक और नसरुद्दीन के बीच हुआ पूरा वार्तालाप वह सुन ही चुका था।

उसे घोड़े की ओर बढ़ते देखकर मुल्ला नसरुद्दीन के दिमाग में खतरे की घंटी बज उठी। उसने फौरन फैसला कर लिया कि तीन मक्कारों को एक साथ एक ही सड़क पर नहीं होना चाहिए, अतः उसने अमीर की नेक नीयती और रहम दिली का कसीदा पढ़ा और अपने गधे पर सवार हो गया, फिर उसने गधे को ऐसी ऐड़ लगाई कि वह सुस्त और आलसी-सा गधा फौरन कमान से निकले तीर की भांति सरपट दौड़ लिया।

करीब एक फर्लांग दूर जाकर मुल्ला नसरुद्दीन ने पलटकर देखा, खुरदरे चेहरे वाला सेवक घोड़े को अपनी गाड़ी से बांध रहा था। करीब आधा फर्लांग

दूर जाकर वह फिर पलटा तो वहां नजारा ही दूसरा था। उसने देखा कि कर अधिकारी और रईस आपस में गुंथे हुए हैं। आपस में एक-दूसरे की दाढ़ियां पकड़-पकड़कर नोच रहे हैं। चायखाने में बैठे तमाम ग्राहक बाहर आकर तमाशबीन बन चुके थे।

सिपाही और खुरदरे चेहरे वाला नौकर रईस और कर अधिकारी को छुड़ाने की कोशिश में लगे थे।

मुल्ला नसरुद्दीन ने फौरन किसी गली में घुसकर नौ-दो ग्यारह होना ही बेहतर समझा, वह फौरन एक ऐसी गली में घुस गया जो काफी लम्बी और तंग थी। काफी दूर जाकर जब उसे विश्वास हो गया कि वह उन लोगों की पकड़ में आने से बाहर हो गया है तो उसने गधे की लगाम खींच दी और बोला—'ठहर मेरे बेटे! ठहर, अब ज्यादा भागने की जरूरत नहीं। अब... ।'

मुल्ला नसरुद्दीन के शब्द अधूरे ही रह गए। किसी तेजी से भागते आ रहे घोड़े के टापों की आवाज सुनकर वह बुरी तरह चौंका।

उसने पलटकर देखा तो छक्के छूट गए।

खुरदरे चेहरे वाला नौकर बिल्कुल उसके सिर पर आ पहुंचा था।

वह चिल्लाया—'ओह मेरे वफादार गधे! जल्दी से भाग और मुझे यहां से निकाल ले चल—मैं तुझे बढ़िया नाश्ता कराऊंगा।'

लेकिन तब तक देर हो चुकी थी।

वह घुड़सवार तेजी से उसके आगे आ चुका था। यह वही खुरदरे चेहरे वाला था जिसकी खामोश आंखों में वही मक्कारी भरी चमक थी। वह रईस की गाड़ी से खोलकर लाए घोड़े पर सवार था। उसने गली में घोड़े को आड़ा खड़ा करके नसरुद्दीन का रास्ता रोक लिया।

मुल्ला नसरुद्दीन ऐसा हो गया जैसे उसे जानता ही न हो और बड़े कायदे, अदब और प्यार से बोला—'ऐ भलेमानुष! किसी और को भी निकल जाने दो। ऐसी संकरी गली में लोगों को सीधी-सीधी सवारी खड़ी करनी चाहिए, आड़ी-तिरछी नहीं।'

नौकर एक बदनीयत हंसी हंसा, फिर अपने नापाक इरादों का परिचय देते हुए बोला—'अब तो इस रास्ते को भूल जाओ—अब तो तुम्हारे पास एक ही रास्ता है जो तुम्हें सलाखों के पीछे ले जाएगा। क्या तुम जानते हो कि घोड़े के उस असली मालिक, टैक्स अफसर ने मेरे मालिक की आधी दाढ़ी नोच डाली है और मेरे स्वामी ने उसकी नाक तोड़ डाली है। अब कल अमीर की अदालत में पेश होने के लिए तैयार हो जाओ बरखुर्दार! तुम्हारे सितारे गर्दिश में आ गए हैं।'

'मेरे भाई!' मुल्ला नसरुद्दीन ने आश्चर्य से आंखें फैलाकर कहा—'तुम कहना क्या चाहते हो? आखिर इतने रुतबे वाले लोगों के लड़ने का क्या सबब

है? और... और मुझे इन बातों से क्या लेना-देना। तुमने मेरा रास्ता क्यों रोक लिया? क्या मैं उनका फैसला करूंगा। मेरे भाई! उन्हें अपना फैसला खुद कर लेने दो।'

'खामोश!' नौकर चिल्लाया—'वापस चलो, तुम्हें उस घोड़े के बारे में जवाब देना है।'

'किस घोड़े का भाई?' नितांत अनजान बनते हुए मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा—'कैसा घोड़ा? किसका घोड़ा?'

'ये बेअदबी और वह भी मेरे साथ?' खुरदरे चेहरे वाला गुर्राया—'जानबूझकर अनजान न बन—मैं उस घोड़े की बात कर रहा हूं जिसके एवज में मेरे मालिक ने तुझे तंकों से भरी थैली दी है।'

'खुदा कसम भाई! तुम तो बड़ी गलतफहमी के शिकार हो।' मुल्ला नसरुद्दीन ने आंखें तरेरी—दरअसल इस मामले में घोड़े का तो कुछ लेना-देना ही नहीं है। तुमने तो वहां खड़े पूरी बात सुनी थी। तुम खुद ही सही फैसला करो। तुम्हारा मालिक बड़ा ही नेक है। एक गरीब की मदद करने के ख्याल से तुम्हारे रहमदिल मालिक ने मुझसे पूछा—क्या तुम तीन सौ तंके लेना चाहोगे? मैंने हां कह दी और उसने मुझे चांदी की तंकों की यह थैली दे दी। खुदा उसे उम्रदराज करे। उसने मुझे रकम देने से पहले यह जानने के लिए कि मैं वास्तव में उसकी इस मेहरबानी के काविल हूं भी या नहीं, परखना चाहा कि मुझमें नरमाई और नेकी भी है या नहीं, उसने कहा—'मैं नहीं जानना चाहता कि यह घोड़ा कहां से आया और किसका है। देखा था न तुमने? वह जानना चाहता था कि कहीं मैं घमंड में आकर अपने आपको घोड़े का मालिक तो नहीं बता रहा? मैं खामोश रहा, वह नेक और रहमदिल इंसान खुश होकर बोला—मेरे जैसों के लिए यह घोड़ा जरूरत से ज्यादा अच्छा है, मैंने उसकी बात मान ली तो वह और भी ज्यादा खुश हुआ, फिर उसने कहा कि मैं सड़क पर कोई ऐसी चीज पा गया हूं, जिसके बदले मुझे यह तीन सौ तंके मिल सकते हैं। उसका इशारा जरूर मेरी ईमानदारी और इस्लाम के प्रति मेरे यकीन की तरफ था। यह यकीन मुझे पाक जगहों पर घूमने से हासिल हुआ है। इसके बाद ही उसने मुझे इनाम दिया। इस नेक काम के जरिए वह कुरान शरीफ में बताए गए जन्नत को जाने के मार्ग में पड़ने वाले उस पुल पर से अपना सफर अधिक आसान बनाना चाहता था जो बाल से भी अधिक बारीक है और तलवार की धार से भी अधिक तेज है। इबादत के वक्त मैं खुदा को तुम्हारे मालिक के इस नेक काम का हवाला दूंगा, ताकि अल्लाह ताला उस पुल पर उसके लिए बाड़ लगवा दे।'

खुरदरे चेहरे वाले ने बड़ी खामोशी से उसकी बात सुनी। इस बीच वह चाबुक से अपनी पीठ सहलाता रहा। पूरी बात सुनने के बाद वह एक काइयां-सी हंसी हंसा, फिर बोला—'ऐ मुसाफिर! तुम्हारी बात बिल्कुल सही

है। आखिर इस बात का मतलब पहले मेरी समझ में क्यों नहीं आया। तुम्हारी बातचीत का मतलब बड़ा ही नेक है, लेकिन क्योंकि उस दूसरी दुनिया के रास्ते का पुल पार करने में तुमने मेरे स्वामी की सहायता करने का निर्णय लिया है तो अधिक सुरक्षा तो इसी में है कि यह बाड़ पुल के दोनों ओर लगाई जाए! मैं भी खुशी-खुशी खुदा से दुआ करूंगा कि वह मेरे स्वामी के लिए दूसरी तरफ भी बाड़ लगा दे।'

'तो मांगो दुआ—मैंने कब मना किया है?' मुल्ला नसरुद्दीन बोला—'कौन रोकता है तुम्हें, बल्कि यह तो तुम्हारा फर्ज है। क्या कुरान में नहीं कहा गया है कि गुलाम और नौकरों को अपने मालिक के लिए रोजाना दुआ मांगनी चाहिए और इसके लिए उन्हें अलग से किसी इनामो-इकराम की भी उम्मीद नहीं रखनी चाहिए।'

खुरदरे चेहरे वाले के चेहरे पर क्रोध के भाव उभरे। आंखें फैल गईं और घोड़े को ऐड़ लगाकर मुल्ला नसरुद्दीन को दीवार की ओर दबाकर वह गुर्राया—'चल, गधे को वापस मोड़—जल्दी कर, तेरा फैसला तो अमीर की अदालत में ही होगा।'

'अरे यार! तुम तो ख्वाहमख्वाह खफा हो रहे हो।' कुछ नर्म पड़ते हुए मुल्ला नसरुद्दीन बोला—'पहले मेरी पूरी बात तो सुन लो। मैं तो तीन सौ तंकों के हिसाब से इतने ही शब्दों की दुआ करने वाला था, लेकिन अब मैं समझता हूं कि मैं ढाई सौ शब्दों की ही दुआ पढ़ लूंगा हालांकि मेरी ओर की बाड़ कुछ मोटी-पतली हो जाएगी, मगर खैर, कोई बात नहीं, ऐसा करो पचास शब्दों की दुआ, तुम भी पढ़ लेना। खुदा तो सब कुछ जानता है, वह उतनी ही लकड़ी की बाड़ तुम्हारी तरफ से भी दूसरी ओर लगा देगा।'

'क्यों?' खुरदरे चेहरे वाले ने आंखें तरेरीं—'मेरी तरफ की बाड़ तुम्हारी तरफ का छठा हिस्सा क्यों?'

'अरे भाई! वह सबसे अधिक खतरनाक स्थान पर जो बनेगी।'

'नहीं।' नौकर अकड़ गया—'मुझे ऐसी छोटी बाड़ कुबूल नहीं। इसका मतलब तो यह हुआ कि पुल का कुछ हिस्सा बिना बाड़ के ही रह जाएगा। इससे तो मेरे मालिक को खतरा पैदा हो जाएगा। मैं तो उस खतरे की बात सोचकर ही सहम जाता हूं। मेरी राय तो यह है कि हम दोनों को डेढ़-डेढ़ सौ शब्दों की दुआ मांगनी चाहिए ताकि पुल के दोनों तरफ एक-सी बाड़ लगे। कम-से-कम दोनों तरफ सुरक्षा तो रहे।' फिर चेतावनी-सी देते हुए वह बोला—'अगर तुम मेरी बात से इत्तफाक नहीं रखोगे तो इसका यही मतलब होगा कि तुम मेरे मालिक का बुरा चाहते हो। तुम चाहते हो कि वह पुल से नीचे गिर जाए। अगर ऐसा चाहते हो तो तुम्हें जेल का रास्ता देखना होगा।'

मुल्ला नसरुद्दीन को लगा कि यदि कहानी ज्यादा लम्बी खिंची तो उसकी

अंटी से थैली खिसक जाएगी। इसलिए उसने डेढ़ सौ शब्दों की दुआ ही क़बूल कर ली और जब उन दोनों ने अपना-अपना रास्ता पकड़ा तो मुल्ला नसरुद्दीन की थैली का आधा वजन कम हो चुका था।

दूर का चचेरा भाई

खुरदरे चेहरे वाले नौकर ने अपने घोड़े का रुख गली की ओर किया, फिर पलटकर नसरुद्दीन से बोला—'अच्छा दोस्त! अब मैं चलता हूं। तुम मुझे मिले ही नहीं, न जाने तुम्हें जमीं खा गई या आसमान निगल गया—वैसे आज हमने बड़े सवाब का काम किया है।'

'हां मेरे मेहरबान! भले और वफादार नौकर तुम्हें सचमुच अपने मालिक की रूह की कितनी चिन्ता है। तुम एक दिन मुल्ला नसरुद्दीन की टक्कर के हो जाओगे।'

मुल्ला नसरुद्दीन का नाम सुनते ही नौकर के कान खड़े हो गए। उसकी आंखें चमकने लगीं। वह घोड़े की लगाम खींचकर तेजी से नसरुद्दीन के करीब आया और बोला—'तुम उसे कैसे जानते हो?'

'जानता कहां हूं—यूं ही उसका जिक्र सुना था।' मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा और दिल- ही-दिल में यह भी सोचा कि यह खुरदरा इतना सीधा नहीं है।

वह उसके कुछ और करीब आ गया और बोला—'तुम्हारा उससे क्या रिश्ता है? जरूर तुम उसके परिवार के किसी आदमी से परिचित हो।'

नहीं, ऐसी बात नहीं है। मैंने तो उसका सिर्फ नाम ही सुना है, बाकी उसके घर के किसी सदस्य से मेरा कोई संबंध नहीं है।' मुल्ला नसरुद्दीन ने सहज भाव से कहा।

'सुनो! मैं तुम्हें एक रहस्य की बात बताता हूं, किसी पे जाहिर न करना—मैं उसका दूर का चचेरा भाई हूं। हम दोनों बचपन में साथ-साथ ही रहते थे।'

नसरुद्दीन अच्छी तरह समझ गया कि वह जासूस है, अतः वह चुप रहा। खुरदरे की बात सुनकर उसने उसे गहरी नजरों से देखा जरूर, मगर किसी किस्म की कोई प्रतिक्रिया जाहिर नहीं की।

वह पुनः बोला—'इस जालिम अमीर ने उसके वालिद, दो भाइयों और दो चाचाओं को बड़ी बुरी मौत मरने पर मजबूर किया था। कैदखाने में उन पर बड़े जुल्म ढाए गए थे।'

इस दफा भी नसरुद्दीन चुप रहा।

'अमीर के सभी मंत्री पागल और सिरफिरे हैं।' वह फिर बोला—'उस नेक इंसान के पीछे पड़े हैं, जो सबका भला चाहता है।'

नौकर की आंखों में लालच की चमक थी। उसका काम ही यह था कि धर्म की खिलाफत और तख्त से बगावत करने वाली विचारधारा के लोगों को वह

गिरफ्तार करवाकर अच्छा-खासा नांवा खींच ले।

'तुम नसरुद्दीन के विषय में कुछ बोलो मेरे भाई। मैं उससे मिलने के लिए, उसके हालात जानने के लिए बेकरार हूं।'

लेकिन मुल्ला नसरुद्दीन ने तो जैसे होंठ सी लिए थे।

'अपने अमीर के विषय में मैं क्या कहूं।' एक तीर उसने और छोड़ा—'पक्के उल्लू हैं। यह भी पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता कि अल्लाह का वजूद है ही।'

मुल्ला का दिल चाहा कि उसे एक करारा जवाब दे। लेकिन उसने मुंह नहीं खोला।

अब खुरदरा नौकर बिल्कुल हताश हो गया। अपनी कोई तरकीब कारगर न होते देख उसे गुस्सा आ गया। उसने न जाने किसको भद्दी-सी गाली दी, फिर घोड़े को ऐड़ लगाकर लगभग छलांगे लगाता हुआ गली से पार हो गया।

वातावरण में एक बार फिर खामोशी छा गई। घोड़े की टापों से उड़ी गर्द ही वातावरण में दिखाई दे रही थी।

उसके जाने के बाद नसरुद्दीन मुस्कराया—'तो मेरे सम्बंधी अभी भी जिंदा हैं। उस बुजुर्गवार ने ठीक ही कहा था, यहां तो कदम-कदम पर जासूस भरे पड़े हैं, मुल्ला जी।' जैसे अपने आपसे ही उसने कहा—'बड़ी होशियारी से काम लेना होगा। पुरानी कहावत है कि कसूरवार की जुबान सिर के साथ ही कलम की जाती है।'

और फिर—उस दिन मुल्ला बेवजह शहर की सड़कों की खाक छानता रहा। वह कभी खुरदरे नौकर को कोसता कि कमबख्त बेवजह आधी रकम ले मरा तो कभी कर अफसर और रईस के बीच दाढ़ी नोच लड़ाई की याद करके मुस्करा उठता।

गधे की पूंछ और जुए का दांव

एक चाय की दुकान के बाहर जाकर नसरुद्दीन ने अपना गधा रोका। शहर का चक्कर लगा-लगाकर वह थक गया था। सोचा, चाय पीकर कुछ ताजादम हो ले।

दुकान में काफी भीड़-भाड़ थी। पास ही नानबाई की दुकान थी, जिसे देखकर उसे भूख का अहसास हुआ। वह दुकान में घुस गया और एक कोने में जा बैठा। दुकान में ऐसी भीड़ थी कि अपने लिए खाने का ऑर्डर देने के लिए भी उसे हलक फाड़कर चिल्लाना पड़ा।

और जब वह दुकान के बाहर आया तो तीन-चार प्लेट कीमा, दो रकाबियां चावल और दो दर्जन समोसे डकार गया और अब एक अजीब-सी सुस्ती उस पर छा रही थी। शरीर शिथिल-सा पड़ गया था। गर्मी भी बहुत थी, खाने और

गर्मी के कारण तबीयत में भारीपन-सा लिए वह चाय की दुकान में आया और एक गद्दे पर पसर गया। चाय के लिए बोलकर वह भविष्य के विचारों में खो गया।

वह सोचने लगा कि इस समय मेरे पास अच्छी-खासी रकम है। इस रकम को किसी धंधे में लगा दिया जाए। यह रकम जीनसाजी या बर्तन बनाने के काम में लगा देना अच्छा रहेगा। इन दोनों कामों को मैं बेहतर जानता हूं। आखिर कब तक यूं ही घूमता रहूंगा। क्या मैं कोई धंधा नहीं कर सकता? क्या मैं किसी से बदतर हूं? मूर्ख हूं, क्या मेरे नसीब में एक हसीन और मेहरबान बीवी नहीं है, क्या मैं बाप नहीं बन सकता...।' फिर उसकी कल्पना में एक नन्हा-मुन्ना बच्चा तैरने लगा और वह मुस्कराकर सोचने लगा—'अल्लाह कसम! वह नन्हा शैतान बड़ा ही शरारती होगा और बड़ा होकर मेरी तरह शैतान निकलेगा—मैं अपना सारा इल्म, सारी होशियारी उसमें भर दूंगा। ठीक है ऐसा ही सही, मैं आज ही निश्चय करता हूं कि अब मैं बेचैन और अवारागर्दी भरी यह जिन्दगी छोड़ दूंगा। अब काम शुरू करने के लिए, मुझे जीनसाज या कुम्हार की दुकान खरीदने के लिए कम-से-कम तीन सौ तंके चाहिए और मेरे पास कुल डेढ़ सौ तंके ही हैं। तंकों का ख्याल आते ही उसे खुरदरे नौकर की याद आ गई और डेढ़ सौ तंके झटक लेने के लिए वह उसे कोसने लगा।

फिर वह होंठों-ही-होंठों में बड़बड़ाया—'खुदा इसे गारत करे, जिस रकम की मुझे जरूरत थी, कमबख्त वही रकम छीन कर ले गया।'

'वाह-वाह! एक बार फिर भाग्य ने साथ दिया—बीस तंके।' इस आवाज के साथ ही तांबे की थाली में पासा गिरने की आवाज सुनाई दी।

मुल्ला नसरुद्दीन चौंका।

जुआ?

सचमुच बाहर जुआ हो रहा था। पशु बांधने के खूंटों के पास की जमीन पर कुछ लोग घेरा बनाए बैटे थे। चायखाने का मालिक घेरे के पीछे खड़ा गर्दन उचकाकर उनके सिरों के ऊपर से झांक रहा था।

मुल्ला नसरुद्दीन कोहनियों के सहारे उठा, फिर सोचने लगा—'देखना तो चाहिए, दूर से देखने में हर्ज ही क्या है...न...न... मैं जुआ नहीं खेलूंगा, मैं ऐसा मूर्ख थोड़े ही हूं।'

वह उठकर बाहर जुआरियों के पास आया और झुण्ड के करीब आकर चाय वाले के कान के पास मुंह लाकर फुसफुसाया—

'मूर्ख लोग फायदे के लालच में अपना आखिरी सिक्का तक गवां देते हैं। पैगम्बर साहब ने रुपयों के लिए जुआ खेलने को मना किया है। खुदा की बड़ी मेहरबानी है कि यह गन्दी आदत मुझे नहीं पड़ी, लेकिन इस लाल बालों वाले का नसीब तो देखो, लगातार चौथी बार जीता है। देखो-देखो, ओह! पांचवीं

बार भी जीत गया। यह तो भई...ओह! छठी बार भी जीत गया। नसीब का बड़ा धनी है, मैंने तो ऐसी किस्मत किसी की नहीं देखी—अरे वाह! फिर दांव लगा रहा है, अरे बददिमाग! बेवकूफ! उसे तो दौलत का झूठा सपना जुए की तरफ खींच रहा है, हालांकि गुरबत ने उसके रास्ते में गड्ढा खोद रखा है। इंसान की मूर्खताओं का कोई अन्त नहीं। इस लाल बालों वाले को मजा चखाना चाहिए। अगर वह सातवीं बार भी दांव जीतता है तो मैं इससे दांव बदूंगा। वैसे मैं जुए से सख्त नफरत करता हूं। काश! मैं भी अमीर होता तो मैं न जाने कब का जुआ बंद करवा चुका होता।'

लाल बालों वाला, इस बार भी पासा फेंककर जीत गया, उसकी यह सातवीं जीत थी। अब मुल्ला नसरुद्दीन से न रहा गया, वह आगे बढ़ा और खिलाड़ियों को अलग हटाते हुए जुआरियों के घेरे में जा बैठा।

जीतने वाले जुआरी से पासे लेकर उसने उन्हें उलट-पलटकर देखा, फिर बोला—'मैं भी तुम्हारे साथ दांव खेलना चाहता हूं।'

'कितनी रकम है?' जीतते रहने के कारण उसकी आवाज कांप रही थी। वह तो जैसे हर खिलाड़ी का माल हड़पने के लिए उतावला था।

मुल्ला नसरुद्दीन ने अपनी अंटी में से थैली निकाली, जरूरत के लायक पच्चीस तंके उसमें ही छोड़ दिए, बांकी तंके तांबे के थाल में डाल दिए। दूर तक चांदी के सिक्कों की खनखनाहट सुनाई पड़ी। बाकी जुआरी समझ गए कि यह ऊंचा दांव लगाने वाला खिलाड़ी है।

और फिर—ऊंचे दांवों का खेल शुरू हो गया।

लाल बालों वाले ने पासे उठा लिए और खेल शुरू हो गया। वह देर तक पासों को खनखनाता रहा। न जाने क्यों अब उसके चेहरे पर झिझक दिखाई देने लगी थी। सभी जुआरी सांस रोककर देख रहे थे।

यहां तक कि मुल्ला नसरुद्दीन का गधा भी सिर उठाकर देखने लगा। उसके कान खड़े हो गए थे।

अब केवल पासों की खनखनाहट ही वहां सुनाई दे रही थी।

अन्त में लाल बालों वाले ने पासे फेंके।

दूसरे खिलाड़ी गर्दन बढ़ाकर देखने लगे तथा एक साथ पीछे की ओर लुढ़ककर बैठ गए। उन्होंने एक साथ ही लम्बी-लम्बी सांसें लीं। मानो ये सब सांसें एक ही सीने से निकली हों।

बेचारे जुआरी का चेहरा पीला पड़ गया। उसके मुंह से एक दर्दनाक आह-सी निकली। पासे पर तीन दिखाई दिया।

वह हार रहा था, इसका विश्वास उसे हो गया, क्योंकि एक उतना ही कम निकलता था, जितना कि छः और दूसरा कोई भी पासा मुल्ला नसरुद्दीन के अनुकूल होगा।

पासों को मुट्ठी में लेकर हिलाते हुए उसने चमकती आंखों से इधर-उधर देखा, उसे पूरा विश्वास था कि आज भाग्य उसके साथ है, यही सब सोचकर उसकी गर्दन गर्व से कुछ तन गई थी, लेकिन यह उसकी भूल थी।

वह भूल चुका था कि भाग्य सनकी और थाली के बैंगन के समान होता है जो इधर-उधर लुढ़कता है। नसरुद्दीन के भाग्य ने भी सोचा कि यह उस पर बड़ा गर्व कर रहा है, अतः इसे सबक सिखाना ही होगा। इस काम के लिए उसने उसके गधे को चुना।

एकाएक गधा पलटी खा गया। उसकी पीठ जुआरियों की ओर हो गई। इधर मुल्ला नसरुद्दीन पासे फेंकने के लिए अभी हाथ हिला ही रहा था कि एकाएक गधे की पूंछ उसके हाथ से टकराई और पासे उसके हाथ से फिसल गए।

पासे देखते ही लाल बालों वाले के हलक से खुशी भरी चीख निकली। वह जीत गया था। खुशी के कारण वह पेट के बल तंकों वाले थाल पर लेट गया। दांव पर लगी रकम उसने अपने भारी बदन से ढक ली।

मुल्ला द्वारा फेंके गए पासे काने थे।

दांव हारते ही मुल्ला नसरुद्दीन को जैसे काठ मार गया। स्तब्ध-सा बैठा वह अपना होंठ चबाता रहा। उसकी फटी-फटी आंखों के सामने जैसे सारी सृष्टि आपस में गुड़मुड़ होती जा रही थी।

कुछ क्षण... केवल कुछ ही क्षण वह इस स्थिति में बैठा रहा, फिर एकाएक उछल कर उठा, पास ही पड़ा एक डंडा उठाया और गधे पर पिल पड़ा—'नामुराद! कमबख्त गधे हरामखोर! बदबूदार जानवर! जानवरों की जमात के लिए लानत। यह वक्त मिला था तुझे अपनी पीठ फेरकर पूंछ घुमाने का कमबख्त! खुदा तुझे गारत करे।'

पिटते हुए गधा बुरी तरह उछल-उछलकर रेंकने लगा।

मुल्ला की ऐसी झुंझलाहट और क्रोध देखकर बाकी जुआरी व्यंग्य से मुस्कराने या हंसने लगे थे। वे खुशी से चिल्ला रहे थे। सबसे अधिक जोर से लाल बालों वाला जुआरी चिल्लाया जो यह दांव जीत कर स्वयं को सबसे अधिक खुशनसीब समझ रहा था।

मुल्ला नसरुद्दीन थककर हांफने लगा। डंडा उसने एक ओर फेंक दिया।

'अरे गुस्सा थूक दो दोस्त! आओ, एक दांव और खेलो, अभी तो तुम दो-चार दांव और भी खेल सकते हो।' लाल बालों वाले ने उसे उकसाया—'अभी तो पच्चीस तंके और भी हैं तुम्हारे पास।'

'हां-हां क्यों नहीं। मैं भी यूं हार मानने वाला नहीं।' मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा।

उसने सोच लिया था कि जब सवा सौ तंके चले गए तो इन पच्चीस तंकों को ही रखकर वह क्या करेगा, इन्हें भी दांव पर लगा देना चाहिए—आर या पार।

सोचते हुए वह फिर फड़ पर बैठ गया और पासे उठा लिए।
एक बार फिर बाजी जम गई। सभी जुआरी आगे को झुक आए।
मुल्ला नसरुद्दीन ने पासे फेंके, इस बार वह जीत गया।
अब पासे लाल बालों वाले के पास चले गए।
पासे फेंकने से पहले उसने कहा—'सारी रकम?'
'ठीक है पासे फेंको।'
उसने पासे फेंके, दांव उल्टा पड़ा।
वह हार गया।
और फिर वह दूसरा दांव भी हार गया। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि दोनों दांव वह हार गया। उसे जैसे विश्वास ही नहीं हुआ कि उसका भाग्य पलटा खा गया था और अब सौभाग्य की दृष्टि नसरुद्दीन पर है।
वह मोटे-मोटे दांव अड़ता रहा, हर बार इस उम्मीद के साथ कि हारी हुई रकम एक ही झटके में वापस आ जाएगी, मगर ऐसा नहीं हुआ। उसने सात-आठ मोटे दांव लगाए और हर बार हारा।
मुल्ला नसरुद्दीन के आगे थाल में तंकों का ढेर लग गया, जब करीब सोलह सौ तंके वह हार चुका तो जैसे बौखला गया।
सभी साथी दम साधे यह दांव देख रहे थे।
लाल बालों वाला बौखलाकर बोला—'यदि कोई शैतान तुम्हारी मदद कर रहा है तो दूसरी बात है, वरना तुम हर दांव नहीं जीत सकते। तुम्हारे पास सोलह सौ तंके हैं और मेरे पास...।' उसने अपनी जेब से एक थैली निकाली—'यह रकम है जो मैंने अपनी दुकान का माल खरीदने के लिए रखी हुई थी, मैं तुम्हारी सारी रकम के मुकाबले इसे दांव पर लगाता हूं—मंजूर है?'
मुल्ला नसरुद्दीन भी ऊंची आवाज में चिल्लाया—'मंजूर है, माल सामने डाल।'
लाल बालों वाले ने अपनी थैली थाल में उड़ेल दी।
सोने के सिक्कों-तिल्लों, रुपए और तूमानों से थाल भर गया।
वहां और भी अधिक भीड़ एकत्रित हो गई थी। एक बड़ा घेरा बन गया था, उत्सुकता से देखने वालों का।
ऐसा भारी जुआ होते वहां कभी नहीं देखा गया था। चाय पीने के तलबगार चाय पीना भूल चुके थे। भट्टियों पर रखी केतलियों में पानी बुरी तरह खौल रहा था। चाय वाला अपनी दुकानदारी करना भूल चुका था।
फड़ पर बैठे जुआरियों की सांसें तेजी से चल रही थीं, दिल धड़क रहे थे।
लाल बालों वाले ने पासे फेंककर पलकें मूंद लीं। वह पासे देखने में भी भय महसूस कर रहा था।
पासे पड़ते ही सभी लोग चिल्ला उठे।

'ग्यारह! ग्यारह!!'

इसी उद्घोष के बाद मुल्ला नसरुद्दीन को लगने लगा कि जीत बहुत मुश्किल है। अब केवल बारह नम्बर ही जिता सकते थे।

अब लाल बालों वाले ने आंखें खोल दीं और अपने साथियों के साथ वह भी चिल्लाने लगा—'ग्यारह! ग्यारह!! तुम हार गए। हा—हा—हा—मैं जीत गया।'

मुल्ला नसरुद्दीन का बदन ठंडा पड़ गया, लेकिन फिर भी वह मुस्कराया और बोला—'अभी पासे फेंकने बाकी हैं—।' कहकर उसने पासे उठा लिए, फिर मुट्ठी में हिलाकर फेंकने की तैयारी करने लगा।

मगर अचानक उसने अपना हाथ रोका और पलटकर अपने गधे से बोला—'इधर पलट! अब इस पर पूंछ मार, जीत की पूछं—ये दांव तुझे जीतना है, समझा! वरना आज तेरी खैर नहीं।'

मुल्ला ने दूसरे हाथ से पूंछ पकड़कर पासे वाले हाथ की मुट्ठी पर झाड़ा-सा लगाया, फिर पासे फेंकने के लिए हाथ उठाया। वहां बैठा प्रत्येक व्यक्ति जैसे मानसिक तनाव में आ चुका था।

फिर मुल्ला नसरुद्दीन ने पासे फेंके।

अगले ही पल वहां शोर मच गया।

पासों पर दो छक्के थे।

'बारह—बारह—बारह—।' एक अजीब-सा शोर मच गया वहां।

लाल बालों वाले की तो जैसे खोपड़ी ही सुन्न हो गई। उसकी आंखें इस प्रकार उबल पड़ीं, मानो अभी बाहर निकल जाएंगी। उसका चेहरा सफेद पड़ गया। मुल्ला नसरुद्दीन अपनी जीती हुई रकम समेटने में व्यस्त हो गया। उसकी एक नजर अपने माल पर थी, दूसरी वहां उपस्थित लोगों पर। वह सभी को संदिग्ध निगाहों से देख रहा था और चाहता था कि अब जल्दी-से-जल्दी वहां से खिसक ले।

'हाय—।' लाल बालों वाला रो दिया, वह बार-बार अपने माथे पर हाथ मार रहा था—'हाय री किस्मत! हाय री कम्बख्ती! बरबाद हो गया।'

बिलखता हुआ-सा वह उठा और लड़खड़ाता हुआ एक ओर चल दिया।

मुल्ला नसरुद्दीन ने सारी रकम अपने गधे की जीन के थैलों में भरी, फिर प्यार से गधे को गले लगाया और चूमा, सामने वाली दुकान से माल-पुए लेकर खिलाए।

मुल्ला नसरुद्दीन का सिद्धान्त था कि जो लोग यह जानते हैं कि तुम्हारा धन कितना है और कहां है, उनसे सदैव दूर रहना चाहिए। यही सोचकर मुल्ला नसरुद्दीन उस चाय की दुकान से खिसककर बाजार की ओर चल दिया। वह मुड़-मुड़कर पीछे भी देख लेता था कि कहीं कोई पीछा तो नहीं कर रहा है?

मुल्ला के ख्याली पुलाव

अपने गधे पर सवार मुल्ला नसरुद्दीन चला जा रहा था, कहां जा रहा था, यह उसे खुद पता नहीं था। वह तो गधे की पीठ पर बैठा ख्याली पुलाव पका रहा था।

'मैं चार दुकाने खरीदूंगा, एक कुम्हार की, एक जीनसाज की, एक दर्जी की और एक मोची की, हर दुकान में दो कारीगर रखूंगा—बस! अपना काम तो सिर्फ पैसा बटोरना—बस, फिर साल-दो-साल में ही रईस बन जाऊंगा—मकान? हां, मकान भी तो खरीदूंगा—आह! उसमें एक बाग भी होगा, बाग में फव्वारे होंगे, पेड़ होंगे, पौधे होंगे, पेड़ों पर पिंजरे लटके होंगे, जिनमें चिड़ियां चहचहा रही होंगी—शादी? अरे हां भाई, शादी भी करूंगा, ज्यादा नहीं, बस दो शादियां करूंगा, हर बीवी से तीन या चार-चार लड़के होंगे—वाह! मजा आ जाएगा, फिर उनकी शादियां...!'

अपने ही विचारों में गुम मुल्ला नसरुद्दीन को दीन-दुनिया की कोई खबर ही नहीं थी। उसका गधा किस ओर जा रहा था, इसका भी उसे कोई इल्म नहीं था, वह तो बस अपने ख्यालों की दुनिया में खोया हुआ था।

उसका गधा भी मालिक को लापरवाह जानकर अपनी बदकारी पर उतर आया था। सामने ही एक छोटी-सी खाई पर पुल बना था, मगर वह शैतान पुल पर न जाकर दाईं ओर मुड़ गया। उसका इरादा छलांग लगाकर खाई पार करने का था।

और ऐसा ही उसने किया भी। उसने अपनी चाल तेज की और दौड़कर छलांग लगा दी।

उधर मुल्ला नसरुद्दीन अपने लड़कों के ख्याल में उलझा हुआ था। जब लड़के बड़े हो जाएंगे, तो मैं उन्हें बुलाकर...अरे! ये मैं हवा में क्यों उड़ा जा रहा हूं—या खुदा! मेरे शरीर में पंख लग गए हैं क्या?

लेकिन नहीं, ऐसा कुछ नहीं था, इसका अहसास उसे तब हुआ जब वह बन्दूक की गोली की भांति धरती पर आकर गिरा। उसके हलक से एक तेज चीख निकल पड़ी। उसकी आंखों के सामने सितारे से घिरकर रह गए।

जल्दी ही उसे वास्तविकता का अहसास हो गया।

और फिर...धूल और गर्द से भरा, कराहता हुआ जब वह उठा तो उसका गधा दोस्ताना अंदाज में कान हिलाता हुआ उसके करीब आकर खड़ा हो गया। दुनियाभर की मासूमियत उसके चेहरे पर झलक रही थी। उसने कुछ ऐसे अंदाज में आंखें मिचमिचाईं मानो अपने मालिक से कहना चाहता हो कि आओ मेरे आका! फिर से मेरी पीठ पर बैठो।

'अबे नमकहराम! गुस्ताख! मेरे बाप-दादाओं के नामालूम किन गुनाहों की

सजा के रूप में इस जन्म में तेरा-मेरा साथ बना है। या मेरे खुदा! इस लकड़बग्घे...!'

न जाने मुल्ला नसरुद्दीन उसे अभी कितनी गालियां और देता कि तभी उसकी नजर वहीं एक टूटी हुई दीवार के पास बैठे कुछ लोगों पर पड़ी और वह खामोश हो गया।

गरीबों का दाता

दीवार के पास बैठे वे सभी लोग मजलूम और जरूरतमंद थे। सभी के चेहरों पर मुर्दनी-सी छाई हुई थी।

अपने-आपको धूल में कलाबाजियां खिला देने के एवज में जो गालियां मुल्ला नसरुद्दीन गधे को देना चाहता था, वे उसके होंठों में ही रह गईं। वह उनकी ओर देखकर हंस दिया। उसने सोचा कि इससे पहले कि लोग उस पर हंसे, उसे खुद ही अपने आप पर हंसना चाहिए। इसलिए वह हंसा, ठठाकर हंसा, फिर उन लोगों की ओर आंख मारकर बोला—'वाह! वाह!! क्या आप लोग बता सकते हैं कि मैंने कितनी कलाबाजियां खाईं—भई मैं तो गिन नहीं सका।' फिर हंसते हुए ही उसने अपने गधे की पीठ थपथपाई और उसे सम्बोधित करते हुए बोला—'अरे शैतान! तुझे... तुझे ऐसी शरारतें क्यों सूझती हैं?' हालांकि उसका मन चाह रहा था कि इस गधे की जमकर धुनाई करे, मगर नहीं, वह चाहकर भी ऐसा नहीं कर सका और उन लोगों से मुखातिब होकर बोला—'जरा-सी नजर बचाते ही शैतानी कर देता है।' कहकर वह फिर हंसने लगा।

किन्तु फिर एकाएक ही उसकी हंसी रुक गई क्योंकि वहां बैठा कोई भी व्यक्ति हंसने में उसका साथ नहीं दे रहा था।

औरतें वहां बच्चों को गोद में लिए जो बैठी थीं, वे रो रही थीं। मर्दों के चेहरे ऐसे लग रहे थे, मानो वे भी रोते रहे हों और अब उनके आंसू सूख गए हों।

यह सब देखकर मुल्ला नसरुद्दीन को समझते देर नहीं लगी कि यहां अवश्य ही कुछ दाल में काला है। अतः चेहरे पर गम्भीरता का आवरण डालकर वह उनकी ओर बढ़ा और झुर्रियोंदार चेहरे और सन जैसे सफेद बालों वाले एक बूढ़े से मुखातिब होकर बोला—'बुजुर्गवार! आखिर माजरा क्या है? यहां बैठे सभी लोगों के चेहरों पर इतनी उदासी क्यों है? और ये औरतें... बच्चों को कलेजे से चिपकाए ये औरतें क्यों रो रही हैं? इस धूल और गर्द भरी दोपहरी में क्या यह बेहतर न होता कि आप लोग अपने-अपने घरों की ठंडी छांव में बैठते, वहां आराम करते।'

जिस वृद्ध को मुल्ला नसरुद्दीन ने सम्बोधित किया, वह गमजदा लहजे में बोला—'ऐ रहमदिल मुसाफिर! घरों में बैठना उन्हें नसीब होता है, जिनके पास

अपने घर हों, ऐ खुदा के नेक बन्दे! हम तुझे क्या बताएं, हमारी परेशानियों और मुसीबतों का कोई अन्त नहीं है, तू हमारी मुसीबतों का अन्त नहीं कर सकता, इसलिए कुछ भी बताना बेकार है। जहां तक मेरी बात है तो मेरा क्या, मैं तो बूढ़ा हो चुका हूं, मेरी तो अल्लाह से यही दुआ है कि वो मुझे उठा ले।' कहते-कहते बूढ़े की आंखों में आंसू भर आए।

उसकी बात सुनकर मुल्ला नसरुद्दीन को काफी ठेस पहुंची और वह बोला—'मेरे प्यारे बुजुर्ग! आप मर्द हैं, मर्दों को ऐसी बातें शोभा नहीं देतीं। आखिर आप ऐसी बातें कर ही क्यों रहे हैं? आपने कहा है कि मैं कुछ नहीं कर सकता, ऐसा आप मेरी गरीब सूरत देखकर कह रहे हैं, मगर आप मेरी सूरत पर न जाइए और मुझे अपनी परेशानी बताइए। हो सकता है कि मैं आपकी कोई मदद करने के काबिल साबित हो जाऊं।'

यह सुनकर बूढ़े के चेहरे पर आशा के भाव दिखाई दिए, फिर साहस बटोरकर वह बोला—'ऐ मुसाफिर! यहां सभी गम के मारे बैठे हैं। मैं अपनी कहता हूं, अभी कोई घंटा-भर पहले सूदखोर जाफर, अमीर के दो सिपाहियों के साथ हमारी गली में आया था, मैंने उससे कुछ कर्जा लिया हुआ था। कल अदायगी की आखिरी तारीख थी और मैं कर्ज अदा नहीं कर पाया, इसलिए उसने मुझे घर से बेघर कर दिया। बचपन से लेकर अब तक की अपनी उम्र मैंने इसी मकान में गुजारी थी। अब मेरा कोई घर-परिवार या ठिकाना नहीं है जहां जाकर मैं सिर छिपा सकूं। वह जल्दी ही अपनी रकम वसूलने के लिए मेरी जायदाद, पशु आदि बेच देगा, यहां बैठा मैं इसी बात का मातम मना रहा हूं।' कहते-कहते उसका गला रुंध गया, आवाज भर्रा गई और आंखों से आंसू निकलने लगे।

मुल्ला नसरुद्दीन ने गम्भीरता से उसकी बात सुनी, कुछ क्षणों तक वह सोचता रहा, फिर बोला—'लगता है तुम पर काफी कर्ज है।'

'ऐ नेक इंसान! मैं सिर से पांव तक कर्ज में डूबा हूं। मुझ पर ढाई सौ तंकों का कर्ज है।'

मुल्ला नसरुद्दीन तुरन्त अपने गधे की ओर पलटा और गधे की जीन से थैला खोलते हुए बोला—'ढाई सौ तंकों की मामूली रकम के लिए भी भला कोई रोता है? आप चिन्ता न करें बुजुर्गवार! यह लीजिए ढाई सौ तंके और फौरन उस सूदखोर का कर्जा चुकाइए और उसे लात मारकर अपने घर से निकाल दीजिए, फिर बाकी का जीवन अल्लाह का नाम लेकर मजे से गुजारिए।'

सिक्कों की खनखनाहट सुनकर वहां मौजूद सभी के चेहरों पर नया जीवन-सा दिखाई देने लगा। ऐसा लगा जैसे उन्हें कोई जीवनदायी औषधि मिल गई हो।

उधर बूढ़ा हैरान और परेशान था। अचम्भे से उसकी आंखें फैली हुई थीं।

'पांच सौ तंके—ऐ रहमदिल फरिश्ते! मुझे सूदखोर के पांच सौ तंके देने हैं।'

'ऐ दोस्त! इस मुसीबत में भी तुम्हें दूसरों का ध्यान है, इससे जाहिर है कि तुम एक नेकदिल और सज्जन इंसान हो। मगर मैं भी अल्लाह का नाम लेकर सवाब की राह पर निकला हूं। ऐ दोस्त! मैं तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को कल गुलामों के बाजार में नहीं बिकने दूंगा। अल्लाह का यही हुक्म है कि मैं तुम्हारी मदद करूं—फैलाओ झोली और उसकी रहमत कबूल करो।'

और फिर मुल्ला नसरुद्दीन ने अपने थैले का अंतिम सिक्का तक उसकी झोली में डाल दिया। उस व्यक्ति की आंखों में खुशी के आंसू उमड़ आए, फिर उठकर उसने उसे गले से लगा लिया।

वातावरण का सारा तनाव जैसे हवा में मिलकर उड़न छू हो गया हो।

सभी के चेहरों पर खुशी की चमक दिखाई देने लगी।

तभी वह संगतराश बोला—"आप तो बड़े मजे से अपने गधे से उछले।'

और मुल्ला नसरुद्दीन के गधे से गिरने के क्षण को याद करके सभी हंस पड़े। बच्चे भी मुस्कराने लगे। मुल्ला नसरुद्दीन भी जोर से हंस पड़ा।

हंसते-हंसते वह बोला—'अरे भाई! आप लोग इस गधे को नहीं जानते कि यह किस किस्म का शैतान है। यह एक नम्बर का पाजी है।'

तभी बीमार बच्चे वाली औरत बोली—'नहीं...नहीं—इस गधे के विषय में ऐसा न कहिए। यह इस संसार का सबसे नेक और अक्लमंद गधा है। इस जैसा गधा इस दुनिया में न हुआ है और न होगा। मैं तो चाहती हूं कि तमामं उम्र इस गधे की सेवा करती रहूं। इसे खाने के लिए सबसे अच्छा अनाज दूं। इसका खुरैरा करूं, कंघी से इसकी पूंछ सवारूं। ऐ रहम दिल मुसाफिर! इसमें गुलाब की तरह मलाइयां-ही-मलाइयां भरी पड़ी हैं। यदि यह उछलकर खाई पार करके तुम्हें अपनी पीठ से गिरा न देता और सीधा-सीधा पुल से गुजर जाता तो तुम शायद हमारी तरफ देखे बिना ही अपनी राह पर चले जाते। ऐ नेक मुसाफिर! अल्लाह के हुक्म और इसकी कोशिश से ही तो तुम हमारे लिए अंधेरे में सूरज का उजाला बनकर आए हो। इसलिए ऐ नेक फरिश्ते! आप इस नेक गधे को कुछ न कहो।'

बूढ़ा बोला—'यह बिल्कुल ठीक कहती है ऐ रहमदिल इंसान! अपने दुःखों को दूर करने के लिए हम इस गधे के अहसानमंद हैं और तहेदिल से इसका शुक्रिया अदा करते हैं। वास्तव में यह गधा इस दुनिया का गहना है। गधों में सबसे नेक, रहमदिल, समझदार और हीरा गधा है यह।'

और फिर—दिल खोलकर सब लोग गधे की तारीफ करने लगे। इसे सूखे आड़ू, भुना हुआ अनाज, खूबानियां और पुए खिलाने में सब बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने लगे।
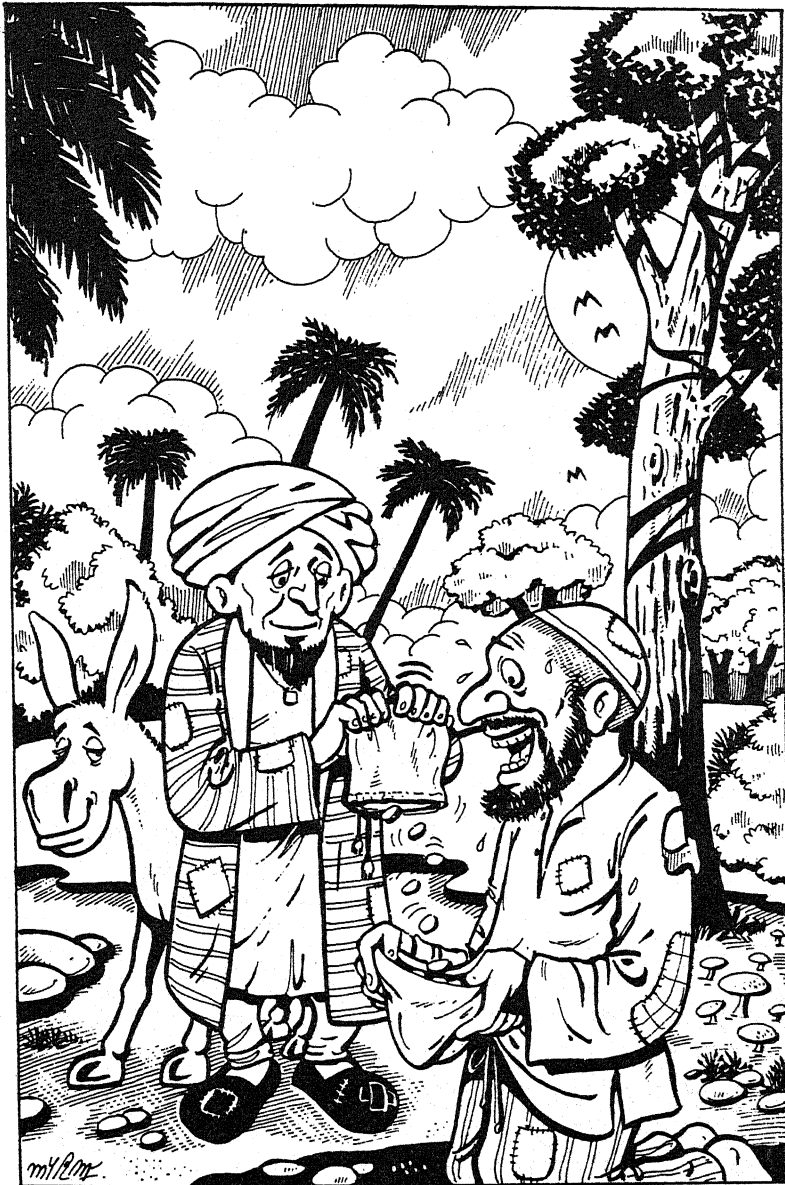
दुम फटकारकर गधे ने परेशान करने वाली मक्खियों को भगाया फिर सबकी भेंट बड़ी ही फिराख दिली से कुबूल की। माल पर हाथ साफ करते हुए टेढ़ी नजर से वह उस चाबुक को भी देख रहा था जो मुल्ला नसरुद्दीन के हाथ में लहरा रहा था। दिन डूबने वाला था, पेड़ों के साए लम्बे हो रहे थे, लाल पैरों वाले सारस पंख फड़फड़ाते और कैं-कैं का शोर मचाते हुए अपने घोंसलों को लौट रहे थे, जहां अपनी लाल-लाल चोंचे खोले उनके बच्चे उनका इंतजार कर रहे थे। मुल्ला नसरुद्दीन ने उनसे जाने की इजाजत मांगी।

सबने झुककर मुल्ला का शुक्रिया अदा किया।

'आपका बहुत-बहुत शक्रिया कि आपने हमारी परेशानी को समझकर इस बुरे वक्त में हमारी मदद की।'

'कैसे न करता—कैसे न समझता मैं आपकी परेशानी?' मुल्ला नसरुद्दीन बोला—'आज ही मेरे चार कारखाने छिन गए हैं, जिनमें आठ होशियार कारीगर मेरे लिए काम करते थे। एक मकान छिन गया जिसके बाग में फव्वारे लगे थे, पेड़ों से लटकते सोने के पिंजरों में चिड़ियां चहचाहती थीं। कैसे न समझता मैं आपकी परेशानी। कैसे न करता आपकी मदद।'

पोपले मुंह वाला वह बूढ़ा, जिसे मुल्ला नसरुद्दीन ने ढाई सौ तंके दिए थे, बोला—'ऐ खुदा के नेक बंदे! मेरे पास शुक्रिया के रूप में तुम्हें देने के लिए कुछ भी नहीं है, मगर जब मैंने अपना घर छोड़ा था, तो अपने साथ मैं एक चीज उठा लाया था और वह है यह कुरान शरीफ। तुम इसे ही ले लो। अल्लाह की इस अंधेरी दुनिया में यह तुम्हें रास्ता दिखाने वाली रोशनी बनेगी।'

हालांकि नसरुद्दीन के लिए मजहबी किताबें कोई अहमियत नहीं रखती थीं, मगर फिर भी बूढ़े के दिल को ठेस न लगे, यही सोचकर उसने वह किताब ले ली और उसे जीन में लगे थैले में डाल लिया, फिर कूदकर अपने गधे पर सवार हो गया, तभी वहां उपस्थित लोगों को कुछ याद आया। चौंककर संगतराश ने पूछा—'आपका नाम...? कम-से-कम अपना नाम तो बताओ ऐ फरिश्ते, हमें इतना तो पता चलना ही चाहिए कि हम इबादत में किसके लिए दुआ मांगे।'

'मेरा नाम जानकर आप लोग क्या करेंगे? सच्ची नेकी को शोहरत की जरूरत नहीं होती। रहा दुआ का मसला तो बेफिक्र रहो, खुदा के बहुत-से फरिश्ते हैं जो लोगों के नेक कामों की उसे खबर देते रहते हैं। फरिश्ते ही अगर काहिल, निकम्मे और लापरवाह हुए या नर्म बादलों में सोते रहे तो आपकी इबादत का कोई भी असर न होगा, क्योंकि ईमान वाले लोगों से बात पक्की कराए बिना सबकी बातों पर यकीन करना, अल्लाह के नजदीक अच्छा नहीं—अच्छा—अलविदा।'

कहकर उसने गधे को ऐड़ लगाई और सरपट दौड़ाता हुआ गली के मोड़ पर जाकर गायब हो गया।

आखिर कौन?

वह चला गया, मगर सभी के जेहन में एक सवाल छोड़ गया—कौन था नेकी का यह फरिश्ता? तभी अपनी बुद्धि की पहुंच पर गर्व-सा करता हुआ दाढ़ी वाला संगतराश बोला—'सारी दुनिया में बस एक ही आदमी ऐसा है जो यह काम कर सकता है। खुदा की कसम! इस दुनिया में एक ही शख्स ऐसा है जो इस तरह की बात कह सकता है। सिर्फ एक इंसान ऐसा है जिसकी रूह की रोशनी और गर्मी से गरीब-गुरबा और सताए हुए लोगों को राहत मिल सकती है और वह नेक इंसान है, हमारा न...।'

'खबरदार! खबरदार—।' उसकी बात पूरी होने से पहले ही दूसरा आदमी हौले से गुर्राया—'अपनी जुबान बंद रखो, क्या तुम्हें इल्म नहीं कि दीवारों के भी कान होते हैं, ये पत्थर बेजुबान जरूर हैं, मगर इनकी भी आंखें होती हैं, मत भूलो कि तुम्हारी जुबान से उसका नाम निकलते ही सैकड़ों कुत्ते उसकी तलाश में पूरा बुखारा सूंघते-सूंघते आखिर उसे खोज ही लेंगे।'

'सच कहते हो तुम!' बूढ़ा बोला—'हमें अपना मुंह बंद रखना चाहिए, क्योंकि यह वक्त तो ऐसा है मानो वह तलवार की धार पर चल रहा हो और मामूली-सा धक्का भी उसके लिए खतरनाक हो सकता है। खुदा के भेजे उस नेक फरिश्ते की बाबत हमें जुबान बंद रखनी ही चाहिए।'

बीमार बच्चे वाली औरत बोली—'मैं भी खामोश रहूंगी—चाहे मुझे मौत ही क्यों न आ जाए, मगर मैं उसका नाम अपनी जुबां पर न आने दूंगी—मैं ऐसी कोई भूल कभी नहीं करूंगी जिसकी वजह से फांसी का फंदा उसके गले में पड़े।'

दूसरी औरत ने भी कुछ ऐसा ही कौल किया।

सभी इस तरह के कौल कर रहे थे—मगर संगतराश? वह बेचारा बड़ा परेशान-सा दिखाई दे रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अगर वह कसाई या भैंसे का उबला गोश्त बेचने वाला नहीं था तो भला कुत्ते सूंघ-सूंघकर उसे कैसे खोज सकते हैं?

यदि वह मुसाफिर कोई नट था और रस्सी और तलवार पर चलता था तो जोर से उसका नाम लेने में क्या हर्ज है? यह औरत उस नेक इंसान को उसके पेशे के लिए रस्सी देने के बजाय मरने की बात क्यों रह रही है।

वह बड़े असमंजस में पड़ गया, फिर उसने जोर से नथुने फड़फड़ाए और एक गहरी सांस ली। उसने सोच लिया कि उस विषय में वह ज्यादा नहीं सोचेगा, मगर फिर भी एक सवाल था जो उसके जेहन से नहीं निकल पा रहा था और वह था—'आखिर कौन?

मुल्ला ने कसम खाई

मुल्ला नसरुद्दीन हालांकि उन लोगों से काफी दूर आ चुका था, मगर अभी भी उसकी आंखों के सामने और किसी सूदखोर के सताए उन गरीब लोगों के चेहरे थिरक रहे थे। उस बीमार बच्चे के सूखे गाल व होंठ तथा हड्डियों के ढांचे जैसा शरीर पुर्जा-पुर्जा होकर उसकी आंखों के सामने आ रहा था। उसके सामने, घर से निकाल दिए गए उस बूढ़े का चेहरा थिरकने लगता था और फिर बारी-बारी से उन सभी के चेहरे उसकी आंखों के सामने आकर एक-दूसरे में गुडमुड होते रहे।

फिर ऐसा हुआ कि एकाएक ही मुल्ला नसरुद्दीन का चेहरा क्रोध से तमतमाने लगा।

वह अधिक देर तक गधे की पीठ पर बैठा न रह सका।

कूदकर वह नीचे उतरा और गधे की लगाम पकड़कर उसके साथ-साथ चलने लगा। फिर ऐसा हुआ कि उसकी चमकदार आंखें नफरत और क्रोध से सुलगने लगीं। उसने गुस्से से रास्ते में पड़े एक पत्थर पर जबरदस्त ठोकर मारी, मानो वह पत्थर न होकर गरीबों को सताने वाला अनजान सूदखोर हो जिसे मुल्ला नसरुद्दीन ने नफरत से ठोकर मारी हो, फिर रास्ते में आने वाले हर पत्थर को वह ठोकरों से उड़ाने लगा और साथ-ही-साथ कहता जा रहा था—

'ठहर! सूदखोरों के सरदार! ठहर, मैं देखूंगा तुझे—एक-न-एक दिन तेरी-मेरी मुलाकात जरूर होगी और उस दिन तेरी शामत आ जाएगी, और तू...!' फिर एक बड़े पत्थर पर उसने इतने जोर से ठोकर मारी कि वह लुढ़कता हुआ गंदे पानी के एक खड्ढे में जा गिरा—'नालायक अमीर! शैतान अमीर! अब तू भी कांपेगा, थर्राएगा, क्योंकि मैं बुखारा आ पहुंचा हूं, मक्कार और शैतान जोंको! तुमने आवाम का बड़ा खून चूसा है, लालची और घिनौने लकड़बग्घों! इस आवाम पर जितने सितम तुमने ढाए थे, ढा लिए, मगर अब यह सब नहीं चलेगा...।' उसने फिर एक पत्थर पर ठोकर मारी और क्रोध से बोला—'तू! सूदखोर जाफर! हमारी हालांकि आमने-सामने अभी मुलाकात नहीं हुई है, मगर जल्दी ही होगी, मैं तुझसे आवाम पर किए गए एक-एक जुल्मो-सितम का बदला लूंगा, मैं कसम खाता हूं, बदला लूंगा।'

कहकर उसने फिर एक पत्थर पर ठोकर मारी।

सूदखोर से पहली मुलाकात

बुखारा में आज मुल्ला नसरुद्दीन का पहला दिन था जो काफी हंगामाखेज गुजरा था। बुखारा की जो मौजूदा तस्वीर उसकी आंखों के सामने आई, उस पर तबसरा करते हुए वह खुद से ही कह उठा था—'यहां तो हालात

बद-से-बदतर हो चुके हैं, मुल्ला नसरुद्दीन! तुम्हें बहुत कुछ करना होगा... बहुत कुछ बदलना होगा, मगर फिलहाल शाम होती जा रही है और तुम्हें आराम करना है। चलो, किसी ठिकाने की तलाश में...।'

यही सब सोचता हुआ वह तालाब वाली एक सड़क से गुजर रहा था। उसने देखा—वहां सड़क से कुछ हटकर तालाब के किनारे काफी भीड़ जमा थी। वहां एक अजीब-सा शोर उठकर फिजा में गूंज रहा था। आवाजें और चिल्लाहटें आपस में इस प्रकार गुडमुड हो रही थीं कि कुछ स्पष्ट सुनाई नहीं दे रहा था।

'या अल्लाह! क्या अभी मेरे नसीब में आराम करना नहीं लिखा—देखना होगा, यहां जरूर कुछ गड़बड़ है।'

हालांकि नसरुद्दीन चाहता तो आसानी से अपने रास्ते जा सकता था, लेकिन वह ऐसा शख्स नहीं था कि आसपास के हालात से आंख मूंदकर खामोशी अख्तियार किए रहता। वह तो नेकी के रास्ते पर चलने वाला इस उसूल का बंदा था कि जान को कोई-न-कोई झमेला लगा ही रहे तो अच्छा है। न जाने कहां सवाब कमाने का मौका मिल जाए?

और मुल्ला नसरुद्दीन का गधा?... वह अपने मालिक से भी चार कदम आगे था। वह जानता था कि कहीं कोई फसाद हो तो वहां उसके मालिक का दखल जरूरी होता है। यही सोचकर वह खुद ही तालाब की ओर मुड़ गया। वह बेजुबान था, मगर इतना जरूर समझ गया था कि इस झमेले में भी उसके मालिक की शिरकत जरूरी है।

भीड़ को चीरकर गधा तालाब के बिल्कुल किनारे जा पहुंचा।

'क्या बात है भाइयों!' मुल्ला नसरुद्दीन ने चिल्लाकर पूछा—'क्या अजाब आ गया? क्या कोई चुल्लू भर पानी में...हटो, हटो।' वह गधे से नीचे उतरकर थोड़ा और आगे आया।

वह बिल्कुल किनारे पर आ गया। वहां चिकनी मिट्टी और काई की वजह से काफी फिसलन थी। तालाब में लहरें उठ-उठकर किनारों से टकरा रही थीं।

इससे पहले कि कोई शख्स मुल्ला नसरुद्दीन को स्थिति समझा पाता, एक मोटा आदमी तालाब के बीच से उभरा और बुरी तरह पानी में हाथ-पैर फेंकने लगा। वह बारबार डूबता और उभरता था।

जब वह डूबता तो पानी में बुलबुले उठने लगते, जब सतह पर आता तो लहरों में हलचल मच जाती।

बहुत से लोग किनारे पर खड़े शोर मचा रहे थे।

डूबने वाला पानी की सतह पर आता तो वे उसके वस्त्र पकड़कर खींचने का प्रयास करते। वे उसे बचाने के लिए हाथ बढ़ा रहे थे, लेकिन उनकी हर कोशिश व्यर्थ जा रही थी। जैसे ही वह ऊपर आता, वे अपना हाथ बढ़ाकर चीखते—'अरे! अपना हाथ बढ़ाओ। इधर दो, लाओ-लाओ, अपना हाथ दो।'

मगर उस व्यक्ति को जैसे किसी की बातें सुनाई नहीं दे रही थीं और यदि दे भी रही थीं तो वह उन पर अमल करने में स्वयं को बेबस महसूस कर रहा था क्योंकि पलक झपकते ही वह फिर पानी के अन्दर समा जाता था।

मुल्ला नसरुद्दीन काफी देर तक यह नजारा देखता रहा, फिर एकाएक ही उसके चेहरे पर हलके क्रोध के भाव उभर आए—'आखिर यह अपना हाथ क्यों नहीं बढ़ाता? कहीं यह कोई गोताखोर तो नहीं जो किसी से शर्त लगाकर गोताखोरी कर रहा हो और बचाने वाले नाहक ही परेशान हो रहे हों, लेकिन यदि ऐसा होता तो वह अपनी पोशाक उतारकर पानी में कूदता।'

मुल्ला नसरुद्दीन इन्हीं विचारों में लीन था, इस बीच डूबने वाला चार-पांच बार पानी की सतह पर आया और फिर डूब गया। हर बार पानी के भीतर रहने की अवधि में बढ़ोत्तरी होती जाती थी। इसका मतलब था कि वह सचमुच ही डूब रहा है और एकाध बार फिर ऊपर आने के बाद अन्ततः उसे पानी के भीतर ही रह जाना है और इस प्रकार मुल्ला नसरुद्दीन जैसे परोपकारी व्यक्ति की मौजूदगी में एक जान नाहक ही चली जाती। यह बात भला मुल्ला नसरुद्दीन को कैसे गवारा होती? वह तेजी से कुछ सोचने लगा।

अचानक एक बार वह फिर ऊपर आया। लोग चिल्ला-चिल्लाकर फिर उसका हाथ मांगने लगे ताकि समय रहते उसे बचाया जा सके, लेकिन वह उन्हें देखता और फिर पानी में समा जाता। शायद कुछ भी देने की कीमत पर वह अपनी जान नहीं बचाना चाहता था, फिर भला वह उसका हाथ ही क्यों न हो।

अब मुल्ला नसरुद्दीन की समझ में सारी बात आ गई। वह तेजी से बचाने वालों के करीब पहुंचा और बोला—'अरे भई, आप लोग यह क्या मूर्खता कर रहे हैं, आप लोगों को इसका साफा या कीमती पोशाक देखकर समझ जाना चाहिए कि यह कोई बड़ा अधिकारी या मुल्ला है। क्या तुम लोग अधिकारियों या मुल्लाओं को पानी में से निकालने के तौर-तरीके बिल्कुल नहीं जानते? हटो, परे हटो।'

'अरे भई! अगर तुम कोई तौर-तरीका जानते हो तो उसे बचाओ—देखो! वह पानी के ऊपर आ रहा है। जल्दी करो! किसी प्रकार उसे बाहर खींचो, कहीं वह डूब ही न जाए।' एक बूढ़ा बोला।

'ठहरो! पहले मेरी बात पूरी होने दो।' हाथ उठाकर मुल्ला नसरुद्दीन बोला—'क्या तुम लोगों ने किसी सरकारी अफसर या मुल्ला को किसी को कुछ देते देखा है?'

'नहीं...नहीं।' एक साथ कई स्वर उभरे।

'हमेशा याद रखो कि मुल्ला व अधिकारी कभी किसी को कुछ नहीं देते, उन्हें सिर्फ लेना आता है। इसे बचाने के लिए भी हमें यही वैज्ञानिक सिद्धांत अपनाना होगा।'

तभी भीड़ से आवाज उभरी—'अब कुछ नहीं हो सकता, वह डूब गया, लगता है। काफी देर से ऊपर नहीं आया है। अब तुम अपना वैज्ञानिक सिद्धान्त अपने पास रखो—जाने वाला तो चला गया।'

फिर आपस में होने वाली खुसर-पुसर ने एक अजीब से शोर की शक्ल अख्तियार कर ली।

मगर मुल्ला नसरुद्दीन यह सुनकर बिल्कुल भी विचलित न हुआ। बड़े इत्मीनान से वह बोला—'दोस्तों! पानी की रूहें किसी भी मुल्ला या अधिकारी को इतनी आसानी से कबूल नहीं करतीं—पानी की रूहें उसे बचाने की पूरी कोशिश करेंगी।'

मुल्ला नसरुद्दीन इत्मीनान से तालाब के किनारे बैठकर उसके ऊपर आने का इंतजार करने लगा। पानी में से बुलबुले उठ रहे थे। कुछ पलों की प्रतीक्षा के बाद कीचड़ से सना चेहरा फिर ऊपर आया। उसके हाथों की हरकत अब वैसी जानदार नहीं थी, जैसी पहले थी। शायद अब वह आखिरी बार ही ऊपर आया था।

मुल्ला नसरुद्दीन उसे देखते ही चिल्लाया—'यह लीजिए—इधर से—थोड़ा और इधर—लो—यह लो।'

डूबते व्यक्ति ने लपककर उसका हाथ थाम लिया।

उसकी पकड़ फौलादी थी। मुल्ला नसरुद्दीन को लगा, जैसे उसकी कलाई किसी शिकंजे में फंस गई हो। उसके मुंह से कराह-सी निकल पड़ी।

खैर! जैसे-तैसे उसे घसीटकर बाहर निकाला गया, फिर तालाब के किनारे ही जमीन पर लिटा दिया गया। बड़ी मुश्किल से उसकी उंगलियां मरोड़कर मुल्ला नसरुद्दीन ने अपनी कलाई को उसके चंगुल से छुड़ाया, फिर किसी ने उसे औंधा करके पीठ पर दबाव डालकर उसके पेट में भरा पानी निकाला।

अभी तक किसी को पता नहीं चला था कि आखिर वह है कौन? क्योंकि उसका सारा चेहरा कीचड़ में सना हुआ था। वह कुबड़ा था, फिलहाल उसकी इकलौती पहचान यही थी।

कुछ क्षणों बाद उसके होशो-हवास दुरुस्त होने लगे, फिर जैसे ही उसे होश आया, वह चीख उठा—'हाय! मेरा बटुआ। अरे! मेरा बटुआ कहां गया?' हड़बड़ाकर वह उठा और अपनी कमर टटोलने लगा, फिर उसे तभी तसल्ली हुई, जब उसे यकीन हो गया कि उसका बटुआ सही-सलामत उसकी कमर से बंधा है। फिर उसने अपने चेहरे पर चिपके तिनके और घास हटाई, आस्तीन से जब उसने अपना चेहरा पोंछा तो मुल्ला नसरुद्दीन हड़बड़ाकर दो कदम पीछे हटा।

टूटी-चपटी नाक, चौड़े नथुने, फूटी आंख—बड़ी ही भद्दी शक्ल थी उसकी।

उसे देखते ही भीड़ में खलबली-सी मच गई। दबी-दबी जुबान से लोग

सरगोशियां करने लगे, लेकिन मुल्ला नसरुद्दीन स्पष्ट रूप से कुछ भी नहीं सुन सका। सुन लेता तो शायद वह उसे घसीटकर दोबारा तालाब में फेंक देता।

कुबड़े ने अपनी इकलौती आंख फड़फड़ाकर भीड़ को घूरते हुए, अपनी खरखराती-सी आवाज में पूछा—'मुझे किसने बचाया?'

लोगों ने मुल्ला नसरुद्दीन को उसके आगे धकेल दिया—'इसने...इसने बचाया है तुम्हें।'

'इधर आओ—मैं तुम्हें इनाम देना चाहता हूं।' बुरा-सा मुंह बनाया उस कुबड़े ने—'वैसे मुझे बाहर निकालकर तुमने कोई खास काम नहीं किया है, क्योंकि कुछ समय बाद मैं खुद ही बाहर निकल आता, फिर भी मैं तुम्हें... ।' उसने अपने बटुए में हाथ डाला और मसल-मसलकर सिक्के टटोलने लगा, फिर एक सिक्का, जो कि आधे तंके का था, निकालकर उसकी ओर बढ़ाया—'यह लो! यह सिक्का तुम्हारी भलमनसाहत का इनाम है। बाजार से एक प्याला पुलाव खरीदकर खा लेना।'

मुल्ला नसरुद्दीन का दिल चाहा कि दोनों हाथों से उसका टेंटुआ दबा दे, मगर किसी प्रकार उसने अपने आप पर काबू पाए रखा और बोला—'इस सिक्के में कितना पुलाव आएगा?'

'अरे तो बिना गोश्त वाला भात खा लेना।' कुबड़े ने मुंह बनाकर हिकारत से कहा।

मुल्ला नसरुद्दीन ने सिक्का ले लिया, फिर वहां खड़े लोगों से मुखाबित होकर बोला—'आप देख रहे हैं न! मैंने किस प्रकार विज्ञान के सिद्धान्तों पर चलकर इन साहब को बचाया।' कहकर उसने बुरा-सा मुंह बनाया, फिर अपने गधे की ओर बढ़ गया।

वह अपने गधे पर सवार, अनजान मंजिल की ओर बढ़ा जा रहा था। इस समय वह काफी थकावट-सी महसूस कर रहा था और चाहता था कि कहीं आराम कर लिया जाए। मगर कहां? उसने सोचा, मेरा तो कोई ठिकाना ही नहीं है, मगर कोई बात नहीं, कोई ठिकाना तलाश कर लिया जाएगा।

कैसा मनहूस आदमी था। अपनी जान की कीमत सिर्फ आधा तंका लगाई, अहसान फरामोश ने।

अपनी बातों में उलझा वह चला जा रहा था, तभी उसके पीछे से निकलकर एक घुड़सवार उसकी बगल में आया। वह बड़ा रूखा-सा दिखाई दे रहा था। उसके वस्त्रों व हाथों पर कालिख लगी हुई थी। जीन से बंधे जालीदार थैले में कुछ हथौड़े और दूसरे औजार रखे थे। मुल्ला नसरुद्दीन को समझते देर नहीं लगी कि वह लोहार है।

लोहार ने नागवार-सी नजरों से उसे देखा।

'कैसे हो लोहार भाई?'

लोहार के चेहरे पर वितृष्णा के भाव उभरे—'क्या तुम जानते हो कि तुमने किसे बचाया है? तुमने उस शख्स को बचाया है, जिसे दिल से कोई भी बचाने के लिए तैयार नहीं था, सभी जिसकी मौत के तमन्नाई थे, उस शख्स को बचाया है तुमने। क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे इस नेक काम के बदले कितने लोगों को घर से बेघर होना पड़ेगा? कितने लोग आंसुओं के सागर में डूब जाएंगे? कितने लोगों को गुलामों की तरह बाजार में बिकना पड़ेगा? जानते हो तुम...नहीं, तुम नहीं जानते। यदि जानते होते तो जन्नत की कीमत पर भी यह काम न करते, यदि तुम्हारे मन में लोगों के प्रति हमदर्दी होती, यदि तुम लालची नहीं होते।'

मुल्ला नसरुद्दीन के चेहरे पर उलझन, आश्चर्य और नागवारी के मिले-जुले भाव दिखाई देने लगे। वह बोला—'तुम क्या कह रहे हो लोहार भाई! मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूं। मेरे इस नेक काम से किसी के बेघर होने का क्या मतलब...? किसी की गुलामी का क्या मतलब? अच्छा तुम्हीं बताओ! किसी को मुसीबत में देखकर आंखें मूंद लेना किसी सच्चे मुसलमान को शोभा देता है?'

यह सुनकर लोहार को तनिक क्रोध आ गया—'तुम्हारा मतलब है कि नेकी के सबब दुनिया भर के सांप, बिच्छुओं और दरिन्दों को जिन्दगी बख्श देनी चाहिए?' फिर एकाएक ही वह कुछ कहते-कहते रुक गया और गौर से मुल्ला नसरुद्दीन को देखते हुए बोला—'लगता है तुम यहां के रहने वाले नहीं हो?'

'तुम्हारा अंदाजा बिल्कुल दुरुस्त है लोहार भाई!' मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा—'मैं काफी समय बाद और काफी दूर से यहां आया हूं।'

'इसलिए...इसलिए...।'

'क्या इसलिए लोहार भाई?' उलझकर नसरुद्दीन ने पूछा—'जरा साफ-साफ कहो न, क्या कहना चाहते हो?'

'ऐ परदेसी! तुमने जिसे बचाया , वह इस संसार का सबसे कमीना इंसान है—वह जोंक है जो नेक, गरीब और मजलूमों का खून चूसता है, बुखारा का हर तीसरा शख्स उसके जुल्मों-सितम के कारण रोता और कराहता है। किसी इंसान को नहीं, सांप के बच्चे को बचाया है तुमने।'

मुल्ला नसरुद्दीन की आंखों के सामने उन लोगों के चेहरे कौंध गए जो सूदखोर के अत्याचारों से त्रस्त होकर तपती दोपहरी में घरों से बाहर बैठे रो रहे थे, फिर एकाएक ही सिहर-सा उठा वह, यह सोचकर कि कहीं उसने उसी जालिम सूदखोर को तो नहीं बचा लिया?

यह विचार मन में आते ही सहमे-से अंदाज में वह बोला—'उस आदमी का नाम तो बताओ लोहार भाई! कौन है वो? क्या करता है?'

लोहार की आंखें नफरत से सुलग उठीं। यह नफरत उसके प्रति थी, जिसे मुल्ला नसरुद्दीन ने बचाया था। वह बोला—'ऐ मुसाफिर! तूने सूदखोर जाफर

की जिन्दगी बचाई है...एक खूनी लकड़बग्घे की जिन्दगी बचाई है तूने।'

'क्या कहा...।' एक चीख-सी निकली मुल्ला नसरुद्दीन के हलक से—'सूदखोर जाफर! या अल्लाह! यह मुझसे कैसा गुनाह हो गया। लानत है मुझ पर—क्या...क्या...।' अपने दोनों हाथों को अपनी आंखों के सामने लाकर वह बोला—'क्या इन हाथों से मैंने एक जहरीले सांप को पानी से निकाला है? वाकई इस गुनाह की तौबा नहीं। हे अल्लाह...हे मेरे परवरदीगार! मेरे इस गुनाह के लिए मुझे माफ करना। वह डूब कर मरे और बुखारा के लोगों को उसके जुल्मों से छुट्टी मिले, यह शायद तेरी ही मर्जी थी और मैंने तेरे काम में दखल दिया है—मुझे माफ करना रसूले पाक!'

नसरुद्दीन को इस प्रकार प्रयाश्चित करते देखकर लोहार भी कुछ नर्म पड़ गया। बोला—'अब कुछ नहीं हो सकता मुसाफिर भाई। सब्र से काम लो। जो हुआ, उसे खुदा की मर्जी समझकर कबूल करो—जो मौका हाथ से निकल गया, वह अब दोबारा लौटकर नहीं आ सकता—अब तो उस सूदखोर को कोई फिर से पानी में डूबोने से रहा।'

'ऐसी बात नहीं है लोहार भाई! अब भी बहुत कुछ किया जा सकता है।' जोश में भरकर मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा—'मैं मानता हूं कि मेरे हाथों एक बुरा काम हुआ है, मगर मैं...मैं कसम खाता हूं कि मैं अपनी इस गलती को सुधारूंगा—मैं उस सूदखोर को डूबोकर ही मारूंगा—इसी तालाब में डूबोकर मारूंगा...मैं अपने अब्बा की कसम खाकर कहता हूं कि मैं...उसे इसी तालाब में डूबोकर मारूंगा...मेरा वादा याद रखना लोहार भाई, क्योंकि मैं बकवास नहीं किया करता...जब भी तुम सूदखोर जाफर के तालाब में डूब मरने की बात सुनो तो समझ लेना कि मैंने अपना वादा पूरा कर दिया है—समझ लेना कि बुखारा अजीम के शहरियों का मैंने जो गुनाह किया था, उसका बदला चुका दिया है।'

कहकर मुल्ला नसरुद्दीन ने अपने गधे को ऐड़ लगाई, फिर तेजी से आगे बढ़ गया।

कारनामों की चर्चे

जब मुल्ला बाजार में पहुंचा तो वहां काफी चहलपहल थी। आसमान में शाम की सुरमई चादर तन गई थी। वातावरण में ठंडक का अहसास होने लगा था। चाय की दुकानों पर बैठे लोग भट्टियों के करीब सरक गए थे ताकि बदन में गर्मी बनी रहे। दुकानों पर रोशनियां हो गई थीं। ऊंटों के काफिले बाजार में आ रहे थे, क्योंकि कल सुबह बड़े बाजार का दिन था। दूर-पास के व्यापारी वहां पहुंच रहे थे। इनमें हिन्दुस्तान, ईरान, अरब, मिस्र और बहरीन के व्यापारी थे।

मुल्ला नसरुद्दीन एक चाय की दुकान पर पहुंचकर बोला—'मेरे पास अपने

और अपने गधे के लिए सिर्फ आधा ही तंका है।'

'आधे तंके में तो तुम यहां सिर्फ रात गुजार सकते हो।' चाय वाले ने कहा—'तुम्हें सोने के लिए कम्बल भी नहीं मिल सकेगा।'

'फिर अपना यह गधा मुझे कहां बांधना होगा?'

'मैं भला गधे के बारे में सिरदर्द क्यों मोल लेने लगा?'

मुल्ला नसरुद्दीन ने इधर-उधर देखा, चायखाने की बरसाती में बाहर की ओर एक खूंटा उसे दिखाई दिया, उसने अपना गधा उसी खूंटे से बांध दिया और चाय की दुकान में जाकर एक गद्दे पर लेट गया। वह अपने आपको काफी थका हुआ-सा महसूस कर रहा था।

थकावट के कारण उसकी आंखें मूंदी जा रही थीं। उसने आहिस्ता से आंखें मूंद लीं और सोने की कोशिश करने लगा। मगर तभी आठ-दस लोग चायखाने में आए, उन्होंने अपने-अपने गद्दे संभाले और चाय के ऑर्डर देकर, तकियों पर अधलेटे से बैठ गए। वे दूर देश के व्यापारी थे।

उनमें से एक बोला—'हां तो अब सुनाओ! मुल्ला नसरुद्दीन के बारे में क्या कह रहे थे तुम?'

'अरे भाई! अपने ख्वाजा नसरुद्दीन के कारनामे तो इतने हैं कि कई रातें गुजर जाएं पर उनके कारनामे खत्म न हों। किस्सा बगदाद का है जी। उन दिनों मैं भी बगदाद में ही था। हुआ क्या कि मुल्ला जी बगदाद के बाजार से गुजर रहे थे, ठीक तभी मुझे एक सराय में शोरगुल सुनाई दिया...।' और फिर उसकी आंखों के सामने बगदाद में घटी उस दिन की घटना थिरकती चली गई।

हिसाब बराबर हुआ

सराय के अन्दर अजीब-सा माहौल था।

सुर्ख चेहरे वाला मोटा-सा सराय का मालिक एक भिखारी नुमा व्यक्ति की गर्दन दबोचे उसे बुरी तरह झकझोड़ रहा था। भिखारी बेचारा डरा-सहमा आंखों में खौफ लिए उससे अपनी गर्दन छुड़ाने का असफल प्रयास कर रहा था, लेकिन किसी भी सूरत में कामयाब नहीं हो पा रहा था। कुछ लोग इर्द-गिर्द खड़े तमाशा देख रहे थे।

यह देखकर मुल्ला नसरुद्दीन भला कहां शान्त रहने वाला था। वह आगे बढ़ा और सराय मालिक से मुखातिब होकर बोला—'क्यों भई! क्या माजरा है? क्यों इस गरीब की चटनी बनाने पर तुले हो—छोड़ो...छोड़ो इसे और पहले बताओ कि क्या किस्सा है?'

सुर्खरू चेहरे वाले ने उसे झटककर इस प्रकार छोड़ा कि वह गिरते-गिरते बचा, फिर बोला—'यह भिखमंगा...आवारा इंसान...अल्लाह करे इसकी नाक सड़ जाए...इसकी आंतों में कीड़े पड़ जाएं...।'

'यह तो सब खुदा की मर्जी पर है कि यह होगा या नहीं, मगर आगे का किस्सा तो बयान करो।'

मुल्ला नसरुद्दीन ने उसे डांटा।

'यह...जलील उस वक्त मेरी दुकान में आया, जब मैं सींक-कबाब भून रहा था। इस उठाईगीर ने अपने कपड़ों में से एक रोटी निकाली और मेरी अंगीठी पर तब तक सेंकता रहा...तब तक सेकता रहा, जब तक कि मेरे सींक-कबाब की खुश्बू इसकी रोटी में रच-बस न गई—जब इसकी रोटी पूरी लज्जतदार हो गई तो इसने मजे से उसे खा लिया और जाने लगा। जब मैंने इससे रोटी सेकने की कीमत मांगी तो देखिए...पूछिए इन सबसे...यह कीमत देने से साफ मुकर गया...अब आप बताइए! मेरे सींक-कबाब की खुश्बू क्या हराम की थी, जो यह रोटी में लपेटकर निगल गया?'

मुल्ला नसरुद्दीन की समझ में सारी बात आ गई। उसे समझते देर न लगी कि ये सुर्खरू चेहरे वाला पक्का हरामी है। मन-ही-मन उसने सोच लिया कि इसे सबक सिखाना ही होगा। उसने उस गरीब से मुखातिब होकर पूछा—'क्यों जी! क्या यह बात सच है?'

डर और परेशानी के मारे उसके मुंह से कोई बोल न फूटा। वह सहमा हुआ-सा खड़ा एकटक उसका चेहरा देखने लगा। उसकी आंखों में ऐसे भाव थे, जैसे जिबह होने से पहले बकरे की आंखों में दिखाई देते हैं।

'क्या तुम्हें इतना भी इल्म नहीं कि बिना कीमत चुकाए किसी की कोई भी चीज लेना गुनाह है।'

मुल्ला नसरुद्दीन की यह बात सुनकर सुर्खरू सराय मालिक का चेहरा खिल उठा। भिखारी को सम्बोधित करके वह बोला—'इस काबिल और इज्जतदार नेक बन्दे की बात पर ध्यान दे शैतान! कुछ सुना या नहीं तूने?'

मुल्ला नसरुद्दीन ने भिखारीनुमा व्यक्ति से पूछा—'क्या तुम्हारे पास पैसे हैं?'

भिखारीनुमा व्यक्ति ने अपने लिबास में हाथ डालकर कुछ सिक्के निकालकर मुल्ला नसरुद्दीन के हाथ पर रख दिए।

सराय मालिक ने अपना आधा फुट चौड़ा चर्बीदार पंजा नसरुद्दीन के आगे फैला दिया।

'ठहरो...ठहरो, जरा तसल्ली रखो...।' मुल्ला नसरुद्दीन ने उसका हाथ पीछे हटा दिया और कहा—'पहले जरा अपना कान मेरे करीब लाओ।'

सुर्खरू सराय मालिक ने अपना दायां कान मुल्ला नसरुद्दीन के आगे कर दिया।

मुल्ला नसरुद्दीन उसके कान के पास मुट्ठी करके सिक्के खनखनाने लगा।

'कैसी है इनकी खनखनाहट?'

'बहुत खूब...बढ़िया...मजा आ गया!'
मुल्ला नसरुद्दीन ने सिक्के भिखारी को दे दिए और बोला—'ऐ मेरे गरीब दोस्त! हिसाब बराबर हुआ, अब तुम जा सकते हो...।'
'क्या कहा...।' सराय मालिक के तेवर फौरन बदल गए। उसकी आंखें लाल होकर बाहर को उबल पड़ीं। क्रोध से दहाड़ा—'जा सकते हो! लेकिन मेरे पैसे तो मुझे मिले ही नहीं?'
'ज्यादा न बनो...।' इस बार मुल्ला नसरुद्दीन के भी तेवर बदल गए—'तुम्हें तुम्हारी खुश्बू की पूरी कीमत मिल चुकी है।'
'कैसे...कैसे मिल चुकी...?' सुर्खरू चेहरे वाला चिल्लाया, फिर लोगों को सम्बोधित करते हुए बोला—'देख रहे हैं आप लोग...कैसी गुण्डागर्दी हो रही है यहां और आप लोग चुप हैं?'
'ठहरो! मैं तुम्हें समझाता हूं...आप भी सुनिए...।' मुल्ला नसरुद्दीन ने तमाशबीनों से कहा—'तुम्हारा हिसाब बराबर इस प्रकार हो गया दोस्त कि इसने तुम्हारे सींक-कबाब की खुश्बू सूंघी, सूंघी न...?'
'हां—।'
'सींक-कबाब खाए तो नहीं?'
'नहीं...।'
'बदले में तुमने इसके सिक्कों की खनखनाहट सुन ली और यह भी कहा कि मजा आ गया—कहा था कि नहीं...?'
'कहा था...।'
'तो बस—हिसाब बराबर...।'
'वाह-वाह—मरहबा—मरहबा—।' लोग मुल्ला नसरुद्दीन की तारीफ करने लगे—'क्या इंसाफ किया है।'
सराय का मालिक अग्नेय नेत्रों से मुल्ला नसरुद्दीन को घूर रहा था।
इस वाकिए को सुनकर सभी जोर से हंस पड़े।
मुल्ला नसरुद्दीन भी हौले-हौले मुस्करा रहा था, हालांकि उसकी पलकें मुंदी हुई थीं।
शोर ज्यादा बढ़ जाता, इससे पहले ही एक व्यक्ति बोला—'इतने जोर से मत हंसो वरना लोग समझ जाएंगे कि हम मुल्ला नसरुद्दीन की बातें कर रहे हैं।'
मुल्ला नसरुद्दीन सोच रहा था कि इन लोगों को इस घटना का कैसे पता चला? यह घटना बगदाद में नहीं, बल्कि इस्ताम्बुल में घटी थी—फिर इन बगदादियों को इसकी भनक कैसे पड़ी?
तभी—मवेशियों के व्यापारी ने कहा—'अब एक किस्सा मैं भी सुनाता हूं—।'

'हां—हां—सुनाओ...।'

'सुना जाता है कि...!' फिर उसकी आंखों के सामने यह घटना फिल्म के दृश्यों की भांति सजीव हो उठी।

कद्दू और धर्म-ज्ञान की बात

एक दिन मुल्ला नसरुद्दीन एक मौलवी के बगीचे के सामने से गुजर रहा था। मौलवी साहब एक बोरे में कद्दू भर रहे थे। मौलवी हालांकि पूरा बोरा भर चुके थे, मगर लालच के मारे उन्होंने उसमें और अधिक... यूं कहा जाए कि ठूंस-ठूंसकर कद्दू भर लिए। ढोने की बात तो कौन कहे, अब तो वह बोरा उनसे उठाया तक नहीं गया, अतः बगीचे के गेट पर खड़े-खड़े वे सोच रहे थे कि क्या करें। कद्दू कम करते हुए उनका जी कट रहा था और इतना वजन उठाना उनके फरिश्तों के भी वश में नहीं था।

तभी मुल्ला नसरुद्दीन उधर से गुजरा। उसे देखकर मौलवी साहब बहुत खुश हुए और उसे सम्बोधित किया—'सुनो बेटे...!'

मुल्ला ठिठके—'आदाब बजा लाता हूं मौलवी साहब!'

'खुदा सलामत रखे...।' आवाज में मिस्री-सी घोलकर वे बोले—'बेटे! क्या तुम मेरा यह बोरा मेरे घर तक पहुंचा दोगे?'

मुल्ला नसरुद्दीन के पास उस समय पैसा नहीं था, अतः वह बोझा उठाने के लिए सहमत हो गया और पूछा—'यह बोरा ले जाने के लिए आप मुझे कितना पैसा देंगे?'

लालची मौलवी उसे भला क्या देते, बोले—'पैसे की बात मत करो मेरे बेटे—हम तो अल्लाह वाले हैं, हमें भला पैसे से क्या लेना-देना—हमसे तो कोई इल्म ले लो—ज्ञान ले लो—जब तुम मेरा बोरा उठाकर चलोगे तो रास्ते में मजहब से ताल्लुक रखती ज्ञान की तीन ऐसी बातें बताऊंगा कि अगर तुम उन पर अमल करोगे तो तुम्हारा जीवन खुशियों से लबरेज हो जाएगा।'

मुल्ला नसरुद्दीन ने सोचा कि चलो, धर्म—ज्ञान की बातों की ही जानकारी हासिल कर ली जाए। आखिर यह भी कभी-न-कभी काम ही आएगी।

'ठीक है बुजुर्गवार—मुझे मंजूर है।' कहकर उसने बोरा उठा लिया और चल दिया।

मौलवी साहब की आंखें चमकने लगीं और अपनी बुद्धि पर उन्हें रस्क हो उठा कि कैसा बेवकूफ बनाया इस नौजवान को।

जिस रास्ते से होकर वे गुजर रहे थे, वह काफी ऊंचा था। उसके एक ओर गारा और कीचड़ था। मुल्ला नसरुद्दीन थोड़ा सुस्ताने के लिए रुक गया।

कहीं मुल्ला नसरुद्दीन का इरादा ही न बदल जाए, यह सोचकर मौलवी साहब बड़े ही आत्मविश्वास और रहस्याना अंदाज में बोले—'सुनो नौजवान!

अब मैं तुम्हें धर्म-ज्ञान की बात बताता हूं। देखो! मेरी बात बड़े ध्यान से सुनना क्योंकि यह बात बड़े कांटे की है। जब से ये कायनात बनी है, तब से आज तक इससे बड़ी कोई बात हुई ही नहीं, अगर तुम इन लफ्जों का मतलब समझ लोगे तो यह उन अलिफ, लाम, मीम हरफों का हकीकी आशय समझने के बराबर होगा, जिनसे हजरत मुहम्मद ने कुरान का दूसरा अध्याय शुरू किया था।'

उत्सुकता से मुल्ला नसरुद्दीन ने पूछा—'ऐसी कौन-सी बात है मेरे आदरणीय बुजुर्गवार?'

'सुनो—ध्यान देकर सुनो—अगर कोई तुझसे कहे कि सवारी करने से पैदल चलना अधिक बेहतर है तो उसकी बात पर हरगिज भी भरोसा न करना, मेरे बेटे! मेरी यह बात याद रखने के काबिल है, हर समय गौर करने के काबिल है, तभी तुम इन शब्दों में छिपे धर्म-ज्ञान के रहस्य को समझ सकोगे।'

मुल्ला नसरुद्दीन की उल्लू जैसी गोल-गोल आंखें मौलवी के चेहरे पर जम गईं और स्वीकारने वाले अंदाज में जल्दी-जल्दी सिर हिलाने लगा वह।

मौलवी के चेहरे पर ढकी-छिपी मक्कारी उसकी पैनी नजरों से बच न सकी थी।

'लेकिन बेटे!' मौलवी साहब पुनः बोले—'यह बात जो मैंने तुम्हें बताई है, यह उस बात के मुकाबले कुछ भी नहीं है जो मैं तुम्हें... ।' करीब दो फर्लांग की दूरी पर दिखाई दे रहे एक पेड़ की ओर इशारा करके वे बोले—'उस दरख्त के नीचे जाकर बताऊंगा।'

'अच्छा!' खुश होकर मुल्ला नसरुद्दीन बोला—'तब तो मुझे उस दरख्त के नीचे शीघ्र ही पहुंचना चाहिए।'

कहकर उसने कद्दुओं का बोरा उठाया और चल दिया। हालांकि वह पसीने से तर-बतर था, मगर देखना चाहता था कि यह मौलवी उसे किस हद तक बेवकूफ समझता है।

शीघ्र ही वह उस दरख्त के नीचे पहुंच गया और तब मौलवी बोला—'बेटे! धर्म-ज्ञान की इस दूसरी बात में पूरा कुरान शरीफ, आधी शरीयत और चौथाई हकीकत भरी पड़ी है। इस बात को समझ लेने वाला कभी भलाई के रास्ते से नहीं डिगेगा, वह हमेशा सच्चाई और नेक-नीयती के रास्ते पर चलेगा। ऐ मेरे बेटे! इस अक्लमंदी की बात को समझने की कोशिश कर—यह तेरी खुशनसीबी है कि बिना कुछ खर्च किए तुझे यह बात पता चल रही है। धर्म-ज्ञान की वो दूसरी बात ये है कि यदि कोई तुझसे कहे कि गरीब आदमी की जिन्दगी अमीर आदमी के मुकाबले कहीं बेहतर है, तो इस बात पर हरगिज-हरगिज विश्वास न करना।'

'हूं—वाकई।' मुल्ला नसरुद्दीन ने फिर गर्दन हिलाई।

'लेकिन...यह दूसरी बात उस तीसरी बात के मुकाबले कुछ भी नहीं है।

उसकी तेज चमक सूरज की रोशनी की तरह है। उसकी गहराई यानी उसके अर्थ की मिसाल सिर्फ समुद्र की गहराई से दी जा सकती है...।'

'और वह तीसरी बात आप मुझे अपने घर चलकर बताएंगे?'

'बिल्कुल ठीक—बिल्कुल ठीक—मेरी दो बातों ने ही तुम्हें कितना जहीन बना दिया है।' मौलवी साहब खुश होकर बोले—'अब जल्दी चलो मेरे बेटे—बहुत आराम कर लिया।'

'ठहरिए मौलवी साहब!' मुल्ला नसरुद्दीन बड़े शान्त, किन्तु रहस्यपूर्ण लहजे में बोला—'आपकी वह तीसरी बात...जो आप मुझे अपने घर चलकर बताने वाले हैं, वह मुझे अभी पता चल चुकी है। आप अपने घर पहुंचकर बताएंगे कि समझदार आदमी बेवकूफ आदमी को बिना कोई पैसा दिए, कद्दुओं का बोझ उठवा सकता है।'

यह सुनते ही मौलवी साहब आश्चर्यचकित रह गए। उनसे कुछ कहते नहीं बना। हक्के-बक्के से वह मुल्ला नसरुद्दीन का चेहरा देखते रह गए। अपने घर पहुंचकर वह वाकई यही सब कहने वाले थे।

'अब...।' मुल्ला नसरुद्दीन बड़ी शान्ति और सब्र से बोला—'एक बात धर्म-ज्ञान की आप मुझसे भी सुनिए—मेरी एक ही बात आपकी तीनों बातों पर हावी है। मैं पाक पैगम्बर की कसम खाकर कहता हूं कि मेरी धर्म-ज्ञान की बात इतनी आशयपूर्ण तथा चकाचौंध कर देने वाली है कि इसमें कुरान, शरीअत, तरीकत व अन्य किताबों सहित इस्लाम, बौद्ध, फलस्फा, ईसाई और यहूदी धर्मों की सभी बातें सम्मलित हैं। मुल्ला जी! मुझे सच्चाई और ईमान की तहजीब देने वाले मेरे उस्ताद जी! इस बात से अधिक, जो कि मैं आपको बताने जा रहा हूं, कोई धर्म-ज्ञान की बात कभी हुई ही नहीं।'

मुल्ला नसरुद्दीन बोल रहा था और मौलवी साहब बगुले की भांति उसका चेहरा देख रहे थे।

मुल्ला नसरुद्दीन पुनः बोला—'हां, एक बात और—मेरी बात को सुनने से पहले आप अपने आपको अच्छी तरह तैयार कर लीजिए क्योंकि यह बात इतनी भव्य और आश्चर्य में डाल देने वाली है कि इससे किसी भी इंसान का दिमाग फिर सकता है। मौलवी साहब! अपने दिलो-दिमाग को खासा मजबूत कर लीजिए और सुनिए—अगर आपसे कोई कहे कि ये कद्दू फूटे नहीं हैं तो उसके मुंह पर थूक दीजिएगा। उसकी बात को खालिस झूठ मानिएगा और उसे धक्के देकर अपने घर से बाहर निकाल दीजिएगा।'

यह कहकर मुल्ला नसरुद्दीन ने कद्दुओं का बोरा उठाया और करीब ही एक सूखे गड्ढे में फेंक दिया। कद्दू बोरे से निकलकर पत्थरों से टकरा-टकराकर चकनाचूर हो गए।

मौलवी साहब हाय-हाय करते रह गए। दोनों हाथ उठाकर बोले—'हाय!

मैं लुट गया, बरबाद हो गया।' कहकर वह कभी अपने बाल नोचते, कभी छाती पीटते।

मुल्ला नसरुद्दीन से वह लड़ नहीं सकते थे, क्योंकि शरीर में इतनी जान ही नहीं थी। अतः छाती पीटने और दाढ़ी नोचने के अलावा उनके पास कोई चारा नहीं था।

फिर चलते-चलते मुल्ला नसरुद्दीन बोला—'मौलवी साहब! खुद देख लीजिए कि जो बात मैंने बताई, उसमें कितनी सच्चाई है। मैंने आपको पहले ही आगाह कर दिया था कि धर्म-ज्ञान की मेरी बात सुनकर आप पागल भी हो सकते हैं—खैर, अब आप खुद अपनी हरकतें देख लें।'

यह सुनकर वहां बैठे लोग ठठाकर हंस पड़े।

उधर—चायखाना भी ठहाकों से गूंज उठा।

अरे...इन्होंने तो इस घटना की भी जानकारी हासिल कर ली। मगर कैसे? उस समय तो उस सड़क पर केवल दो ही व्यक्ति थे—एक मैं और दूसरा मौलवी। मैंने इस घटना का जिक्र भी किसी से किया नहीं। हो सकता है कि मौलवी ने ही इस घटना का जिक्र किसी से किया हो या हो सकता है कि बाद में उसे इस बात का इल्म हो गया हो कि उसके कद्दू किसने ढोए थे?'

इधर मुल्ला नसरुद्दीन यह सब सोच रहा था और उधर एक अन्य व्यक्ति ने उसकी एक और दास्तान सुनानी शुरू कर दी—

चेचकरू जासूस की एक चाल

'भाइयों! मुल्ला नसरुद्दीन का यह किस्सा भी काफी मशहूर है। एक बार वह एक गांव में लगभग छः महीने तक रहा। वह अपनी हाजिर जवाबी, कुशाग्र बुद्धि और हंसी-मजाक के लिए काफी प्रसिद्ध हो गया था।'

यह आवाज सुनते ही मुल्ला नसरुद्दीन बुरी तरह चौंक पड़ा। यह आवाज उसे कुछ जानी-पहचानी-सी लगी। यह आवाज हल्की और भर्राई हुई थी। उसे लगा कि उसने कुछ समय पूर्व ही यह आवाज सुनी है, मगर कब और कहां? दिमाग पर काफी जोर डालने के बाद भी उसे याद नहीं आया।

वह कह रहा था—'एक रोज की बात है। उस प्रांत के अधिकारी ने उस गांव में अपना एक हाथी भिजवा दिया, जहां कि मुल्ला नसरुद्दीन रहता था। अधिकारी ने आदेश दिया कि हाथी के खाने-पीने का कुल इंतजाम गांव वालों को ही करना होगा। यह हाथी अपनी भारी खुराक के लिए काफी विख्यात था। वह एक समय में पचास गट्ठर चरी, पचास गट्ठर जौ, पचास गट्ठर मक्का और सौ बोझ चारा खा जाता था। इसका नतीजा यह हुआ कि पन्द्रह दिन में ही गांव वालों के खेत-खलिहान खाली हो गए। जब वे बेचारे बिल्कुल निराश हो गए और दूसरा कोई चारा न रहा तो गांव वालों ने फैसला किया कि मुल्ला नसरुद्दीन को कस्बा अधिकारी के पास भेजा जाए, ताकि वह अधिकारी से निवेदन करे कि वे अपना हाथी उस गांव से वापस मंगवा लें—यह निर्णय हो जाने के बाद सब मुल्ला नसरुद्दीन के पास गए और उसे अपनी परेशानी बताई। नसरुद्दीन ने सबकी परेशानी को सुना, फिर उनका कष्ट दूर करने के लिए सहमत हो गया।'

'फिर क्या हुआ?'

'फिर...फिर उसने अपने गधे पर जीन कसी और निकल पड़ा प्रान्त अधिकारी से मिलने।'

'नेकी के काम में तो वह कभी पीछे रहता ही नहीं...।' एक व्यक्ति बोला।

'अरे काहे की नेकी? जाने से पहले गांव वालों से वो अपना मेहनताना तय करना नहीं भूला था। दरअसल इस काम के लिए उसने गांव वालों से इतनी मोटी रकम वसूली थी कि कितनों को तो अपने घर ही बेचने पड़ गए थे, वे फकीर हो गए। उनकी उस खराब हालत का जिम्मेदार सिर्फ और सिर्फ नसरुद्दीन ही था।'

मुल्ला नसरुद्दीन का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा और उसने लेटे-लेटे ही एक लम्बी हुंकार भरी—'हूं।'

किसी भी व्यक्ति ने इस हुंकार पर कोई ध्यान नहीं दिया। सभी ने सोचा कि सुनने वाला ही हुंकार भर रहा होगा, जबकि किस्सागो अपना किस्सा सुनाने में व्यस्त था—'इस प्रकार मुल्ला नसरुद्दीन अपने सुस्त और बदमिजाज गधे

पर सवार होकर प्रांतीय अधिकारी के महल पर जा पहुंचा। वह काफी देर तक अधिकारी के नौकरों की कृपा पर मोहताज लोगों की भीड़ में खड़ा रहा कि शायद भूल से उन लोगों की नजर उस पर भी पड़ जाए। वह उस नजरे-करम के इंतजार में था जिसने कुछ लोगों को खुशियां बख्शी तो कुछ को बरबाद भी किया। जैसे ही अचानक वहां आए अधिकारी की नजर मुल्ला नसरुद्दीन पर पड़ी तो उसकी शानदार सूरत देखकर नसरुद्दीन इतना भयभीत तथा आश्चर्यचकित हो गया कि उसकी टांगें सियार की पूंछ की तरह कांपने लगीं और उसके जिस्म में खून का दौरा धीमा पड़ गया। वह पसीने से लथपथ हो गया और उसका चेहरा तो खड़िया से भी अधिक सफेद दिखाई देने लगा था।'

मुल्ला नसरुद्दीन के मुंह से फिर हुं...हुं... की आवाज निकली।

मगर कहानी सुनाने वाले ने आक्रोश में भरी इस हुंकार की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और अपनी ही रौ में बोलता चला गया—

'डर के मारे मुल्ला नसरुद्दीन के मुंह से आवाज न निकली, फिर कुछ साहस बटोरकर बदबूदार लकड़बग्घों जैसी मिमयाती आवाज में वह बोला—'ऐ मेरे शानदार आका! ऐ इस सूबे के शानदार उजाले! ऐ इस सूबे के चांद-सूरज! इस सूबे के निवासियों को खुशियां और आनन्द बख्शने वाले, अपने इस नाचीज गुलाम की भी फरियाद सुनने की मेहरबानी कबूल फरमाएं, जो कि आपकी इस शानदार चौखट को अपनी दाढ़ी से साफ करने के भी लायक नहीं है।'

प्रान्तीय अधिकारी खुश हो गया और उसने मुल्ला नसरुद्दीन को अपनी बात कहने की इजाजत बख्श दी।

'ऐ दयालुओं के दयालू! आपने अपना एक हाथी हमारे गावं में भेजकर हम पर बड़ी मेहरबानी की है। यह हमारी खुशनसीबी है कि हमें उसकी सेवा करने का मौका मिल रहा है।' मुल्ला नसरुद्दीन की हिम्मत नहीं हो पा रही थी कि वह उससे असली और मुद्दे की बात कह सके, इसलिए इधर-उधर की हांकते हुए वह बोला—'हालांकि हाथी की सेवा में हमारी तरफ से कोई कमी नहीं उठाई जा रही, मगर फिर भी हमें एक बात की चिन्ता खाए जा रही है।'

'चिन्ता?' प्रान्तीय अधिकारी की भवें तन गईं। वह गुर्राया—'कैसी चिन्ता?'

मुल्ला नसरुद्दीन उसके सामने ठीक वैसे ही झुका, जैसे ईख के खेत में खड़ा इकलौता गन्ना आंधी में झुक जाता है।

'बोलता क्यों नहीं! किस बात की चिन्ता खाए जा रही है?'

मुल्ला नसरुद्दीन ने भयभीत होकर कांपते हुए कहा—'ह...ह... हुजूर...ह... हालांकि हाथी की सेवा में हम ज...जी...जान से जुटे रहते हैं, लेकिन फिर भी मुझे लगता है कि वह हमारे साथ रहकर खुश नहीं है। उसे खाया-पिया नहीं लगता—वह बड़ा उदास-सा रहता है—लगता है या तो उसे आपकी याद सताती है या एकान्त में रहना ही उसे पसंद नहीं—सरकारे

आली! पूरा गांव उसकी उदासी को लेकर परेशान है—गांव वालों ने मुझे आपके पास इस निवेदन के लिए भेजा है कि या तो उसकी उदासी दूर करने के लिए आप किसी हथिनी की व्यवस्था करें या उसे वापस उसके परिवार या झुण्ड में पहुंचा दें क्योंकि...क्योंकि हम सब यूं खामोश रहकर उसकी उदासी नहीं देख सकते।'

'इस निवेदन को सुनकर प्रान्त का अधिकारी बहुत खुश हुआ। उसने तुरन्त गांव में एक हथिनी भिजवाने का आदेश जारी कर दिया और अपनी खुशी जाहिर करने के लिए मुल्ला नसरुद्दीन को अपना जूता चूमने की इजाजत दे दी। मुल्ला नसरुद्दीन ने इस काम को इतनी लगन से अंजाम दिया कि अधिकारी के जूते की रंगत ही उड़ गई। मुल्ला नसरुद्दीन के होंठ काले पड़ गए। और...।'

इससे पहले कि किस्सा सुनाने वाला आगे कुछ और कह पाता कि मुल्ला नसरुद्दीन जोर-जोर से चीखा—'तू झूठ बोल रहा है—अबे गंदे और मरियल कुत्ते! यह तेरी जुबान, तेरे होंठ और तेरा पेट है जो बड़े लोगों के जूते चाट-चाटकर काले पड़ चुके हैं। मुल्ला नसरुद्दीन आज तक कभी किसी बड़े आदमी के आगे नहीं झुका। तू एक नेक दिल इंसान को क्यों मुफ्त में बदनाम कर रहा है? ऐ नेक व्यापारियों! तुम इस पाजी की बात न सुनकर इसे मार-पीटकर यहां से भगा दो।'

वह बदनाम करने वाले उस व्यक्ति से निपटने के लिए उठकर उसकी ओर झपटा ही था कि ठिठककर रुक गया। उसके सामने चेचक के दागों वाला वही व्यक्ति था जिसकी काइयां आंखें काफी पीली थीं। यह वही नौकर था, जन्नत पर पुल की बाड़ बनाने को लेकर मुल्ला नसरुद्दीन की जिससे पहले ही झड़प हो चुकी थी और जो उसकी थैली से डेढ़ सौ तंके अपने मालिक की सलामती की नमाज अदा करने के लिए ले गया था।

उसे देखते ही मुल्ला नसरुद्दीन चिल्लाया—'अबे अमीर के खुफिया जासूस—मैं तुझे अच्छी तरह पहचानता हूं—मेरी नजरें तुझे पहचानने में धोखा नहीं खा सकतीं—बता, लोगों की जासूसी करने का तुझे क्या मिलता है? जिन निर्दोष और मासूमों को तू फांसी दिलवाता है, उसके एवज में कितनी रकम हासिल होती है तुझे?'

चेचक के चेहरे वाला भी उसे देखकर चौंका। अभी तक वह खामोश बैठा मुल्ला नसरुद्दीन को घूर रहा था, फिर अचानक उसने ताली बजाई और जोर से चीखा—'सिपाहियों! सिपाहियों!!'

जैसे ही मुल्ला नसरुद्दीन ने सिपाहियों के भागते कदमों की आवाज सुनी, वैसे ही एक भी पल गंवाए बिना वह उछला और चेचकरू नौकर को एक ओर धकेलता हुआ बाहर निकल गया। दरअसल चेचकरू जासूस की यह एक चाल थी। वह इसी प्रकार मौका पाकर व्यापारियों के झुण्ड में शामिल हो जाता था

और मुल्ला नसरुद्दीन की टोह लेने के लिए, इस प्रकार के मनगढ़ंत किस्से सुनाया करता था ताकि मुल्ला नसरुद्दीन स्वयं या उसका कोई रिश्तेदार जब उसका विरोध करे तो वह उन्हें सिपाहियों से पकड़वा दे और उसके बदले में अमीर से इनामो-इकराम हासिल करे। आज काफी दिनों के बाद उसकी मेहनत रंग लाई थी मगर... मुल्ला नसरुद्दीन उसकी पकड़ से बाहर निकल चुका था।

थोड़ा आगे बढ़ने पर उसे चौराहे के दूसरी ओर पहरेदारों के कदमों की आवाज सुनाई पड़ी। उसने जिस तरफ से भी निकलना चाहा, सामने सिपाही ही दिखाई दिए। एक पल के लिए मुल्ला नसरुद्दीन को लगा कि आज उसका बच निकलना मुश्किल है।

'लानत है मुझ पर! आज बुरा फंसा। ऐ मेरे वफादार गधे तू कहां है? लगता है आज तेरे-मेरे बिछुड़ने का समय आ गया है।' मुल्ला नसरुद्दीन बड़बड़ाया।

मगर तभी एक ऐसी आश्चर्यजनक घटना घटी जिसकी किसी को भी आशा नहीं थी।

आज भी बुखारा वाले इस घटना को याद करते हैं। यह एक ऐसी घटना थी जिसे आसानी से नहीं भुलाया जा सकता। इस घटना से बुखारा वासियों को काफी माली नुकसान उठाना पड़ा था।

अफरा-तफरी और तबाही

गधे के कानों में न जाने कैसे अपने मालिक की कातर आवाज पड़ गई और वह उछलकर बड़ी ही इंकलाबी आवाज में रेंका। फिर वह खूंटा तोड़कर अपने मालिक की ओर भागा। जैसे ही वह बरसाती से बाहर की तरह लपका, वैसे ही एक बड़ा ढोल भी उसके साथ-साथ आने लगा। दरअसल अंधेरे में बिना देखे-भाले नसरुद्दीन ने उसे एक ढोल के कुन्दे से बांध दिया था। यह वह ढोल था, जिसे त्योहारों आदि के मौके पर बजा-बजाकर चायखाने का मालिक अपने ग्राहकों को आकर्षित करता था।

वही ढोल एक पत्थर से जा टकराया, फलस्वरूप एक तेज आवाज हुई।

गधे ने पीछे मुड़कर देखा, इस बार ढोल दाईं ओर एक बच्ची से टकरा गया—फिर तेज आवाज हुई—ढम्म।

गधे ने सोचा कि कोई शैतान उसके मालिक को छोड़कर उसके पीछे आ रहा है। अब उनकी खैर नहीं—यह ख्याल मन में आते ही वह भयभीत हो उठा और बुरी तरह रेंकता हुआ पूंछ उठाकर बाजार की ओर भागा।

रास्ते में करीब 50-60 ऊंटों का एक काफिला चीनी-मिट्टी के बर्तन और तांबे की चादरें लादे चला आ रहा था। उन ऊंटों ने बुरी तरह रेंकते और धमकने-गमकने वाले इस जानवर को अपनी ओर आते देखा तो वे भी घबराकर इधर-उधर भाग निकले। घबराहट और बेतरतीब भागने के कारण

उन पर रखा सामान जमीन पर गिर-गिरकर चकनाचूर होने लगा। अजीब-सी हौलनाक आवाजें वातावरण में सुनाई देने लगीं। बाजार से दूर जो लोग थे, उन्होंने समझा कि बाजार में बलवा हो गया है, अतः वे जिधर मुंह उठा, उधर ही भाग लिए।

और फिर देखते-ही-देखते पूरे बाजार में ही नहीं, बल्कि आसपास की गलियों में भय और आतंक छा गया। खनखनाहट, रेंकना, टिनटिनाहट, बर्तनों के गिरने की आवाज, चीख पुकार, बिल्कुल नर्क जैसा माहौल बन गया था। ऊंटों और घोड़ों के अंधाधुंध भागने से कितने ही तम्बू और चायखानों की बरसातियां उखड़ गई थीं।

इस खौफनाक शोर को सुनकर कितने ही लोग सोते से जाग गए थे और अधनंगे हो, इधर-उधर भाग लिए।

घरों-दुकानों में रोशनियां गुल हो गईं। भागने वाले अंधेरे में कभी किसी से भिड़ जाते तो कभी किसी जानवर की दुलत्ती खाते—दहशतनाक चीख- पुकार मची हुई थी चारों तरफ। वे लोग समझ रहे थे कि कयामत का दिन आ गया है। मुर्गे पंख फड़फड़ाकर अजीब-सी आवाज में चिल्लाने लगे। बकरियां और मेढ़े मिमियाने लगे थे। शोर-गुल बढ़ता-बढ़ता शहर की घनी आबादी तक जा पहुंचा था।

शहर की चारदीवारी पर लगी तोपें दगने लगीं।

शहर के पहरेदारों ने समझा कि कोई दुश्मन बुखारा में दाखिल हो गया है।

महल के पहरेदारों ने समझा कि बगावत हो गई है। वहां से भी तोपें दागी जाने लगीं। शहर की मीनारों से मुल्ला सहमी हुई आवाजों में दुआएं मांगने लगे।

सभी ओर अफरा-तफरी मची हुई थी। किसी को समझ में नहीं आ रहा था कि क्या हुआ और वह कहां जाए, क्या करे?

अपने महल में अमीर भौंचक्का-सा सिपहसालारों पर गर्ज-बरस रहा था।

मगर क्या हुआ—कैसे हुआ? यह सब केवल एक शख्स ही जानता था और वो था, मुल्ला नसरुद्दीन। वह बौखलाए ऊंटों व घोड़ों से बचता-बचाता उस दिशा में भाग रहा था, जिधर यह खौफनाक शोर पैदा करता उसका गधा भागा जा रहा था।

मगर लाख कोशिशों के बावजूद वह गधे को पकड़ नहीं पाया। उसकी यह दौड़ तब तक चलती रही, जब तक कि उसके गधे और ढोल को जोड़ने वाली रस्सी टूट न गई।

रस्सी के टूटते ही ढोल लुढ़ककर ऊंटों की ठोकरों में जा पहुंचा।

ऊंट उससे बचने के लिए हड़बड़ी में चायखानों के छप्पर, शामियाने और खोखे गिराते चले गए।

फिर ऐसा हुआ कि एक मोड़ पर अचानक मुल्ला नसरुद्दीन और उसका

गधा एक-दूसरे के आमने-सामने आ गए। गधे के मुंह से झाग निकल रहा था और...वह बुरी तरह हांफ रहा था।

मुल्ला नसरुद्दीन हालांकि स्वयं भी हांफ रहा था, मगर ऐसे में उसने एक पल की भी देर करना उचित नहीं समझा और गधे की रस्सी पकड़कर पीछे की ओर खींचते हुए बोला—'आ चल, उधर चलते हैं, यहां तो बेतुका शोर हो रहा है। यह देखकर उसे आश्चर्य हो रहा था कि गधे जैसे छोटे से पशु के पीछे यदि एक ढोल बांधकर छोड़ दिया जाए तो यह मामूली-सा पशु भी कितनी बड़ी तबाही ला सकता है।

अबे! देखा तूने क्या कर डाला? यह सच है कि ये बबाल फैलाकर तूने मुझे सिपाहियों से बचाया है, फिर भी बहुत-से गरीब इस अफरा-तफरी में तबाह हो गए होंगे और उन बेचारों को संभलते- संभलते सुबह हो जाएगी। खैर.. अब हमें कोई ऐसी जगह तलाशनी होगी, जहां हमारे आराम में किसी प्रकार का कोई विघ्न न पड़े।'

और फिर—वह सोचने लगा कि ऐसी कौन-सी जगह है, जहां वे दोनों चैन से रात गुजार सकें।

काफी सोच-विचार के बाद वह इस निर्णय पर पहुंचा कि उसे बुखारा के एकमात्र कब्रिस्तान में ही चैन मिल सकता है। शर्तिया बात है कि वहां किसी प्रकार का कोई विघ्न नहीं आने वाला था। उसका ऐसा सोचना किसी हद तक ठीक भी था। शहर में चाहे कितनी ही गड़बड़ी क्यों न फैले, मगर कब्रिस्तान में किसी प्रकार कीं कोई आफत नहीं आ सकती थी।

मुल्ला नसरुद्दीन ने उसकी लगाम पकड़ी और कब्रिस्तान की ओर रुख किया।

इस प्रकार मुल्ला नसरुद्दीन ने अपने शहर बुखारा में अपनी वापसी का धमाकेदार पहला दिन पूरा किया। उसने गधे को एक कब्र के पत्थर से बांध दिया और स्वयं दूसरी कब्र पर जाकर लेट गया।

उधर शहर में सारी रात तोपों की गर्ज, शोरगुल व चीख-पुकार मचती रही, मगर वह लम्बी तानकर सो रहा था।

अमीर की अदालत

सुबह होते ही शाही हुक्म से अनेक बढ़ई, कुम्हार, मेहतर व दूसरे सफाई कर्मचारी बाजार में आ चुके थे। सभी अपने-अपने काम में लग चुके थे और देखते-ही-देखते बाजार साफ कर दिया गया था। रात को आई तबाही से काफी नुकसान हुआ था। कर्मचारियों ने शामियानों को सीधा किया, पुलों की मरम्मत की गई, बाड़ों के सुराखों को भरा गया और टूटे कांच के बर्तनों के टुकड़ों को साफ किया गया। फर्क यह रहा कि सूरज निकलने तक रात की गड़बड़ी का कोई चिन्ह वहां बाकी नहीं बचा था। ठीक समय पर बाजार लग गया और लोगों की आवाजाही शुरू हो गई और बाजार फैलता-फैलता अमीर के महल तक जा पहुंचा था।

पूरे बाजार में घूमता मुल्ला नसरुद्दीन महल के करीब जा पहुंचा, जहां डेरा डाले बहुत से लोग बैठे थे। ये सभी वे लोग थे जो अमीर की अदालत में अपनी फरियादें या मुकद्दमे लेकर आए थे।

मुल्ला नसरुद्दीन ने सोचा कि इन लोगों से बात की जाए। वह एक गंजे के पास पहुंचा जो अपने खेमे के बाहर बैठा था। उसके बगल वाले खेमे के बाहर एक लम्बी दाढ़ी वाला शख्स बैठा था और उन दोनों के बीच एक बकरा बंधा था जो कभी काफी तन्दुरुस्त रहा होगा, लेकिन इस समय उसकी हड्डियां चमक रही थीं।

मुल्ला नसरुद्दीन उनके करीब पहुंचकर बोला—'अस्सलामालेकुम! ऐ बुखारा शरीफ के निवासियों! आप लोग खानाबदोशों की तरह यहां क्यों पड़े हैं?'

'ऐ मुसाफिर!' दाढ़ी वाला बोला—'हम लोग खानाबदोश नहीं, बल्कि तुम्हारी तरह ही खुदा के नेक बंदे हैं।'

'अगर आप लोग नेक मुसलमान हैं तो यहां क्यों पड़े हैं, अपने घरों में क्यों नहीं रहते?'

'ऐ मुसाफिर! हम लोग अपने विद्वान बादशाह, जिसका ओज सूर्य के प्रकाश को ढक लेता है, ऐसे अमीर के नेक और सही न्याय की प्रतीक्षा में यहां बैठे हैं।'

'अच्छा!'

'हां—।'

इस बार गंजा व्यक्ति बोला—'हम पांच हफ्ते से यहां अमीर से न्याय मांगने की उम्मीद में पड़े हैं। यह लम्बी दाढ़ी वाला...एक नम्बर का झगड़ालू शख्स... अल्लाह इसे गारत करे...यह दढ़ियल मेरा बड़ा भाई है। हमारे वालिद जो कुछ भी छोड़कर मरे, हमने उसे आपस में बांट लिया है, अब हम दोनों के बीच यह बकरा ही है। हम समझ नहीं पा रहे हैं कि इस बकरे का बंटवारा कैसे करें।'

'और तुम्हारी वह जायदाद कहां है जो कि तुम्हें बंटवारे में मिली?'

'उसे बेचकर हमने नकद रुपया अपने पास रखा हुआ है। आखिर इस मुकद्दमे को लड़ने के लिए हमें नकद पैसे की भी तो जरूरत थी—मुहर्रिरों, अहलकारों, अर्जीनवीसों, अर्जियां लेने वालों को—आखिर किसे पैसे नहीं देने पड़ेंगे?' गंजे ने गर्व से कहा—'पैसे कितने ही क्यों न लग जाएं, मगर बकरा दूसरी तरफ नहीं जाना चाहिए।'

मुल्ला नसरुद्दीन ने देखा—बकरा लकड़ी के खूंटे को चबाता हुआ लगातार दर्दनाक आवाज में चीख रहा है। यह देखकर गंजे आदमी ने तिपतिया घास का एक गट्ठर उसके आगे डाल दिया।

यह देखकर दाढ़ी वाला चीखा—'अपनी यह बदबूदार घास मेरे बकरे के आगे से हटा ले।'

और फिर लात मारकर उसने वह घास बकरे के आगे से दूर फेंक दी और अपना भूसी का टब उसके सामने रख दिया।

यह देखकर गंजे को गुस्सा आ गया, वह क्रोध से चिल्लाया—'नहीं, नहीं—मेरा बकरा तेरी यह सूखी भूसी नहीं खाएगा।' फिर उसने भी ठोकर मारकर उस टब को दूर हटा दिया। सारी भूसी सड़क की धूल में मिल गई। बस, दाढ़ी वाले से यह सहन नहीं हुआ।

'अबे खबीस! तेरी इतनी हिम्मत...।'

'आ तुझे मजा चखाता हूं।'

और फिर देखते-ही-देखते वे दोनों गुत्थम-गुत्था हो गए। वे एक-दूसरे को गालियां बकते हुए जमीन पर लोट-पोट हो गए थे।

मुल्ला नसरुद्दीन एक ओर खड़ा उनकी यह दिलचस्प लड़ाई देख रहा था।

वे लड़ते रहे और उधर बकरे ने अचानक धरती पर गिरकर दम तोड़ दिया।

'अरे खुदा के नेक बन्दों! अब तो यह गुत्थम-गुत्था बंद करो—देखो...।' बकरे की ओर इशारा करके मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा—'अल्लाह ताला ने बकरे को अपने पास बुलाकर खुद ही तुम्हारा इंसाफ कर दिया है। बकरा मर गया।'

इस बात का तत्काल असर हुआ। वे लड़ना भूलकर फटी-फटी आंखों से बकरे को घूरने लगे। उनके चेहरे खून से लथपथ थे। जाहिर था कि दोनों ने एक-दूसरे के चेहरे को खूब नोचा था।

मुल्ला नसरुद्दीन ने सोचा कि अब झगड़ा खत्म हो गया।

मगर नहीं—अभी झगड़ा खत्म नहीं हुआ था।

दढ़ियल बोला—'अब मैं इसका चमड़ा निकाल लूंगा।'

'इसका चमड़ा मैं निकालूंगा क्योंकि यह बकरा मेरा है, इसकी खाल मैं ही लूंगा।'

'अबे यह बकरा मेरा है गंजे...!'

और फिर—इस प्रकार तू...तू...मैं-मैं करते वे एक बार फिर एक-दूसरे से गुथ गए।

गंजे ने दाढ़ी वाले की दाढ़ी नोच ली तो दाढ़ी वाले ने उसके गंजे सिर पर अपने नाखून गड़ा दिए।

मुल्ला नसरुद्दीन समझ गया कि ये दोनों ही पागल हैं, अतः वह आगे बढ़ गया।

मुल्ला नसरुद्दीन अभी कुछ कदम ही आगे बढ़ा था कि उसे सामने से वही लोहार आता दिखाई दिया, जिसने सूदखोर जाफर को बचाने पर भला-बुरा कहा था—उसे देखते ही मुल्ला नसरुद्दीन खुशी से बोला—'सलाम लोहार भाई। देखो, हम फिर मिल गए। हालांकि मैं अभी अपना वादा पूरा नहीं कर पाया हूं, मगर पूरा जरूर करूंगा। मगर तुम यहां कैसे? क्या तुम भी अमीर की अदालत में कोई फरियाद लेकर आए हो?'

'हां—।' गमगीन लहजे में वह बोला—'मैं लोहारों की बस्ती की एक शिकायत लेकर आया हूं।'

'शिकायत!' मुल्ला नसरुद्दीन भौंचक्का-सा होकर बोला—'क्या अमीर शिकायतें भी सुनते हैं? खैर! शिकायत क्या है लोहार भाई?'

'हमें पन्द्रह सिपाही मिले हैं जिन्हें तीन महीने तक खिलाने-पिलाने का जिम्मा हमारा था—मगर एक साल होने को आया, वे अभी हमारे सिर पर सवार हैं—यहां हमारा ही गुजारा बामुश्किल होता है, हम उन्हें भला कैसे खिलाएं? हम तो बड़ी मुश्किल में फंसे हैं।'

तभी एक दूसरा व्यक्ति भी वहां आ गया। वह रंगरेजों की बस्ती से आया था।

उसने कहा—'मैं रंगरेजों की बस्ती से आया हूं, हम पर छब्बीस सिपाहियों का जिम्मा है। मैं अमीर से फरियाद करने आया हूं कि हमारा धंधा बिल्कुल चौपट हुआ जा रहा है—मुनाफा बिल्कुल नहीं हो रहा—मेहरबानी करके अमीर हमें इस मुसीबत से निजात दिला दें।'

यह सुनकर मुल्ला नसरुद्दीन बोला—'लोहार भाई! एक बात मेरी समझ में नहीं आई कि तुम लोग सिपाहियों को आखिर पसंद क्यों नहीं करते, जब तुम अमीर, मंत्री व अधिकारियों को पालते हो, दो हजार गुलामों व छः हजार फकीरों को खिलाते-पिलाते हो, तो फिर बेचारे ये सिपाही क्यों भूखे रहें? क्या तुमने यह कहावत नहीं सुनी कि जहां किसी एक सियार को कुछ खाने को मिल जाता है, वहां दस सियार और आ जाते हैं।'

यह सुनकर लोहार सहमी-सहमी नजरों से इधर-उधर देखते हुए बोला—'धीरे बोलो—धीरे बोलो।'

रंगरेज मुल्ला नसरुद्दीन को घूरते हुए बोला—'ऐ मुसाफिर! तुम खतरनाक आदमी हो। मुझे तुम्हारी बातों में नेकी नजर नहीं आती—हमारे अमीर तो बड़े ही विद्वान...।'

उसकी बात अधूरी रह गई, तभी महल के द्वार पर ढोल और तुरही बजने लगी। महल के फाटक खुलने लगे। सारे खेमे में हलचल-सी मच गई। चारों ओर से फुसफुसाहट भरी आवाजें सुनाई देने लगीं—'अमीर...अमीर...।'

लोग महल के फाटक की ओर बढ़ने लगे ताकि नजर भरकर अमीर के दीदार कर सकें। मुल्ला नसरुद्दीन ने भी आगे बढ़कर एक सुविधाजनक जगह तलाश कर ली ताकि अमीर की अदालत का नजारा कर सके।

फाटक से पहले नकीब दौड़ते हुए निकले। वे चिल्ला रहे थे—'हटो—हटो—अमीर के लिए रास्ता छोड़ो—बाजू हटो—आला हजरत अमीर तशरीफ ला रहे हैं—।'

फिर अन्दर से सिपाहियों का एक दस्ता निकला, वे फाटक के किनारे खड़े लोगों पर लाठियां बरसाने लगे, ताकि वे पीछे हट जाएं। तत्काल ही एक चौड़ा रास्ता बन गया।

इसके बाद मसिसी लोग निकले। उनके हाथों में ढोल, बांसुरी, तम्बूरे आदि थे। इसके बाद कीमती वस्त्र और तलवारों से लैस अमीर के खास सेवकों का दस्ता निकला। दस्ते के पीछे दो हाथी थे जो पूरी तरह सजे-धजे थे। अन्त में एक सजी-धजी गाड़ी निकली। उसमें जरी के चंदोवे के भीतर स्वयं अमीर बड़े आराम से लेटे हुए थे। यह दृश्य देखते ही भीड़ में सरसराहट-सी फैल गई। अमीर के निर्देशानुसार सभी लोग जमीन पर लेट गए।

अमीर का आदेश था कि स्वामीभक्त जनता विनम्रता एवं सभ्यतापूर्वक आए व कभी-भी ऊंची नजर से न देखे।

नौकर दौड़-दौड़कर सवारी के सामने कालीन बिछा रहे थे। गाड़ी के एक ओर चंवर डुलाने वाला अपने कंधे पर घोड़े के बालों की पूंछ का चंवर रखे चल रहा था। दूसरी ओर अमीर का हुक्के वाला था, जो बड़ी विनम्रता व आत्मविश्वास के साथ सोने का तुर्की हुक्का लिए सवारी के साथ-साथ चल रहा था। जुलूस में सबसे पीछे पीतल के कन्टोप पहने, हाथों में नंगी तलवारें, भाले व तीर कमान लिए सिपाही चल रहे थे। सबसे पीछे दो तोपें थीं।

दोपहर का सूरज चमक रहा था।

एक ओर यह शाही आनबान थी तो दूसरी ओर गरीबी से जूझते, फटेहाल वे लोग थे, जो अपनी-अपनी फरियादें लेकर वहां आए थे।

अमीर का शानदार जुलूस जब जाहिल, गन्दे, दबे-पिसे और फटेहाल लोगों के विशाल समूह के बीच से गुजरा तो ऐसा लगा, जैसे गन्दे चिथड़े में सोने का पतला धागा डाल दिया गया हो।

एक तख्त पर जहां अमीर को आकर बैठना था, वहां पहरेदार तैनात थे। तख्त के एक ओर जल्लाद, मुहर्रिर आदि बैठे थे।

जिन लोगों ने पहले अमीर को नहीं देखा था, उन्हें अमीर को देखकर काफी निराशा हुई। जिस सूरत की उपमा चांद से की जाती थी, वह किसी पिलपिले खरबूजे के समान दिखाई दे रही थी।

अपने मंत्रियों का सहारा लेकर अमीर गाड़ी से उतरे और रत्नजड़ित सिंहासन पर जा बैठे। मुल्ला नसरुद्दीन ने देखा कि अमीर का वह शरीर जिसकी उपमा दरबारी शायर वृक्ष की किसी नाजुक डाली से करते हैं, वह मोटा, थुलथुल और भारी-भरकम था। अमीर की बांहें छोटी थीं। उसके पैर ऐसे टेढ़े-मेढ़े थे कि शाही पोशाक भी उसके उस ऐब को ढंक नहीं पा रही थी।

मंत्री लोग अमीर के दाईं ओर खड़े हो गए, लिपिक आदि बाईं ओर। वे अपनी बहियां, कलम व दवातें संभाल रहे थे।

अमीर तख्त पर बैठते ही किसी नशेड़ी की तरह आंखें मूंदकर पसर गया।

अमीर ने फुसफुसाकर कुछ कहा, वजीरे आजम बख्तियार ने उसे सुना, फिर कार्यवाही शुरू करने का इशारा किया।

सबसे पहले गंजा और दढ़ियल भाई घुटनों के बल चलते हुए तख्त के सामने आए और बड़ी श्रद्धा से उन्होंने तख्त के कालीन को चूमा, फिर सिर झुकाकर बैठ गए। नजरें धरती में गड़ी थीं।

'उठो।' प्रधानमंत्री बख्तियार का भारी स्वर गूंजा।

दोनों भाई उठकर खड़े हो गए। वे काफी सहमे हुए-से दिखाई दे रहे थे। जिन्दगी में शायद पहली बार दरबार के सामने हाजिर हुए थे। उनकी इतनी हिम्मत भी नहीं हो रही थी कि अपने कपड़ों पर लगी धूल भी झाड़ सकें। वे बोल रहे थे, मगर भय के कारण उनके हलक से आवाज भी ढंग से नहीं निकल पा रही थी। हालांकि उनकी आवाज बहुत ही दबी और घुटी हुई थी, फिर भी प्रधानमंत्री बख्तियार ने समझ लिया कि आखिर मामला क्या है?

उसने पूछा—'कहां है तुम्हारा बकरा?'

यह सुनकर गंजा हकलाया—'ऐ खानदानी वजीर...वह तो अल्लाह को प्यारा हो गया। ऐ रहमदिल वजीर! अब हमारा फैसला करें कि बकरे की खाल किसे मिलनी चाहिए?'

यह सुनकर वजीर अमीर की ओर पलटा—'ऐ शाहों में सबसे ज्यादा जहीन अमीर! इस विवाद में आप क्या फैसला देते हैं?'

अमीर ने जम्हाई ली और आंखें मूंदकर गर्दन कंधे पर टिका ली। उसने तो जैसे वजीर की बात सुनी ही नहीं, मगर वजीर भी पूरा छंटा हुआ मक्कार था। उसने उसके चेहरे के पास सिर झुकाया, ठीक इस प्रकार मानो अमीर उसके कान में कुछ कह रहा हो, फिर बोला—'ओह मेरे आका! फैसला तो आपके

चेहरे पर स्पष्ट झलक रहा है।' कहकर वह दोनों भाइयों की ओर पलटा—'सुनो, गौर से सुनो! हमारे महामहीम अमीर ने हम पर निर्णय करने का रहमोकरम किया है, अगर बकरा खुदा को प्यारा हो गया है तो इंसाफ यही कहता है कि उसका चमड़ा इस संसार में खुदा के जां-नशीन खलीफा हमारे अमीर के पास रहना चाहिए, इसलिए बकरे की खाल को साफ करवाकर शाही मालखाने में जमा करा दिया जाए।'

सुनते ही दोनों भाई सिटपिटाए। यह क्या हुआ, न बकरा मिला और न बकरे की खाल! खाल की साफ कराई का खर्चा और सिर पर पड़ गया। भीड़ में सरगोशियां सुनाई देने लगीं, जबकि एक पल रुककर वजीर ने पुनः कहा—'इसके अलावा दोनों फरियादियों को दो सौ तंके न्याय शुल्क, डेढ़ सौ तंके महल शुल्क और पचास तंके लिपिक शुल्क देने होंगे तथा मस्जिद के लिए चंदा भी देना होगा। यह सब नकद अथवा जायदाद के रूप में वसूल किया जाएगा।'

यह फैसला होते ही दरबार के कवि-कव्वाल अमीर की शान में गीत गाने लगे।

और वे दोनों भाई एक-दूसरे के गले में बांहें डालकर फूट-फूटकर रो रहे थे। मुल्ला नसरुद्दीन उनके करीब पहुंचा और सांत्वना देते हुए बोला—'कोई बात नहीं भाइयों, यह तो ऊपर वाले का शुक्र है कि हफ्तों इन्तजार का तुम्हारा वक्त जाया नहीं गया। अमीर ने बड़ी दयानतदारी से तुम्हारा इंसाफ किया है। यह बात तो बुखारा का हरेक आदमी जानता है कि इस दुनिया में हमारे अमीर से बढ़कर कोई भी कृपालू व विद्वान न्यायाधीश नहीं है। अब तुम दोनों भाई अपने-अपने घरों को जाओ और भविष्य में अगर फिर कभी किसी कुत्ते, बिल्ली या मुर्गे को लेकर तुम्हारा फसाद हो तो फिर अमीर की अदालत में आना और हां...आने से पहले अपने खेत-खलिहान और मकान आदि बेचना न भूलना, वरना तुम लोग शाही कर अदा नहीं कर पाओगे।'

'इससे तो बेहतर था कि हम भी अल्लाह को प्यारे हो जाते।' एक भाई बोला।

'हाय कमवख्ती! आखिर हमने झगड़ा किया ही क्यों!' दूसरा भी विलाप करने लगा। फिर दोनों भाई रोते-बिलखते और अपनी दाढ़ियां नोचते वहां से चले गए।

अब लोहार को अमीर के सामने पेश किया गया। वजीर ने उसकी शिकायत सुनी, फिर अमीर की ओर पलटा—'आपका क्या फैसला है मेरे मालिक?'

अमीर गफलत की नींद सो रहा था, अब तो उसके खर्राटे गूंजने लगे थे।

'आह...आह!' महामक्कार वजीर बख्तियार ने अपने दोनों हाथ फैलाए—'ए मेरे आका! फैसला तो आपके इस नूरानी चेहरे पर लिखा है।'

कहकर वह पलटा और अपनी नजरें उपस्थित जनसमूह पर डालकर बड़े ही रोबीले अंदाज में बोला—'हमारे रहनुमा और दयावान अमीर ने लोहार टोले पर सिपाहियों के खाने-पीने की व्यवस्था का भार सौंपकर उन पर बड़ा उपकार किया है। लोहार टोले के लिए यह बड़े सम्मान की बात है, इसके बावजूद इस लोहार ने यहां शिकायत पेश करके बड़ा भारी अपराध किया है, इसलिए हमारे अमीर ने बहुत दयावान होकर यूसुफ लोहार को दो सौ कोड़ों की सजा दी है। इससे इसे पछतावा होगा कि इसने इस नेक काम की शिकायत की, तो क्यों की? इसके अलावा पच्चीस सिपाही और लोहार टोले पर भेजे जाते हैं ताकि वे लोग अमीर के रहमोकरम व विद्वता की प्रशंसा करने से न चूकें। अल्लाहताला हमारे अमीर आका को लम्बी उम्र बख्शे ताकि वे जिन्दगी भर अपनी प्रजा की खिदमत करते रहें।'

वजीर बख्तियार के खामोश होते ही साज बज उठे और कव्वाल अमीर की तारीफ के गीत गाने लगे। सिपाही यूसुफ लोहार को पकड़कर जल्लादों के करीब ले गए जो अब तक अपने कोड़े फटकार रहे थे। लोहार पेट के बल चटाई पर लेट गया और जल्लाद उसकी नंगी पीठ पर कोड़े बरसाने लगे—'सटाक, सटाक, सटाक।'

कुछ ही देर में लोहार की पीठ की खाल की धज्जियां उड़ गईं। उसकी पीठ पर हड्डियां-ही-हड्डियां नजर आने लगीं। आसपास खड़े लोग आतंक से जड़ हो गए, लेकिन लोहार भी अपनी किस्म का इकलौता शख्स था। वह न चीख रहा था, न चिल्ला रहा था, जब वह उठा तो उसके होंठों से काला फेन बह रहा था।

आसपास खड़े लोगों में मुल्ला नसरुद्दीन भी था जो अपने करीब खड़े एक रंगसाज से कह रहा था—'रंगसाज! तुम किस बात का इंतजार कर रहे हो, अब तुम्हारा भी नम्बर आने वाला है, तुम भी तो अमीर से कोई शिकायत करने वाले हो न...उसके हुक्म से ऐसी ही खिदमत तुम्हारी भी होगी।'

रंगसाज ने जोरों से थूक गटका। उसकी आंखों में आतंक और खौफ के साए लहरा रहे थे। उसने एक नजर मुल्ला नसरुद्दीन पर डाली, फिर एक नजर जल्लादों को देखा, अगले ही पल वह पलटा और भीड़ को चीरता हुआ वहां से नौ दो ग्यारह हो गया।

उधर—

प्रधानमंत्री बख्तियार तेजी से मामले निपटा रहा था। न्याय-अन्याय से उसे कोई सरोकार नहीं था, उसका तो एक ही उद्देश्य था कि किसी भी प्रकार अमीर के खजाने में अधिक-से-अधिक धन आए। उधर जल्लाद अपने काम में मशरूफ थे। उनके एक ओर सजा पाने वालों की कतार लग गई थी, जिनमें बच्चे, बूढ़े और औरतें सभी थे। हंटरों की सटाक, सटाक की आवाज और

चीख-चिल्लाहट का क्रम बदस्तूर जारी था। सजा मिलने वालों की हालत देखकर बाकी लोग दहशत से कांप रहे थे।

सजा पाने वालों में एक दस वर्ष का बच्चा भी था, जिसे इस कारण कोड़ों की सजा दी गई, कि उसने अमीर के महल के सामने वाली जमीन को अवैध रूप से गीला कर दिया था। सजा पाने वाले अपराधियों की हालत देखकर उस मासूम की रूह फना हो रही थी। वह कांप रहा था, रो रहा था। आंसुओं से उसका भोला-भाला चेहरा तर हो चुका था। उसकी हालत देखकर मुल्ला नसरुद्दीन के चेहरे पर क्रोध एवं रहम के मिले-जुले भाव दिखाई देने लगे। एकाएक ही वह जोर से बोला—'वास्तव में यह बच्चा बड़ा ही खतरनाक है। ऐसे अपराधियों को सुधारने में अमीर ने जिस काबिलियत का परिचय दिया है, वह काबिले तारीफ है। इस तरह के अपराधी काफी खतरनाक होते हैं क्योंकि ये अपने मासूम चेहरे से अपने इंकलाबी विचारों को जाहिर नहीं होने देते। इसक अलावा मैंने एक बाल अपराधी और भी देखा था जो केवल चार साल का था। उसने इससे भी ज्यादा खतरनाक काम किया था कि अमीर के महल की दीवार के ठीक नीचे गंदगी फैला दी थी। ऐसे अक्षम्य अपराधों के लिए तो मृत्युदण्ड भी कम है। अपराधी को सजा देने में उम्र कोई बहाना नहीं है। हमारे बुखारा में तो बुराइयां इस कदर खतरनाक होकर उभर रही हैं कि उनके विषय में सुनकर ही दिल खौल जाता है। मगर खैर, मेरा दिल कहता है कि ये तमाम बुराइयां अमीर के सिपाही और जल्लादों की कोशिशों के मद्देनजर जल्दी ही खत्म हो जाएंगी।'

मुल्ला नसरुद्दीन इस प्रकार बोलता जा रहा था मानो कोई मुल्ला मजहबी पैगाम दे रहा हो। उसकी बातें सुनने में तो अमीर के हक में लग रही थीं, मगर जो लोग उन बातों की गहराई को समझ रहे थे, वे जानते थे कि मुल्ला के वे व्यंग्य किसके लिए हैं? वे अपनी गर्दन फेरकर मुस्करा रहे थे। कुछ लोग यह भी समझ चुके थे कि ये मुल्ला नसरुद्दीन ही है।

मुल्ला ने कसम दोहराई

अदालत की कार्यवाही अभी चल ही रही थी कि एक ओर से कुछ सिपाही आते दिखाई दिए। उन्हें आते देखकर लोग इधर-उधर होने लगे। मुल्ला नसरुद्दीन ने सोचा कि कहीं ये जालिम मेरी फिराक में ही तो इधर नहीं आए? मगर तभी उसकी नजर कुबड़े सूदखोर जाफर पर पड़ी।

उसके पीछे-पीछे एक दुबला-पतला बूढ़ा लाठी टेकता चला आ रहा था। उसके साथ उसकी बुरकापोश लड़की भी थी। वह बूढ़ा मिट्टी में लिपटा हुआ था।

मुल्ला नसरुद्दीन से कुछ ही दूरी पर सूदखोर जाफर रुक गया और बिजली

के नन्हें बल्ब की मानिंद चमकती अपनी इकलौती आंख से वहां मौजूद भीड़ को घूरते हुए चिल्लाया—'ज़रा जाकिर, अहमद, चिश्ती कहां गए सब? अभी तो यहीं थे..अरे इस प्रकार छिप जाने से कर्ज माफ नहीं होगा।' फिर अपने आपमें ही बड़बड़ाता, लंगड़ाता हुआ आगे बढ़ने लगा।

उसके आगे बढ़ते ही लोगों में सरगोशियां होने लगीं—'अरे देखो! यह कुबड़ा नयाज कुम्हार और उसकी बेटी को भी अदालत में खींच लाया। सत्यानाश हो इस मरदूद का।'

'बेचारे कुम्हार को इसने एक दिन की भी मोहलत नहीं दी।'

'अल्लाह इसे गारत करे, मुझे भी पन्द्रह दिन बाद इसका कर्ज चुकाना है।'

'अरे देखा तुमने! इसे देखकर लोग इस प्रकार छिप जाते हैं, जैसे छूत की बीमारी चली आ रही हो।'

'दुनिया गर्क हो रही है, मगर इसे न जाने क्यों मौत नहीं आती।' एक व्यक्ति बड़े ही दुःखी अंदाज में बोला—'अच्छा भला तालाब में गर्क हो रहा था, न जाने किस भले आदमी ने बचा लिया।'

मुल्ला नसरुद्दीन के चेहरे पर शर्मिन्दगी के भाव उभर आए। उसीने तो बचाया था, उस नामुराद को। दुःख और पीड़ा के कारण उसका दिल जलने लगा और पुनः उसने अपनी कसम दोहराई—'मैं इसे उसी तालाब में डुबोकर दम लूंगा।'

मौके की नजाकत

वजीरे खास बख्तियार ने सूदखोर जाफर को सबसे पहले और बड़े सम्मान से बुलाकर अपनी बात रखने का मौका दिया। सूदखोर ने उसे बताया कि नयाज कुम्हार को आज सुबह तक कर्ज अदा करना था, मगर उसने अभी तक कुछ नहीं दिया।

पूरी दास्तान सुनने के बाद वजीर ने अमीर के चेहरे की ओर देखा, वह आलसी अभी भी उसी प्रकार गफलत में सो रहा था। वजीर बोला—'ऐ न्यायप्रिय अमीर! मुझे वह फैसला सुनाने की आज्ञा दीजिए जो मैं आपके चेहरे पर लिखा देख रहा हूं।'

फिर वह नयाज कुम्हार की तरफ पलटा—'यहां के कानून के अनुसार जो भी व्यक्ति ठीक समय पर अपना कर्ज नहीं चुकाता, वह उस समय तक कर्ज देने वाले की गुलामी करेगा, जब तक कि अपना कर्ज व गुलामी के समय का खर्च न चुका दे।'

फैसला सुनते ही नयाज कुम्हार का सिर झुक गया। भय और आशंका ने उसे कांपने पर विवश कर दिया। यह अन्यायपूर्ण फैसला सुनकर लोगों के हलक

से ठंडी सांस निकली। अपने चेहरे के भावों को छिपाने के लिए उन्होंने चेहरे घुमा लिए।

कुम्हार की लड़की के हलक से सिसकियां उबल पड़ीं। उन महीन और बारीक सिसकियों को सुनकर मुल्ला नसरुद्दीन के दिल पर घूंसा-सा लगा और एक बार फिर उसने अपनी प्रतिज्ञा दोहराई—'बेरहम सूदखोर! तुझे उसी तालाब में डुबाकर मारूंगा।'

कुछ क्षणों बाद बख्तियार पुनः ऊंची आवाज में बोला—'जैसा कि आप सभी लोग जानते हैं कि हमारे अमीर बड़े ही रहम दिल और न्याय पसंद हैं। उनका कहना है कि कुम्हार को कर्ज चुकाने के लिए एक घंटे की मोहलत और दी जाती है। यदि वह एक घंटे में कर्ज नहीं चुका पाता है तो उसके साथ कानूनी कार्यवाही की जाएगी।'

इधर बख्तियार यह ऐलान करके चुप हुआ और उधर चापलूस दरबारी और शायर अमीर की खुशामद में गीत गाने लगे। एकाएक ही काफी शोरगुल उत्पन्न हो गया जिसके कारण अमीर की आंख खुल गई और उसने सबको शान्त होने का हुक्म दिया। अमीर का हुक्म होते ही वहां सन्नाटा छा गया, लेकिन यह सन्नाटा अधिक देर तक न रह सका। कुछ ही क्षण गुजरे थे कि मुल्ला नसरुद्दीन का गधा इतनी जोर से रेंका कि उसकी कर्णभेदी आवाज सुनकर अमीर को भी अपने क़ानों पर हाथ रख लेने पड़े। गधा अपनी थूथनी को ऊपर की ओर उठाकर अपने पीले दांत चमकाता हुआ बुरी तरह रेंक रहा था। कुछ लोग तो इस तरह डरकर भागे कि वहां भगदड़-सी मच गई। सिपाही भीड़ को काबू करने के लिए भीड़ पर टूट पड़े। मुल्ला नसरुद्दीन ने मौके की नजाकत को समझा और अपने गधे को लेकर भीड़ को चीरता हुआ तेजी से एक ओर भाग निकला। वह उस अड़ियल गधे को घसीटता जाता और बुरी तरह कोसता जाता था—

'अबे लानत है तुझ पर! बड़ा खुश हो रहा है आज तू। अबे क्या तू दिल-ही-दिल में नहीं कर सकता था अमीर की तारीफ? क्या तू भी अमीर की चापलूसी के गीत गाकर उसका दरबारी बनना चाहता है?'

जिसने भी मुल्ला नसरुद्दीन की इस बात को सुना, ठहाका लगाकर हंस पड़ा। नसरुद्दीन को आसानी से रास्ता मिल रहा था, मगर अमीर के सिपाही भीड़ होने के कारण लाख कोशिशें करने पर भी मुल्ला नसरुद्दीन तक नहीं पहुंच पा रहे थे। मुल्ला नसरुद्दीन भीड़ से बाहर निकलते ही अपने गधे की पीठ पर सवार हुआ और ऐड़ लगाकर उसे सरपट दौड़ा दिया।

मुल्ला नसरुद्दीन का नसीब अच्छा था जो सिपाही उस तक न पहुंच पाए अन्यथा शान्ति भंग करने के जुर्म में उस पर न केवल बेहिसाब कोड़े बरसते, बल्कि उसका गधा भी हमेशा के लिए उससे छीन लिया जाता।

नेकी कर और जूते खा

नयाज कुम्हार, उसकी बेटी गुलजान और सूदखोर जाफर, अमीर की अदालत से कुछ दूर आकर तन्हाई में एक पेड़ के नीचे रुक गए। नयाज कुम्हार बड़ा ही सहमा हुआ और दुःखी दिखाई दे रहा था। उसकी आंखें नम थीं जबकि सूदखोर जाफर के चेहरे पर विजयी चमक दिखाई दे रही थी। वृक्ष के नीचे रुककर उसने गुलजान को सम्बोधित किया—'ऐ मेरे ख्वाबों की मलिका! ऐ प्यारी गुलजान! एक घंटा बीतना भी क्या बीतना, अब तक तेरा बाप मेरा कर्ज नहीं चुका पाया तो भला एक घंटे में कौन-सा करिश्मा हो जाएगा? लिहाजा अब तू अपने आपको मेरे कब्जे में समझ, क्योंकि अमीर का फैसला मेरे हक में हुआ है। मैं तेरा आशिक हूं, तेरे हुस्न की एक झलक ने ही मुझे तेरा दीवाना बना दिया है। ऐ हसीना! अब तो तेरे बिना एक पल भी गुजारना मेरे लिए भारी है। अब से ठीक एक घंटे बाद तू मेरे घर आ जाएगी। अगर तू मेरे मन-मुताबिक चलेगी तो तू राज भी करेगी और मैं तेरे बाप के साथ भी अच्छा बर्ताव करूंगा। इसे बढ़िया कपड़े और बढ़िया खाना दूंगा, अगर तूने मेरी भावनाओं को ठेस पहुंचाई या मेरे प्यार का जवाब प्यार से न दिया तो मैं तेरे बाप से इतना सख्त काम लूंगा कि उसकी रूह तक कांप उठेगी। मैं इसे खीवा में बेच दूंगा। ये तू अच्छी तरह जानती है कि वहां गुलामों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है इसलिए मेरी प्यारी गुलाजन! इस मदमाते रूप यौवन को तू मेरे हवाले कर दे।'

सूदखोर ने जैसे ही उसके नकाब को छूना चाहा, वैसे ही गुलजान ने उसका हाथ झटक दिया। इस छेड़छाड़ में गुलजान की एक झलक मुल्ला नसरुद्दीन को भी मिल गई जो अपने गधे पर सवार सामने की ओर से चला आ रहा था। उसके रूप यौवन की एक झलक पाकर मुल्ला नसरुद्दीन अपनी सुध-बुध खो बैठा। उसे लगा मानो उसने दुनिया की पहली-आखिरी हसीन औरत देख ली हो और अब उसके लिए दुनिया में कुछ बचा ही न हो।

सूदखोर को देखकर अनायास ही उसके मुंह से निकला—'या अल्लाह! ये कुबड़ा, ये गलीज, काणा, ये लंगड़ा सुअर इस हसीना के पाक दामन को मैला करना चाहता है। ये तो इसका ऐसा गुनाह है जिसके लिए सजाए मौत भी कम है। लानत है मुझ पर जो मैंने इस गंदे आदमी को डूबने से बचाया। ये तो नेकी कर और जूते खा वाली बात हो गई। खैर, कोई बात नहीं, गंदे सुअर! तुझे भी भुगतूंगा। साले गलीज! अब तू नयाज कुम्हार की बेटी को छू भी नहीं पाएगा। अबे जलील! एक घंटे में तो दुनिया उलट-पुलट जाती है, बादशाहत बदल जाती है। मैं एक घंटे में ऐसा करिश्मा करके दिखाऊंगा, जो दूसरा कोई एक साल में भी नहीं कर सकता है।'

बड़बड़ाते हुए उसने पुनः सूदखोर की तरफ देखा, वह कह रहा था—'ऐ

नयाज! एक घंटे के बाद अपनी बेटी के साथ इसी पेड़ के नीचे मिलना। ठीक एक घंटे बाद मैं तुमसे यहां आकर मिलूंगा। छिपने या भागने की कोशिश मत करना, मैं तुम्हें सागर की गहराइयों से भी निकालने की कुव्वत रखता हूं। और हां गुलजान! इस बात को एक बार फिर ठीक से समझ लो कि तुम्हारे वालिद की बाकी जिन्दगी तुम्हारी समझदारी पर ही टिकी हुई है।'

यह कहकर सूदखोर गुलजान के ख्यालों में डूबा एक ओर चल दिया।

बूढ़ा कुम्हार और उसकी बेटी थककर वृक्ष के नीचे ही बैठ गए। नयाज कुम्हार की आंखों में चिन्ता के साए लहरा रहे थे।

तंको का बंदोबस्त

सूदखोर जाफर गुलजान और नयाज कुम्हार से अभी कुछ ही दूर गया था कि मुल्ला नसरुद्दीन उन दोनों के पास आ पहुंचा और बोला—'बुजुर्गवार! अमीर की अदालत में मैंने तुम्हारा मुकदमा भली-भांति सुना। मुझे बड़ा दुःख है कि तुम लोग इस समय बड़ी मुसीबत में हो। ऐ मेरे बुजुर्ग! मुझसे जो हो सकेगा, तुम्हारी मदद करूंगा। अल्लाह पर भरोसा रखो, वह बड़ा करिश्मासाज है।'

नयाज कुम्हार ने एक नजर ऊपर से नीचे तक मुल्ला नसरुद्दीन को देखा, फिर उसके चेहरे पर दिखाई देती निराशा में वृद्धि होती चली गई।

वह बोला—'ऐ भले मुसाफिर! तुम्हारे कपड़ों पर लगे पैवन्द तुम्हारी कहानी खुद कह रहे हैं, इन्हें देखकर मैं कैसे विश्वास करूं कि तुम इस बुरे वक्त में मेरी मदद करोगे। मेरा कर्जा कोई छोटा-मोटा नहीं है बेटे! पूरे चार सौ तंकों की जरूरत है मुझे। मेरे तो सारे मित्र और सगे-सम्बंधी भी गरीब हैं जो कि सूदखोर के सताए हुए हैं। कोई भी रईस मेरा मित्र नहीं है जो इस मौके पर मेरी मदद करे।'

'सुनो मेरे आदरणीय बुजुर्ग! बुखारा के रईसों से तो मेरी भी कोई दोस्ती नहीं है, मगर फिर भी मैं पूरी कोशिश करूंगा कि तुम्हारे गमों को दूर कर सकूं।'

'नहीं।' नयाज कुम्हार ने निराशा से इंकार में सिर हिलाया—'नहीं, तुम मेरी मदद नहीं कर सकते अजनबी, भला एक घंटे में चार सौ तंके तुम कहां से जुटाओगे! ऐसी अनहोनी की उम्मीद तो सिर्फ मुल्ला नसरुद्दीन से ही की जा सकती है।'

'ऐ अजनबी!' इस बार गुलजान का सिसकियों से लबरेज स्वर उभरा—'खुदा के वास्ते हमें इस जालिम सूदखोर के कहर से बचा लो। हम जीवन भर तुम्हारा अहसान नहीं भूलेंगे।'

मुल्ला नसरुद्दीन ने देखा कि सिसकती गुलजान का मदमाता यौवन उसकी फटी-पुरानी पोशाक से बाहर निकलने को बेताब है, लेकिन उसके चेहरे पर

नयाज! एक घंटे के बाद अपनी बेटी के साथ इसी पेड़ के नीचे मिलना। ठीक एक घंटे बाद मैं तुमसे यहां आकर मिलूंगा। छिपने या भागने की कोशिश मत करना, मैं तुम्हें सागर की गहराइयों से भी निकालने की कुव्वत रखता हूं। और हां गुलजान! इस बात को एक बार फिर ठीक से समझ लो कि तुम्हारे वालिद की बाकी जिन्दगी तुम्हारी समझदारी पर ही टिकी हुई है।'

यह कहकर सूदखोर गुलजान के ख्यालों में डूबा एक ओर चल दिया।

बूढ़ा कुम्हार और उसकी बेटी थककर वृक्ष के नीचे ही बैठ गए। नयाज कुम्हार की आंखों में चिन्ता के साए लहरा रहे थे।

तंको का बंदोबस्त

सूदखोर जाफर गुलजान और नयाज कुम्हार से अभी कुछ ही दूर गया था कि मुल्ला नसरुद्दीन उन दोनों के पास आ पहुंचा और बोला—'बुजुर्गवार! अमीर की अदालत में मैंने तुम्हारा मुकदमा भली-भांति सुना। मुझे बड़ा दुःख है कि तुम लोग इस समय बड़ी मुसीबत में हो। ऐ मेरे बुजुर्ग! मुझसे जो हो सकेगा, तुम्हारी मदद करूंगा। अल्लाह पर भरोसा रखो, वह बड़ा करिश्मासाज है।'

नयाज कुम्हार ने एक नजर ऊपर से नीचे तक मुल्ला नसरुद्दीन को देखा, फिर उसके चेहरे पर दिखाई देती निराशा में वृद्धि होती चली गई।

वह बोला—'ऐ भले मुसाफिर! तुम्हारे कपड़ों पर लगे पैवन्द तुम्हारी कहानी खुद कह रहे हैं, इन्हें देखकर मैं कैसे विश्वास करूं कि तुम इस बुरे वक्त में मेरी मदद करोगे। मेरा कर्जा कोई छोटा-मोटा नहीं है बेटे! पूरे चार सौ तंकों की जरूरत है मुझे। मेरे तो सारे मित्र और सगे-सम्बंधी भी गरीब हैं जो कि सूदखोर के सताए हुए हैं। कोई भी रईस मेरा मित्र नहीं है जो इस मौके पर मेरी मदद करे।'

'सुनो मेरे आदरणीय बुजुर्ग! बुखारा के रईसों से तो मेरी भी कोई दोस्ती नहीं है, मगर फिर भी मैं पूरी कोशिश करूंगा कि तुम्हारे गमों को दूर कर सकूं।'

'नहीं।' नयाज कुम्हार ने निराशा से इंकार में सिर हिलाया—'नहीं, तुम मेरी मदद नहीं कर सकते अजनबी, भला एक घंटे में चार सौ तंके तुम कहां से जुटाओगे! ऐसी अनहोनी की उम्मीद तो सिर्फ मुल्ला नसरुद्दीन से ही की जा सकती है।'

'ऐ अजनबी!' इस बार गुलजान का सिसकियों से लबरेज स्वर उभरा—'खुदा के वास्ते हमें इस जालिम सूदखोर के कहर से बचा लो। हम जीवन भर तुम्हारा अहसान नहीं भूलेंगे।'

मुल्ला नसरुद्दीन ने देखा कि सिसकती गुलजान का मदमाता यौवन उसकी फटी-पुरानी पोशाक से बाहर निकलने को बेताब है, लेकिन उसके चेहरे पर

बड़ी-ही मुकद्दस मासूमियत थी। गुलजान ने भी नकाब हटाकर मुल्ला नसरुद्दीन की तरफ देखा था। न जाने क्यों उसे विश्वास था कि यह अजनबी उनके लिए कुछ-न-कुछ अवश्य करेगा, जबकि उससे नजर मिलते ही मुल्ला नसरुद्दीन ने अपने आपमें एक अजीब-सी बेचैनी महसूस की।

फिर एक भी पल जाया किए बिना उसने नयाज कुम्हार से कहा—'आप यहीं बैठकर मेरे आने का इन्तजार कीजिए। मैं सूदखोर के आने से पहले ही चार सौ तंकों का बंदोबस्त करके लौट आऊंगा।' कहकर मुल्ला नसरुद्दीन तेजी से अपने गधे पर सवार हुआ और उसे ऐसी ऐड़ लगाई कि गधा कमान से निकले तीर की भांति बाजार की ओर दौड़ता चला गया।

प्रतिभाशाली गधा

बाजार में आकर मुल्ला नसरुद्दीन एक ऐसे चायखाने में जा घुसा जो लोगों से खचाखच भरा हुआ था। उसमें रेशमी गद्दे व कालीन बिछे हुए थे। उसने अपने गधे को खूंटे से बाहर नहीं बांधा, बल्कि चायखाने में ही लेकर घुस आया। वहां मौजूद लोग आश्चर्य से उसे देखने लगे। कुछ लोगों ने नाक-मुंह भी सिकोड़ा कि कैसा बेहूदा आदमी है, जो गधे को ही अन्दर ले आया।

मुल्ला नसरुद्दीन ने जीन के झोले से वह कुरान शरीफ निकाली, जो कुछ दिन पूर्व एक बूढ़े ने उसे दी थी। उसने कुरान शरीफ गधे के आगे रख दी। यह कार्य उसने पूरे आत्मविश्वास और गम्भीरता से किया, जैसे वह बड़ा ही स्वाभाविक हो। चायखाने में मौजूद लोग आश्चर्य और उत्सुकता से एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे।

गधा चायखाने में लकड़ी के फर्श पर अपना खुर पटकने लगा।

'अरे! इतनी जल्दी!' मुल्ला नसरुद्दीन कुरान का पन्ना पलटते हुए बोला—'तू तो जरूरत से ज्यादा समझदार हो गया है, दिन दूनी, रात चौगुनी तरक्की कर रहा है बेटा।'

यह देखकर चायखाने का तुंदियल मालिक फौरन उठकर उसके पास आया और बोला—'सुन, ऐ भले मानुष! क्या तुझे यह जगह गधे के लाने के लायक दिखाई देती है? और तूने यह धार्मिक ग्रंथ खोलकर इसके सामने क्यों रखा है?'

'मेरे दोस्त! मैं इस गधे को धर्मज्ञान सिखा रहा हूं।' मुल्ला नसरुद्दीन ने बड़े ही आत्मविश्वास से कहा—'हमारा कुरान शरीफ का सबक पूरा होने वाला है, अब शीघ्र ही इसे शरीअत (धर्म कानून) भी पढ़ाया जाएगा।'

चाय वाले की आंखें फटी और मुंह खुला-का-खुला रह गया। ऐसा अजूबा उसने जीवन में आज से पहले कभी नहीं देखा था। अन्य लोगों में भी कानाफूसी और भनभनाहट होने लगी। इस अजूबे को देखने और समझने के लिए बहुत-से लोग उठकर खड़े हो गए।

गधे ने एक बार पुनः खुर पटका।

'बहुत खूब! बहुत खूब!' मुल्ला नसरुद्दीन ने पुनः पन्ना पलटा—'मेरे बेटे! बस थोड़ी सी कसर रह गई है, तू जरूर अरबी मदरसे में उस्ताद बनने के काबिल हो जाएगा।' फिर वह तमाशबीनों की तरफ पलटा—'बस, इसके साथ यही कमी है कि यह किताब के पन्ने नहीं पलट सकता, इस काम में इसे किसी-न-किसी की मदद चाहिए। ऊपर वाले ने इसे बड़ा ही जहीन बनाकर भेजा है। जनाबे आली! इसकी याददाश्त तो कमाल की है। अल्लाह से बड़ी गलती हुई, जो इसे उंगलियां न बख्शीं।'

देखते-ही-देखते मुल्ला नसरुद्दीन के चारों ओर अच्छी-खासी भीड़ जमा हो गई।

अब मुल्ला नसरुद्दीन अपनी असलियत पर आ गया। समय कम था और उसे अभी काफी काम करना था।

वह बोला—'साहेबान! यह कोई साधारण गधा नहीं, बल्कि शाही गधा है। हमारे अमीर का गधा है। एक रोज अमीर ने मुझे अपने पास बुलाकर कहा कि क्या तुम हमारे गधे को दीनियात सिखा सकते हो, ताकि यह हमारे जैसा अक्लमंद हो जाए? मैंने गधे का दिमागी मुआइना करके कहा कि ऐ सम्मानित अमीर! यह गधा उतना ही तेज दिमाग और प्रतिभाशाली है, जितने कि आपके अन्य दरबारी या आप। मैं इसे धर्मज्ञान (दीनियात) सीखाने का बीड़ा उठाता हूं और दावे से कह सकता हूं कि यह उतना ही विद्वान हो जाएगा जितने कि आप खुद हैं, और हो सकता है कि यह आपसे भी आगे निकल जाए, मगर इसके लिए बीस साल का लम्बा समय लग जाएगा। बस, यह सुनते ही अमीर ने शाही खजाने से मुझे पांच हजार सोने के तंके दिलवाए और कहा कि इसे ले जाओ और पढ़ाओ। यदि बीस साल में तुम इसे दीनियात नहीं सिखा पाए तो तुम्हें सजाए मौत मिलेगी।'

चाय वाला बोला—'तो तुम अपने सिर को अलविदा कह दो। भला किसी ने गधों को भी कहीं कुरान व दीनियात पढ़ते देखा है?'

'अरे भाई, बुखारा में ऐसे बहुत से गधे हैं। मुझे सोने के पांच हजार तंके चाहिए तथा ऐसे समझदार गधे रोजाना तो मिला नहीं करते। तुम मेरा सिर कलम होने की फिक्र न करो मित्र, क्योंकि बीस वर्ष में हममें से एक-न-एक तो खुदा को प्यारा हो ही जाएगा, या तो मैं, या अमीर या ये गधा। तब तक यह ज्ञात करने में काफी देर हो जाएगी कि धर्म-ज्ञान का सर्वोत्तम ज्ञाता कौन है?'

यह जवाब सुनकर पूरा चायखाना ठहाकों से गूंज उठा। चाय वाला तो अपने रेशमी गद्दे पर लोट-पोट ही हो गया—'हा...हा...हा...सबसे बड़ा धर्म ज्ञाता, अरे भाई..।' अचानक उसे न जाने क्या ख्याल आया कि वह एकाएक ही खामोश होकर मुल्ला नसरुद्दीन को घूरने लगा, फिर बोला—'तुम कौन हो?

कहां से आए हो? ऐ धर्मज्ञान सिखाने वाले! कहीं तुम मुल्ला नसरुद्दीन तो नहीं हो?'

दुकान में सन्नाटा छा गया। सभी की सवालिया नजरें मुल्ला नसरुद्दीन के चेहरे पर स्थिर हो गईं।

मुल्ला नसरुद्दीन कुछ पलों तक मुस्कराता हुआ सबके चेहरे देखता रहा, फिर बोला—'तुम्हारा अनुमान बिल्कुल ठीक है दोस्त। मैं मुल्ला नसरुद्दीन ही हूं। बुखारा शरीफ के नागरिकों, मेरा सलाम कबूल कीजिए।'

यह सुनते ही वहां खलबली मच गई। 'मुल्ला नसरुद्दीन...मुल्ला नसरुद्दीन...।'

और...यह बुलन्द आवाज एक चायखाने से दूसरे में, दूसरे से तीसरे में और फिर देखते-ही-देखते यह चर्चा पूरे शहर में फैल गई कि मुल्ला नसरुद्दीन बुखारा में आ चुका है। प्रत्येक स्थान, प्रत्येक गली-कूचे में सिर्फ और सिर्फ एक ही चर्चा थी, मुल्ला नसरुद्दीन की चर्चा।

दूर-दूर के लोग चायखाने में आकर एकत्रित हो गए थे। ताजिक, उजबक, तुर्कमानी, तातर, जर्जियाई। वहां एकत्रित होकर जोर-जोर से चिल्लाकर अपने प्यारे नसरुद्दीन, खुशमिजाज व हास्यप्रिय नसरुद्दीन का स्वागत कर रहे थे। भीड़ बढ़ने के बाद किसी ने एक गट्ठर बढ़िया किस्म की घास गधे के आगे लाकर डाल दी। किसी ने जई का ढेर लगा दिया और किसी ने एक बाल्टी साफ पानी उसके आगे रख दिया।

मुल्ला नसरुद्दीन बाहर चायखाने की बरसाती में आ गया। उसने अपने चाहने वालों को सलाम करके उनका हार्दिक अभिनंदन किया, फिर एक तख्त पर खड़ा होकर बोला—'बुखारा के नागरिकों! मैं आप सबका तहेदिल से स्वागत करता हूं। आप लोगों से मिलकर मेरा मन खुशी से नाच उठा है। हम पूरे दस वर्षों के बाद मिल रहे हैं। मैं जानता हूं कि आपके दिलो-दिमाग में बहुत से सवाल कौंध रहे हैं। ऐ मेरे प्यारे देशवासियों! मैं आपके सवालों के जवाब गीत गा-गाकर देना चाहता हूं।'

कहकर उसने पास ही रखा मिट्टी का एक घड़ा उठा लिया। उसका पानी फेंककर खाली किया और उसे बजा-बजाकर गीत गाने लगा।

मुल्ला नसरुद्दीन ने जबसे होश संभाला था, तब से वह अमीरों, सूदखोर आदि के अत्याचारों को गीतों के रूप में गा-गाकर जनता के सामने रखता था। अपनी कविताओं और गीतों में उसने अमीर और सूदखोरों पर करारे व्यंग्य कसे थे। अंत में वह लोगों से कहता कि जिस प्रकार एक रोज पाप का घड़ा फूटता है, उसी प्रकार अमीर का घमंड भी एक-न-एक दिन अवश्य ही चूर-चूर हो जाएगा और जनता को उसके अत्याचारों से मुक्ति मिलेगी। यह कहकर वह घड़े को धरती पर पटककर चूर-चूर कर देता था।

इस बार भी गीत की समाप्ति पर उसने ऐसा ही किया, फिर जनता से मुखातिब होकर बोला—'दोस्तों! नयाज कुम्हार को सूदखोर और अमीर के बेरहम फैसले से बचाने की कोशिश करनी चाहिए, उसकी मदद करनी चाहिए आप लोग मुल्ला नसरुद्दीन को भली-भांति जानते हैं कि वह सही समय पर लोगों का कर्ज चुका देता है। क्या कोई मुझे कुछ समय के लिए चार सौ तंके दे सकता है?'

यह सुनकर एक भिश्ती तेजी से आगे बढ़ा और बोला—'भाई मुल्ला नसरुद्दीन! हम गरीबों के पास भला इतना धन कहां है। हमारा सारा धन तो भारी-भारी कर चुकाने में ही चला जाता है, लेकिन मेरा यह नया पटका आप ले लो, शायद इससे कुछ मिल जाए।' यह कहकर उसने अपना नया पटका मुल्ला नसरुद्दीन के कदमों में डाल दिया।

इसके साथ ही लोगों में सरगोशियां-सी होने लगीं, फिर...जैसे एकाएक ही सामूहिक आन्दोलन-सा फैल गया। देखते-ही-देखते उसके कदमों में पगड़ी, पटके, रूमाल, जूते और बर्तनों आदि का ढेर लगने लगा। तुंदियल चाय वाले ने भी दो बेहतरीन चायदानियां व तांबे की दो तश्तरियां लाकर उसके कदमों में रख दीं।

देखते-ही-देखते सामान का बड़ा-सा ढेर हो गया।

'बुखारा के नेक व रहमदिल नागरिकों!' मुल्ला नसरुद्दीन बोला—'बस, बस, बहुत सामान हो गया। अब मैं नीलामी शुरू करता हूं—यह रहा भिश्ती का पटका, जो इसे खरीदेगा, उसे प्यास नहीं सताएगी। ये रहे कुछ मरम्मत किए पुराने जूते जो कि मक्का हो आए हैं। इन्हें पहनने वाले को जियारत (तीर्थ यात्रा) का सुख मिलेगा। ये सभी सामान बहुत सस्ते में बिक रहा है, जल्दी करो...'

मुल्ला नसरुद्दीन चिल्ला रहा था, मगर जनता गुमसुम-सी चुपचाप खड़ी थी। अमीर और सूदखोर के अत्याचारों से दु:खी जनता की जेब खाली थी।

जाफर की जूती, जाफर के सिर

चायखाने के बाहर लगी भीड़ को देखकर दूर से आते सूदखोर का माथा ठनका। उसके हाथ में सोने-चांदी के जेवरों से भरा एक झोला था। इस समय वह सरीफ टीले से उगाही करके लौट रहा था और नयाज कुम्हार और गुलजान के पास जाना चाहता था। उसने गुलजान के लिए कुछ जेवर भी खरीदे थे जो उसे नजर करके प्रभावित करना चाहता था।

मुल्ला नसरुद्दीन नीलामी का माल बेचने के लिए बदस्तूर चीख-चिल्ला रहा था। सूदखोर को वहां रुकते देखकर बहुत-से लोग इधर-उधर हो लिए। कारण साफ था कि बुखारा का हर तीसरा आदमी उसका सताया हुआ था। लोग उसकी परछाईं से भी बचना चाहते थे।

इतना सारा माल देखकर सूदखोर को लालच आ गया और उसने सोचा कि औने-पौने दामों में यह माल खरीदकर वह अच्छा मुनाफा कमा सकता है। अतः मुल्ला नसरुद्दीन से मुखातिब होकर वह बोला—'अरे! तुम तो वही हो जिसने कल मुझे पानी में डूबने से बचाया था और मैंने तुम्हें आधा तंका इनाम में दिया था। आज तो तुम यहां व्यापारी बने बैठे हो। इतना माल इतनी जल्दी तुम्हारे हाथ कैसे लगा?'

'ऐ सम्मानित जाफर! यह आपके द्वारा कल दिए गए आधे तंके का ही कमाल है। उसी आधे तंके से जोड़-तोड़ करके मैंने यह व्यापार शुरू किया है।'

'देखा, यह सब कुछ तुम्हें मेरी बदौलत हासिल हुआ है। मेरे आधे तंके से तुम्हें इतना लाभ हुआ, जिसकी कल्पना तुम सपने में भी नहीं कर सकते थे। बोलो, इस सारे माल का क्या लेना पसंद करोगे?' सूदखोर जाफर माल को उलटने-पलटने लगा।

'छः सौ तंके हुजूर—सिर्फ छः सौ तंके।'

'ऐं ऽऽऽ।' सूदखोर जाफर ने आंखें तरेरी—'क्या तुम मुझे अजनबी समझते हो? इस मामूली से माल की इतनी बड़ी रकम। सही-सही बताओ, मेरी-तुम्हारी यह कोई नई मुलाकात नहीं है। मेरी वजह से तुम व्यापारी बने हो और मुझसे ही इतनी रकम मांगते उम्हें शर्म नहीं आ रही। मेरी नजर में तो यह दो सौ तंकों से ज्यादा का माल नहीं है। कहो तो मजदूर को बुलाऊं।'

गुस्सा तो मुल्ला नसरुद्दीन को बहुत आया, लेकिन उसने जरा नरमी से काम लेते हुए कहा—'जाफर साहब! माल तो छः सौ तंके का ही है, लेकिन आपकी मैं दिल से बड़ी इज्जत करता हूं, इसलिए आप सिर्फ पांच सौ ही दे दीजिए।'

'अरे! लगता है जब से तेरे पास आधा तंका आया है, तू आदमी-को-आदमी नहीं समझता। तेरा तो वही हाल है कि चूहे को हल्दी की गांठ क्या मिली कि वह पंसारी बन बैठा। मैंने तेरे जैसा दूसरा कोई अहसान फरामोश नहीं देखा। मत भूल कि आज तू जो कुछ भी है, मेरी बदौलत है।'

अपने प्रति अहसान फरामोश शब्द सुनकर मुल्ला नसरुद्दीन के तन-बदन में आग लग गई।

वह भड़ककर बोला—'अबे सूदखोर! आधा तंका तूने मुझे खैरात में नहीं दिया, मैंने अभी तेरी जान बचाई थी। तू आज मेरी वजह से ही जिन्दा है। मैंने तुझे उस समय बचाया, जब तू जिंदगी और मौत के बीच झूल रहा था और देखने वाले तुझे बद्दुआएं दे रहे थे। अगर मैं तुझे न बचाता तो लोग अब तक तुझे खाक में मिला चुके होते। बता, किसलिए तूने मुझे अहसान फरामोश कहा? अरे भाई! अच्छा माल लेना है तो दाम तो देने ही पड़ेंगे।'

जाफर ने एक बार फिर माल को जांचा-परखा और कहा—'तीन सौ तंके।'

मुल्ला नसरुद्दीन खामोश रहा।

जाफर ने अपनी पारखी नजरों से सारे माल का मूल्यांकन करके हिसाब लगा लिया था कि वह सारा माल सात सौ तंकों से कम का नहीं है।

वह फिर बोला—'साढ़े तीन सौ तंके।'

इस बार मुल्ला नसरुद्दीन बोला—'चलो आपकी इज्जत करता हूं, इसलिए सारा माल चार सौ तंकों में दे दूंगा। ये इसी समय का सौदा है, बाद की कोई गारन्टी नहीं है।'

'पौने चार सौ—।' जाफर अभी भी अपनी हांके जा रहा था।

'चार सौ—वह भी सिर्फ तुम्हारे लिए।'

और इस प्रकार खींचतान करते-करते सौदा चार सौ तंकों में पट ही गया। उसने तंके मुल्ला नसरुद्दीन के हवाले करते हुए कहा—'खुदा कसम! मैंने इस माल की दुगुनी कीमत दी है। अरे ओ झल्ली वाले...।'

फिर उसने चौथाई तंके में एक झल्ली तय की और चल दिया। मुल्ला नसरुद्दीन ने तंके अपनी अंटी में खोंसे, फिर अपना गधा खोलकर जाफर के पीछे लपकते हुए बोला—'ठहरिए जाफर साहब! मैं भी उधर ही चल रहा हूं।'

वह जल्दी-से-जल्दी एक नजर गुलजान को देखना चाहता था और उसे इस खुशखबरी से मालामाल कर देना चाहता था कि सूदखोर जाफ़र अब उनका बाल भी बांका नहीं कर सकता।

'अरे तुम इतनी जल्दी में क़हां जा रहे हो?'

'आपकी और मेरी मंजिल एक ही है जाफर साहब!' मुल्ला नसरुद्दीन ने आंखें मटकाकर कहा—'हम दोनों एक ही स्थान पर और एक ही काम से जा रहे हैं।'

'लेकिन तुम्हें मेरे काम की क्या खबर?' जाफर ने चटखारा लगाकर कहा—'यदि तुम्हें मेरे काम की खबर लग जाती तो तुम्हें मुझसे ईर्ष्या होने लगती।'

'और यदि तुम्हें मेरे काम की खबर लग जाती तो ईर्ष्या के मारे आप अपने बाल नोचने लगते।'

'तू जुबान बहुत लड़ाता है। जानता है मुझसे बात करने की अच्छे-अच्छों की हिम्मत नहीं होती। लोग मेरे नाम से ही कांपते हैं, मैं रईस हूं, मेरी इच्छा पूरी होने में कोई बाधा नहीं आती। मैंने बुखारा की सबसे खूबसूरत लड़की को पाने की तमन्ना की थी और अब कुछ देर बाद वह मेरी हो जाएगी।'

'अंगूर खट्टे हैं।' मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा, फिर पास से गुजरते हुए एक अंगूर वाले से एक गुच्छा अंगूर खरीद लिए और बोला—'अंगूरों को देखकर एक किस्सा याद आ गया जाफर साहब...।'

'हां...हां... मालूम है, मगर इन ऊट-पटांग बातों में भला क्या रखा है। बेमतलब की बातों में वक्त क्यों खराब कर रहे हो?'

'जाफर साहब! इन बातों का मतलब हर कोई नहीं समझ सकता।' कहते हुए उसने अंगूरों का गुच्छा अपनी पगड़ी में लटका लिया।

आगे जाकर सड़क दाईं ओर मुड़ गई। मोड़ से कुछ ही आगे गुलजान और नयाज कुम्हार एक पत्थर पर बैठे थे। जाफर को आते देखकर कुम्हार उठ खड़ा हुआ। उसकी आंखों के दीप जैसे बुझ चुके थे और वह पत्थर जैसी दिखाई दे रही थी। गुलजान ने भी एक दर्द भरी सर्द आह भरकर मुंह दूसरी ओर फेर लिया। वह बड़े ही मर्मांत स्वर में कराही—'हम लुट गए अब्बू...हमें अब इस शैतान के पंजे से कोई नहीं बचा सकता। या अल्लाह! मदद कर... ।'

जाफर उसके बिल्कुल करीब पहुंच गया। पत्थर को भी पिघला देने वाली गुलजान की सिसकियों का भी उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह उसके यौवन से अपनी हवस की भूख मिटाना चाहता था।

'कुम्हार! मियाद खत्म हो चुकी है। कानून के मुताबिक अब तुम दोनों मेरे गुलाम हो। आज से तेरी बेटी मेरी गुलाम व रखैल होगी।' कहते हुए उसने गुलजान का नकाब पूरे अधिकार से उलट दिया। फिर बोला—'देखो, यह बुखारा की सबसे हसीन लड़की, आज मेरी सेज की शोभा बनेगी। अब मुझे बताओ कि किसको किससे ईर्ष्या करनी चाहिए?'

'मैं मानता हूं कि यह लड़की बेपनाह खूबसूरत है, लेकिन क्या आपके पास कुम्हार की रसीद है?' बड़े सब्र से मुल्ला नसरुद्दीन ने उससे पूछा।

'हां...हां, है क्यों नहीं... ।' जाफर ने कहा—'यह देखो, बिल्कुल पक्की रसीद है। कर्ज की रकम व अदा करने की तारीख साफ-साफ पढ़ लो—और ये देखो! नीचे कुम्हार के अंगूठे का निशान भी है।' जाफर ने रसीद दिखाते हुए कहा।

मुल्ला नसरुद्दीन ने उसके हाथ से रसीद ले ली, तब तक गुलजान को रोते सिसकते देखकर कुछ राह चलते लोग भी वहां रुक गए थे। मुल्ला नसरुद्दीन ने रसीद पर नजर डालकर कहा—'हां, रसीद तो बिल्कुल ठीक है। तुम रसीद के अनुसार अपनी रकम गिनो और चलते बनो।' कहकर उसने एक-दो गवाहों को भी टोका—'जरा ठहरिए हुजूर! जरा इस अदायगी के गवाह बनते जाइए।'

कहकर मुल्ला नसरुद्दीन ने रसीद के टुकड़े करके हवा में उड़ा दिए और वही चार सौ तंके जो उसने जाफर से हासिल किए थे, जाफर के हवाले कर दिए।

कुम्हार व उसकी बेटी की खुशियों का ठिकाना न रहा। सूदखोर जाफर क्रोध से पागल होने जैसी स्थिति में पहुंच गया। गवाहों ने एक-दूसरे को आंख मारी, वे जाफर की हार पर मंद-मंद मुस्करा रहे थे। मुल्ला नसरुद्दीन ने पगड़ी में खोंसा अंगूर का गुच्छा निकालकर एक मोटा-सा अंगूर मुंह में रखा और चटकारा लगाया।

सूदखोर का पूरा बदन क्रोध से कांप रहा था। उसकी इकलौती आंख सुर्ख होकर क्रोध की अधिकता के कारण बाहर को उबल पड़ी थी। कूबड़ कांप रहा था।

मुल्ला नसरुद्दीन कूदकर अपने गधे पर बैठ गया।

तभी गुलजान ने अपनी खनकती आवाज में कहा—'ऐ अजनबी! हमें अपना नाम तो बताते जाओ, ताकि हमें यह तो पता चले कि इस नेक काम के लिए किसके नाम की दुआ करूं।'

'आखिर मैं भी तो सुनूं कि तेरा नाम क्या है, ताकि मैं तेरे लिए दिल खोलकर बद्दुआ कर सकूं।' क्रोध से कांपता हुआ जाफर भी बोला।

गर्व और खुशी से दमक रहा था मुल्ला नसरुद्दीन का चेहरा। उसने बुलन्द आवाज में कहा—'सुनो जाफर! बगदाद हो या तेहरान, इस्ताम्बुल हो या बुखारा, लोग मुझे एक ही नाम से जानते हैं और वह है—सबका प्यारा, सबका दुलारा, मुल्ला नसरुद्दीन।'

यह नाम सुनते ही सूदखोर जाफर को ऐसा लगा, मानो उसके वजूद पर बिजली गिर पड़ी हो। आश्चर्य और भय से उसका चेहरा सफेद पड़ गया। उसने झल्ली वाले को आगे की ओर धकेलकर कहा—'भागो, जल्दी भागो, सिर पर पैर रखकर भागो। मुल्ला नसरुद्दीन हमारे पीछे पड़ा है, जल्दी भागो।'

वह गोली की भांति भागा। हालांकि लंगड़ाहट और कुबड़ की वजह से वह भागने में असमर्थ था, मगर मुल्ला नसरुद्दीन का खौफ ऐसा था कि वह जान छुड़ाकर भाग रहा था, जबकि उपस्थित लोगों को जैसे ही पता चला कि यह शख्स मुल्ला नसरुद्दीन है, वैसे ही वहां लोगों में उत्साह छा गया—'मुल्ला नसरुद्दीन! जिन्दाबाद! गरीबों का सहारा, मुल्ला नसरुद्दीन!'

गुलजान भी अपना चेहरा नकाब में छिपाए खुदा से दुआ कर रही थी कि या अल्लाह! अपने इस नेक बन्दे को मेरी बाकी उम्र दे दे। उसका बाप नयाज कुम्हार भी कुछ ऐसी ही दुआएं मांग रहा था।

जाफर रोता-बिलखता अमीर की अदालत की ओर जा रहा था। बदहवासी और पागलपन में वह अपने सिर के बाल नोच रहा था। लोगों की बुलंद आवाजें पिघलते शीशे की भांति उसके कानों से टकरा रही थीं—'हमारा प्यारा!'

'मुल्ला नसरुद्दीन।'

'सबका दुलारा!'

'मुल्ला नसरुद्दीन।'

अदालत में हलचल

अदालत पूर्ववत् जारी थी।

एक ओर जल्लाद अपने कार्य में लगे थे। दूसरी ओर दो व्यक्ति पेड़ों पर सूली पर लटके हुए थे। एक का सिर कलम कर दिया गया था जिससे वह स्थान लहू से लाल हो गया था। निर्दोष लोग चीख रहे थे, कराह रहे थे, मगर उनकी करुण पुकार अमीर के कानों तक नहीं पहुंच रही थी। वह मुर्दों से शर्त लगाए अपने तख्त पर पड़ा था और बख्तियार मुकद्दमों के उल्टे-सीधे फैसले सुना रहा था।

चापलूस दरबारी और शायर अभी भी उसकी और अमीर की शान में गीत गा रहे थे।

'वजीरे आलम—वजीरे आजम।'

जाफर की मिमियाती-सी आवाज वजीर बख्तियार के कानों में पड़ी तो उसने चौंककर उस तरफ देखा, फिर अपने एक जासूस को आंख से इशारा किया। सेनापति अर्सला बेग भी अपनी कुर्सी से उठकर करीब आते जाफर की ओर लपका—'जाफर साहब! क्या बात है? क्या कोई कयामत आ गई है।'

'कयामत-ही-कयामत है अर्सला बेग साहब! कयामत-ही-कयामत है। अपनी बेतरतीब सांसों पर काबू पाने की कोशिश करते हुए जाफर चीखा—'हम सब पर बिजली गिरने वाली है क्योंकि मुल्ला नसरुद्दीन बुखारा शरीफ में दाखिल हो चुका है। मैंने अभी-अभी उससे बात की है।'

सुनते ही अर्सला बेग इस प्रकार चौंका, मानो बिजली का नंगा तार उसके जिस्म से छू गया हो। उसकी आंखें फटी-की-फटी रह गईं। वह तेजी से पलटकर तख्त की सीढ़ियां चढ़ता चला गया, फिर अमीर के करीब जाकर बोला—'मेरे आका! न...नसरुद्दीन! नसरुद्दीन बुखारा में घुस आया है।'

अमीर ने चौंककर चेहरा ऊपर उठाया—'अर्सला बेग! तू कहीं पागल तो नहीं हो गया? क्योंकि कुछ ही दिन पहले बगदाद के खलिफा ने हमें लिखा था कि मुल्ला नसरुद्दीन का सिर कलम करवा दिया गया है। तुर्की के सुलेमान ने लिखा था कि उसे सूली पर लटका दिया गया है। ईरान के शाह ने लिखा था कि उसे फांसी दे दी गई है। खीवा के खान ने लिखा था कि उसकी जिन्दा खाल खिंचवा ली गई है। इस कमबख्त पर लानत बरसे, चार-चार बादशाहों के हाथों से बचकर कैसे निकल सकता है?'

प्रधानमंत्री बख्तियार व अमीर के चेहरे पीले पड़ गए। चापलूसों की जुबान तालू से चिपक गई। चंवर डुलाने वाले के हाथ से चंवर गिर पड़ा। हुक्के वाले को धुंए का ऐसा धसका चढ़ा कि वह जोर-जोर से खांसने लगा।

जबकि कांपती आवाज में अर्सला बेग कह रहा था—'हुजूर! वह शैतान

बुखारा में ही घूम रहा है, वह नामुराद कभी भी हम तक पहुंच सकता है।'

'तू झूठा है—तेरी खबर झूठी है।' बौखलाकर अमीर ने एक जोरदार थप्पड़ उसके गाल पर रसीद कर दिया—'हरामजादे! खबीस की औलाद! जब वह बुखारा में घुसा, उस वक्त तू क्या सो रहा था? इतने पहरेदारों व खुद तेरे होने का क्या फायदा? कल रात इतना हंगामा हुआ, तब क्या तरी आंखें फूट गई थीं? आज उसने मेरे खिलाफ आवाम को भड़काने की कोशिश की और तू बुत की तरह चुपचाप तमाशा देखता रहा।'

'मालिक!' प्रधानमंत्री बख्तियार बकरी के बच्चे की तरह मिमियाया—'वह हमारी तरफ ही बढ़ा चला आ रहा है। उसकी आवाज साफ सुनाई दे रही है। वह देखो जनता का उमड़ता सैलाब हमारी तरफ ही बढ़ा आ रहा है।'

इसके साथ ही पूरी अदालत मुल्ला नसरुद्दीन जिन्दाबाद के नारों से गूंज उठी। अमीर को अपना तख्त नीचे खिसकता महसूस होने लगा। घबराहट का आलम यह था कि अमीर का चेहरा पीला पड़ गया।

वह गर्जकर बोला—'अदालत बर्खास्त करके महल में चलो।'

पहरेदार जलती हुई मशालें लेकर तोपों की ओर दौड़े। हड़बड़ाहट के कारण अमीर अपना रत्न जड़ित सिंहासन छोड़कर नंगे पांव ही महल की ओर भागा उसके पीछे उसका पर्सनल स्टाफ, हुक्केवाला, चंवर डुलाने वाला, मिरासी, मंत्री व प्रधानमंत्री बख्तियार भी अपनी जान बचाकर भागा।

वहां केवल हाथी और अमीर की शाही सवारी ही रह गई जो बाद में खींचकर ले जाई गई।

जैसे ही शाही अमला महल में दाखिल हुआ, वैसे ही महल का भारी फाटक बंद हो गया।

बाहर भीड़ में एक ही शोर था—'मुल्ला नसरुद्दीन—मुल्ला नसरुद्दीन।'

मुल्ला के प्यार की दुनिया

शहर से बाहर अलग-थलग मिट्टी का एक बड़ा टीला था, जहां नहर के एक किनारे पर कुम्हार टोला था। वहीं एक ओर नयाज कुम्हार का भी घर था। उस दिन से मुल्ला नसरुद्दीन उसी के यहां अपना दिन गुजारता था। वह बड़ी सूझ-बूझ से कुम्हार के काम में हाथ बंटाता और दिन ढलते ही वहां से खिसक लेता। नयाज कुम्हार ने उससे कई बार कहा भी कि वह रात में इधर-उधर न जाकर उसके घर में ही रहा करे, मगर मुल्ला नसरुद्दीन ने उसकी बात कुबूल नहीं की। वह नहीं चाहता था कि उसके कारण बूढ़ा नयाज और गुलजान किसी खतरे में पड़ें। हालांकि खुद उसने ही ऐसी अफवाह उड़ा दी थी कि मुल्ला नसरुद्दीन बुखारा छोड़कर भाग चुका है, मगर फिर भी खतरा पूरी तरह टला नहीं था। हां, इस अफवाह से इतना अवश्य हुआ कि मुख्य दरवाजों पर

पहरेदारों तथा गश्ती सैनिकों की संख्या कम हो गई थी।

इसी प्रकार पिछले काफी दिनों से यही क्रम चल रहा था, अब नयाज कुम्हार की आमदनी में भी अच्छी-खासी वृद्धि हो गई थी। एक दिन उसने कसाई के सारे पैसे मुल्ला नसरुद्दीन को देने चाहे, मगर मुल्ला नसरुद्दीन ने ईमानदारी से दस प्रतिशत लेकर बाकी रकम बूढ़े नयाज को लौटा दी। नयाज के घर के आसपास यह बात तो फैल चुकी थी कि बूढ़े नयाज ने अपनी मदद के लिए कोई नौकर रख लिया है, मगर वह नौकर कौन है, यह कोई नहीं जानता था। यदि इस ख्याल से वहां कोई आता भी तो मुल्ला नसरुद्दीन फौरन ही पिछले दरवाजे से बाहर निकल जाता और फिर उस दिन लौटता ही नहीं था।

नयाज कुम्हार के घर रहते हुए मुल्ला नसरुद्दीन और गुलजान की मोहब्बत भी रफ्ता-रफ्ता अपना सफर तय कर रही थी, दोनों दिलोजान से एक-दूसरे को चाहने लगे थे। मुल्ला नसरुद्दीन शाम होते ही वैसे तो नयाज के घर से चला जाता था, मगर उसके सोते ही गुलजान चुपचाप उसे पिछले दरवाजे से भीतर बुला लेती थी और फिर रात भर वे दोनों एक-दूसरे की बांहों में खोकर प्यार की दुनिया में खो जाते थे।

कई बार तो ऐसा होता था कि वे दोनों प्यार की बातों में इस कदर खो जाते, कि उन्हें दिन निकलने का भी पता न चलता।

आज भी जब सुबह होने को थी, तब बूढ़े नयाज ने अपनी खांसती-खंगारती आवाज में गुलजान को पुकारा—'गुलजान! ओ बेटी गुलजान! थोड़ा पानी तो दे जा।'

आवाज सुनते ही गुलजान ने मुल्ला नसरुद्दीन को सावधानी से बाहर निकाल दिया और पानी लेकर हाजिर हो गई—'अब्बू! यह लो पानी।'

उधर मुल्ला नसरुद्दीन नहर पर जाकर दैनिक क्रिया-कलापों से फारिग हुआ और कुछ ही देर बाद नयाज के मकान के फाटक पर आ धमका।

गुलजान तेजी से दौड़कर आई और फाटक खोल दिया।

मुल्ला नसरुद्दीन भीतर आ गया।

'सलामालेकुम मुल्ला नसरुद्दीन।' बूढ़े नयाज न छत पर से ही उसका स्वागत किया।

'वालेकुम सलाम बुजुर्गवार।'

'कुछ दिनों से देख रहा हूं कि तुम बहुत तड़के ही आ जाते हो, कुछ देर सोते भी हो या नहीं? कहीं कोई बीमारी न लगा लेना। आओ! काम शुरू करने से पहले चाय पी लेते हैं।' नयाज कुम्हार ने बड़ी आत्मीयता से कहा।

और फिर—चाय पीने के बाद वे दोनों काम में लग गए।

गुलजान एक पौधे की ओट से मंद-मंद मुस्कराते हुए उसे देख रही थी।

मरीजों का इलाज

दोपहर तक काम करने के बाद मुल्ला नसरुद्दीन ने वेश बदला और बाजार की ओर निकल गया। वह बुखारा की स्थिति पर भी इस प्रकार नजर रखे हुए था कि सरकारी अफसर या मुल्ला-मौलवी किस प्रकार जनता को बेवकूफ बना रहे या ठग रहे हैं। इस समय वह नकली दाढ़ी-मूंछ व बदखशा साफे में था। उसे उम्मीद थी कि इस भेष में उसे कोई जासूस भी नहीं पहचान पाएगा।

बाजार में घूमते हुए मुल्ला नसरुद्दीन ने गुलजान के लिए मूंगे का एक हार खरीदा जिसका रंग गुलजान के सुर्ख गुलाबी होंठों जैसा था।

बाजार से घर की ओर लौटते समय अचानक एक स्थान पर आकर मुल्ला नसरुद्दीन को रुक जाना पड़ा।

वहां एक मस्जिद के बाहर लोगों की भीड़ जमा थी। लोग उचक-उचक कर मस्जिद की सीढ़ियों पर कुछ देखने का प्रयास कर रहे थे।

एक मुल्ला मस्जिद की सीढ़ियों पर खड़ा कह रहा था—'ऐ मुस्लिम भाइयों! जो आदमी यहां इस मस्जिद की पाक सीढ़ियों पर लेटा हुआ है, दस वर्ष पुराना लकवे का मरीज है। इसका जिस्म हिल-डुल नहीं सकता। आंख भी नहीं खोल सकता यह। इसके रिश्तेदार हर तरफ से निराश होकर यहां आए हैं ताकि आज से सात दिन बाद लासानी वहाउद्दीन पाक वली के उर्स में इसे कब्र की सीढ़ियों पर लिटा दिया जाए। यहां इस प्रकार के अनेक असाध्य रोगी ठीक हुए हैं, इसलिए आओ! हम सब मिलकर दुआ करें कि पाक शेख हम पर करम करें और इस बदनसीब को ठीक कर दें।'

मुल्ला नसरुद्दीन उसके चेहरे की मक्कारी को साफ-साफ पढ़ रहा था। भोले-भाले लोगों को इस प्रकार बेवकूफ बनाते देखकर उसने दिल-ही-दिल में सोच लिया कि इन मक्कार मुल्लाओं को भी सबक सिखाएगा, क्योंकि मस्जिद की सीढ़ियों पर लेटा वह भी कोई उन्हीं का चेला-चपाटा था जो लकवे के रोगी का ढोंग कर रहा था। भला मुल्ला नसरुद्दीन की आंखें उसके ढोंग को कैसे न समझ पातीं?

खैर—सात दिन बाद उर्स का दिन भी आ गया। सूर्योदय से पूर्व ही लोग तीर्थाटन के लिए नंगे पांव ही घरों से निकल पड़े।

मुल्ला नसरुद्दीन भी समय रहते वहां पहुंच चुका था।

वहां आए लोगों में बीमार, अंधे, लंगड़े-लूल्ले, बूढ़े व बच्चों सहित ऐसे भी बहुत से लोग थे, जो किसी-न-किसी गुनाह की तौबा करने आए थे। कोढ़ी लोग भीड़ से कुछ दूर इकट्टे बैठे थे। उनकी आशा भरी नजरें मजार के सफेद गुम्मद को घूर रही थीं।

इबादत शुरू होने में काफी देर थी क्योंकि अमीर अभी तक नहीं आए थे।

धूप काफी तेज होती जा रही थी, मगर बड़े-बड़े करिश्मे देखने के तमन्नाई वहीं जमे हुए थे।

तभी अचानक भीड़ में शोर उठा—'अमीर—अमीर!'

भीड़ के दूसरे छोर पर सिपाही लाठियां फटकार-फटकार कर अमीर के लिए रास्ता बना रहे थे। एक व्यक्ति ने कालीन का गट्ठर मार्ग पर डाल दिया। दूसरा उसे जल्दी-जल्दी खोलने लगा जिस पर अमीर चलकर आने लगे। अमीर मजार के पास मिट्टी के एक ढेर के पास जाकर रुक गए, जहां सामने ही जा-नमाज विछाया गया था। दोनों ओर खड़े यात्रियों ने सहारा देकर अमीर को घुटनों के बल बैठाया। सफेद पोशाक पहने लम्बी दाढ़ी वाले मुल्ला आधा दायरा बनाकर उसके पीछे खड़े हो गए। वे आकाश की ओर हाथ उठा-उठाकर जोर-जोर से आयतें पढ़ने लगे। बीच-बीच में वे कुछ नसीहतें (उपदेश) भी सुना रहे थे।

मुल्ला नसरुद्दीन आसपास के लोगों की नजरों से बचता-बचाता एक वीरान कोने में बनी उस कोठरी तक जा पहुंचा, जिसमें अंधे, लंगड़े-लूल्ले व बीमार लोग रखे गए थे। इन्हें आज अपनी-अपनी तकलीफ से निजात मिलने वाली थी और वे सभी अपनी बारी आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। जो मुल्ला वहां तैनात थे, उनके हाथों में तांबे के बड़े-बड़े थाल थे।

उनमें जो सबसे सीनियर था, वह मुल्ला कह रहा था—'आज के दिन पाक वहीउद्दीन वली खुदा हम नाचीज बन्दों को करिश्मा कर दिखाने की ताकत प्रदान करते हैं। हमें पूरी उम्मीद है कि पाक वहीउद्दीन के रहमों-करम से ये सभी रोगी यहां से ठीक होकर जाएंगे। आप लोग दिल खोलकर मस्जिदों के लिए दान दीजिए। अल्लाह आपकी इस खैरात से खुश होगा।'

तभी एक बड़ा मुल्ला वहां आ गया और बोला—'उस अंधे आदमी को मेरे पास भेजो।'

मुल्ला नसरुद्दीन को समझते देर नहीं लगी कि इनका ड्रामा शुरू हो चुका है।

कुछ मुल्ला अंधे आदमी को कोठरी से निकाल लाए।

अंधे आदमी ने आकर मुल्ला के कदमों में माथा टेका, फिर मजार की सीढ़ियों पर अपने होंठ चिपका दिए।

बड़े मुल्ला ने होंठों-ही-होंठों में कुछ बड़बड़ाते हुए उसके सिर पर हाथ फेरा और देखते-ही-देखते वह व्यक्ति उठकर खड़ा हो गया। उसने आंखें फाड़कर वहां मौजूद जनता को देखा, फिर खुशी से चीखते हुए नाचने लगा—'मैं ठीक हो गया, मैं ठीक हो गया। वहाउद्दीन वली! तेरे रहमो करम से मैं बिल्कुल ठीक हो गया हूं। तू बड़ा रहीम-करीम है, तू बड़ा करिश्मा-साज है।'

जैसे ही मुल्ला खैरात मांगने के लिए थाल लेकर आगे बढ़े, वैसे ही अमीर

ने मुट्ठी भर अशर्फियां उसके थाल में डाल दीं। अमीर के अधिकारियों और यात्रियों ने भी एक-एक अशर्फी उसमें डाली, फिर भीड़ अपनी श्रद्धानुसार थाल में चांदी व तांबें के सिक्के डालने लगी।

और फिर—

पाक वली वहीउद्दीन के रहमोकरम से एक लंगड़ा भला-चंगा हो गया।

तभी एक सफेद दाढ़ी वाला मुल्ला-मुल्ला नसरुद्दीन के करीब आकर बोला—'दिल खोलकर खैरात करो, अल्लाह तुम्हें इसका फल देगा।'

मुल्ला नसरुद्दीन ने उसे ऊपर से नीचे तक घूरकर देखा, फिर बोला—'पहली बात तो यह है कि मेरे पास खैरात करने के लिए पैसे नहीं हैं, दूसरी बात यह है कि मैं स्वयं एक पहुंचा हुआ फकीर हूं और इससे भी बड़ा करिश्मा करके दिखा सकता हूं।'

उसकी बात सुनकर मुल्ला जोर से चिल्लाया—'ऐ मुसलमानों! यह कोई फकीर-वकीर नहीं है, इसकी जुबान से शैतान बोल रहा है। इसकी किसी भी बात में सच्चाई नहीं है, यह तुम्हें भटका रहा है।'

तभी मुल्ला नसरुद्दीन भी चिल्लाया—'ऐ भोले-भाले और सीधे-सादे लोगों! मैंने जो कहा है, वह मैं करके दिखलाऊंगा। मैं इन तमाम रोगियों को बिना छुए ही ठीक करके दिखलाऊंगा। मैं एक ऐसा वाक्य बोलूंगा कि आप सब लोगों की खोई हुई शक्ति वापस आ जाएगी और स्वास्थ्य लाभ पाकर सभी अपने-अपने स्थानों से उठकर भागने लगेंगे।'

उस कोठरी की दीवार पतली व कच्ची थी तथा जगह-जगह से टूट भी रही थी। मुल्ला नसरुद्दीन ने एक कमजोर स्थान पर अपने कंधे से धक्का लगाया, छत व दीवारों से मिट्टी झड़ने लगी। लोगों ने घबराकर ऊपर की तरफ देखा और इसी के साथ मुल्ला नसरुद्दीन जोर से चीख उठा—'भूकम्प! भागो! भागो!'

चीखते हुए उसने दीवार पर एक जोरदार धक्का मारा, मिट्टी के बड़े-बड़े टुकड़े गिरने लगे।

यह देखते-सुनते ही कोठरी में हड़कम्प मच गया। लोग अंधाधुंध उठे और कोठरी से बाहर निकलने का रास्ता खोजने लगे। सबसे पहले लकवे का चेचक के दाग वाला रोगी ही उठकर बाहर भागा। उसके बाद सभी अपनी-अपनी बीमारियों को भूलकर भाग खड़े हुए। इस हबड़-तबड़ में एक लंगड़ा बिल्कुल ठीक हो गया।

सारी भीड़ मुल्ला पर हंसने लगी।

लोग सीटियां बजाने लगे। मुल्ला भीड़ पर काबू पाने की भरसक कोशिश कर रहा था, मगर... भीड़ थी कि काबू ही नहीं आ रही थी।

तभी कोई जोर से चिल्लाया—'मुल्ला नसरुद्दीन!'

और फिर सारी-की-सारी फिजा इस आवाज से गूंज उठी—'मुल्ला नसरुद्दीन आ गया, मुल्ला नसरुद्दीन आ गया।'

मुल्ला-मौलवी चीखने-चिल्लाने लगे तथा भीड़ के बीच से अपनी जान बचाकर भागने की कोशिश करने लगे। उनके हाथों में जो थाल थे, वे भीड़ की अफरा-तफरी में उलट गए और सारे सिक्के इधर-उधर बिखर गए।

जाफर की कमबख्ती

इसी बीच भीड़ को भड़काकर मुल्ला नसरुद्दीन चुपचाप वहां से खिसक लिया और उस हंगामें से काफी दूर निकल आया। उसने अपना रंगीन साफा व नकली दाढ़ी पोशाक के नीचे छिपा ली।

अब उसे जासूसों का भी कोई भय नहीं था, क्योंकि वे तो उसे मजार के आसपास तलाश रहे थे। मगर मुल्ला नसरुद्दीन इस बात से पूरी तरह बेखबर था कि वह एक शख्स को धोखा देने में सफल नहीं हो पाया है और वह शख्स था—सूदखोर जाफर, जो लुकता-छिपता उसका पीछा कर रहा था।

मुल्ला नसरुद्दीन एक सुनसान गली में पहुंचा, फिर एक दीवार के करीब उचककर खांसा, फौरन हल्के कदमों की आहट और एक जनाना स्वर उभरा—'आ गए मेरे सरताज! मेरे दिलबर।'

एक पेड़ के पीछे छिपे सूदखोर जाफर ने यह आवाज स्पष्ट सुनी। उस आवाज को उसने साफ-साफ पहचाना, यह गुलजान की आवाज थी।

चुम्बनों का आदान-प्रदान हुआ।

उधर ईर्ष्या के मारे लंगड़े जाफर के दिल में आग-सी लग गई थी।

'अब समझा कि कुम्हार के प्रति हमदर्दी दिखाने का क्या राज था। चार सौ तंके कोई किसी को ऐसे ही नहीं दे देता।' जाफर बड़बड़ाया।

गुलजान से मिलकर मुल्ला नसरुद्दीन ने इतनी तेजी से कदम बढ़ाए कि वह जाफर की पहुंच से काफी दूर निकल गया, फिर जल्दी ही वह घुमावदार गलियों में जाकर उसकी नजरों से ओझल हो गया।

जाफर सिर पकड़कर सोचने लगा—'हाय री कमबख्ती! अब उसे पकड़ने का इनाम मैं कैसे ले पाऊंगा? मगर चिन्ता मत कर नसरुद्दीन! एक-न-एक दिन मैं तुझे पकड़वाकर इनाम लेकर ही रहूंगा।'

दिन का चैन और रात की नींद हराम

इसी प्रकार थोड़े से दिन वक्त के गर्भ में फिसल गए।

इसी बीच मुल्ला नसरुद्दीन की भड़काऊ हरकतों के कारण अमीर के खजाने को बड़ा भारी नुकसान पहुंचा। शाही खाने को इतना अधिक घाटा हुआ था कि उसे सरलता से पूरा नहीं किया जा सकता। इस बार खैरात आदि से जितना

धन प्राप्त हुआ था, पिछले वर्षों की अपेक्षा यह दसवां हिस्सा भी नहीं था। मजार पर जो घटना घटी थी, उसकी सूचना पूरे मुल्क में फैल चुकी थी। मुल्ला नसरुद्दीन ने लोगों के दिमाग में उन्मुक्त विचारों के ऐसे बीज बो दिए थे, जिसके दुष्परिणाम अब सामने आ रहे थे।

तीन गांवों की रैयत ने मस्जिदों के निर्माण के लिए चंदा देना बंद कर दिया था। चौथे गांव से मस्जिद के मुल्ला को बेरहमी से मारकर भगा दिया गया था।

इन सब बातों को सोच-समझकर अमीर बुरी तरह पगला गया था उसने तत्काल वजीरे आजम को दरबार में तलब किया।

हुक्म हुआ—छोटे-बड़े सभी अधिकारी दरबार में हाजिर हों।

सभी दरबारी और छोटे-बड़े अधिकारी दरबार में आकर उपस्थित हो गए।

अमीर का आगमन अभी दरबार में नहीं हुआ था।

सभी दरबारी गुमसुम-से बैठे थे। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि अमीर ने ऐसे आनन-फानन दरबार क्यों लगाया?

तभी! विचारों की उधेड़-बुन में खोए, माथे पर सिलवटें लिए भारी कदमों से जैसे ही अमीर दरबार में पधारे, सभी उनके सम्मान में उठकर खड़े हुए, फिर उनके सिर घुटनों तक झुक गए।

अमीर सीधे अपने तख्त पर जाकर बैठ गया और दरबारियों को भी अपना-अपना स्थान ग्रहण करने की आज्ञा दी।

सभी दरबारी अपने-अपने स्थान पर बैठकर अमीर की ओर देखने लगे। सभी इस अंदेशे से सहमे हुए थे कि न जाने अमीर का कहर किस पर टूट पड़े? चंवर डुलाने वाला व हुक्का बरदार अपनी-अपनी सेवाएं देने के लिए तैनात हो चुके थे। चापलूस शायर व आमिल यथास्थान खड़े थे, लेकिन अमीर की गम्भीर मुखमुद्रा और परेशानी पर पड़े बल देखकर सब खामोश थे। किसी के मुंह से कोई बोल नहीं फूट रहा था।

एकाएक अमीर की धीमी मगर धीर-गम्भीर आवाज वहां गूंजी—'हम पूछते हैं कि बुखारा पर किसकी हुकूमत है? हमारी या उस काफिर मुल्ला नसरुद्दीन की?'

बोलते-बोलते अचानक अमीर की आवाज भर्रा गई—'बोलो! जवाब दो! हम आप लोगों का जवाब जानना चाहते हैं।'

यह सुनते ही सारे दरबारी थर-थर कांपने लगे।

मंत्री एक-दूसरे को कोहनी मार रहे थे।

'वह हमारे खिलाफ जनता को भड़का रहा है।' धीरे-धीरे अमीर की आवाज तेज होती जा रही थी—'हमारे शाही खजाने को जबरदस्त घाटा पहुंच रहा है। उसने मुल्क की शान्ति भंग कर रखी है। हमारे दिन का चैन और रात की नींद उस कमबख्त ने छीन ली है। उस पाजी मुल्ला नसरुद्दीन को, जिसने पूरे

मुल्क में कहर बरपा किया हुआ है, कैसे ठिकाने लगाया जाए? यह जवाब हम तुम लोगों से मांगते हैं।'

'ऐ इंसाफ पसंद अमीर! बेशक उस दुष्ट को ऐसी सजा मिलनी चाहिए कि उसकी रूह तक कांप उठे।'

लगभग सारा दरबार एक साथ बोल उठा।

'हम पूछते हैं कि अभी तक वह पकड़ा क्यों नहीं गया?' इस बार अमीर की क्रोध भरी गुर्राहट सुनाई दी—'अब तक उसकी गर्दन कलम क्यों न हो सकी? क्या वह नाचीज और बुजदिल कीड़ा इतना ताकतवर हो चुका है कि तुम सब मिलकर भी उसे मसल नहीं सकते? उसके गुनाहों की सजा दिलाना क्या तुम्हारा काम नहीं? क्या तुम लोगों को हथियार बोझ लगते हैं? क्या तुम सब-के-सब नामर्द हो?

'मुझसे नजरें मिलाओ बख्तियार...जमीन मत कुरेदो।' अमीर ने सीधे ही वजीरे आजम बख्तियार को निशाना बनाया।

बख्तियार ने उठकर अमीर के सम्मान में सिर झुकाया, फिर बड़े ही अदब से बोला—'ऐ मेरे अजीज अमीर! आप तो इस गुलाम की खिदमतों से खुद ही भली-भांति परिचित हैं। जिस समय आपने इस गुलाम को वजीरे आजम का रुतबा बख्शा था, शाही खजाने को भारी लाभ हुआ था। मैंने सरकारी नौकरी पाने पर तथा दूसरी प्रत्येक चीजों पर कर लगाकर खजाना भरा था। मैंने छोटे सिपाहियों व कर्मचारियों के वेतन आधे कर दिए और उनके खाने-पीने का खर्चा भी रिआया पर डाल दिया...।'

'तुम्हारी इन खिदमतों का जिक्र मैं पहले भी कई बार सुन चुका हूं...।' अमीर गुर्राया—'बार-बार मैं यह बकवास नहीं सुनना चाहता, मुझे तो सिर्फ इतना बताओ कि मुल्ला नसरुद्दीन को कैसे पकड़ा जाए?'

'हुजूर!' इस बार बख्तियार ने कुछ अतिरिक्त हिम्मत बटोरकर कहा—'अपराधियों को पकड़ना प्रधानमंत्री के फर्ज में शरीक नहीं है। हमारे राज्य में यह उत्तरदायित्व अर्सला बेग साहब को सौंपा गया है, जो कि महल के पहरेदारों व सेना के सबसे बड़े अधिकारी हैं।'

बख्तियार ने बड़ी सफाई से अपनी बला अर्सला बेग के सिर पर डाल दी थी।

अमीर फौरन अर्सला बेग की ओर पलटे—'हां, बोलो अर्सला बेग! तुम क्या कहते हो?'

'जहांपनाह! इस गुलाम की खिदमतें आपको बखूबी मालूम हैं। मैंने कई बार जान की बाजी लगाकर मुल्क की हिफाजत की है। बेहतरीन किस्म के जासूसों को मैंने प्रशिक्षण दिया है।'

'खामोश गुस्ताख!' अमीर हलक फाड़कर चिल्लाया—'कहां हैं तुम्हारे वो जासूस? मुल्ला नसरुद्दीन को क्यों नहीं पकड़ा उन जासूसों ने? जितना तुम लोग

अपनी खूबियां बताना जानते हो, उतना ही अपनी कमियों पर भी ध्यान देना सीखो।'

'तुमने कभी सोचा है—वह कौन-सी कमी है मुझमें कि मुल्ला नसरुद्दीन जैसे एक नाचीज कीड़े को भी हम लोग नहीं कुचल सके, बल्कि उसने ही हमें घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया है।'

'मेरे आका! मैं खुद इस बात पर बहुत शर्मिन्दा हूं कि वह बार-बार हमें चकमा देकर निकल जाता है। मैं समझता हूं कि अब हमें आमिलों की सलाह लेनी चाहिए।'

'कसम मेरे बुजुर्गों की। तुम लोगों को तो चौराहे पर सरेआम फांसी दे देनी चाहिए।' अमीर ने क्रोध में आकर हुक्का बरदार को एक थप्पड़ जड़ दिया। इसके बाद आमिल की ओर पलटे। उसकी दाढ़ी इतनी लम्बी थी, कि वह दो बार अपनी कमर में लपेट ले।

'कहिए आमिल साहब! इस मुश्किल को कैसे आसान किया जाए?'

वह उठा और दुआ की, फिर अपनी दाढ़ी का किनारा अपनी उंगलियों में लपेटकर बोला—'हुजूर! कुछ ऐसा किया जाए कि उसके जिस्म में लहू का एक भी कतरा बाकी न रहे।'

दूसरे आमिल ने कहा कि उसे फांसी पर लटका दिया जाए।

आमिलों के ऐसे बेतुके उत्तर सुनकर अमीर का खून खौलने लगा और वह गरजकर बोला—'जाहिलों! बदमाशों!! अब क्या हमें इतनी भी अक्ल नहीं कि किसी व्यक्ति का सिर काट लेने या फांसी देने से वह जिन्दा नहीं बच सकता। हमने पूछा है कि उसे पकड़ा किस तरह जाए, इस बारे में आप लोग कुछ क्यों नहीं बोलते? इस बाबत किसी ने एक अल्फाज भी नहीं बोला बल्कि सब अपनी-अपनी हांक रहे हैं। एक बात आप सब लोग कान खोलकर सुन लें—यहां मौजूद अधिकारियों को वेतन तब तक नहीं मिलेगा, जब तक कि मुल्ला नसरुद्दीन पकड़ा नहीं जाता। हम ये भी ऐलान करते हैं कि जो उसे पकड़वाएगा, उसे तीन हजार तंकों का इनाम दिया जाएगा। तुम लोगों की बेवकूफी, काहिली व लापरवाही से खिन्न होकर हमने बगदाद से एक नया आलिम बुलवाया है जिसका नाम मौलाना हुसैन है। अभी तक वह अमीरुल मोमनान बगदाद के खलीफा की नौकरी में था।

कहकर वह एकाएक इतना उत्तेजित हो गया कि सिपाहियों से मुखातिब होकर बोला—'इन सबको यहां से भगा दिया जाए।'

यह आदेश मिलते ही सिपाहियों ने दरबारियों को बाहर खदेड़ना शुरू कर दिया। बैखलाए हुए-से दरबारियों पर सिपाही बुरी तरह टूट पड़े।

उनके रुतवे या इज्जत का ध्यान किए बिना ही उन्होंने सब को खदेड़कर दरबार से बाहर कर दिया।

अमीर का हुक्म

सेनापति अर्सला बेग अन्य दरबारियों के साथ सिर-से-सिर जोड़कर बैठा था। दूसरी ओर उसके जासूसों का लश्कर बैठा उसके किसी भी आदेश की प्रतीक्षा कर रहा था। एकाएक अर्सला बेग जैसे दर्द से फुसफुसाया—'उफ्फ! यह हरामजादा! कम्बख्त मुल्ला नसरुद्दीन! इसने हम पर कैसे-कैसे जुल्म ढाए हैं। इसने आफत खड़ी कर दी है पूरे शहर में।' बड़बड़ाते हुए वह अपने जासूसों की ओर पलटा। उन जासूसों में वह चेचकरू नौकर भी था जिसे नसरुद्दीन ने करिश्मा दिखाकर ठीक किया था। अर्सला बेग उन सबसे मुखातिब होकर बोला—'जब तक मुल्ला नसरुद्दीन पकड़ा नहीं जाता, तब तक अमीरे आजम के हुक्म से तुम सबका वेतन बंद रहेगा और अपने लक्ष्य में विफल रहने पर तुम्हें मृत्युदण्ड दिया जाएगा। लेकिन अगर तुममें से जो भी मुल्ला नसरुद्दीन को पकड़ने या पकड़वाने में कामयाब होगा, उसे तीन हजार तंके इनाम और जासूसे खास का रुतबा बख्शा जाएगा।'

यह आदेश सुनते ही सभी जासूस दरवेश, फकीर, भिश्ती या व्यापारी का वेश रखकर चल दिए। चेचकरू जासूस ने कुछ पुरानी पुस्तकें, तस्वीरें, कमली दाने आदि इकट्ठे किए तथा जौहरियों व अत्तारों के टोले के मोड़ पर, बाजार में जाकर खड़ा हो गया। ज्योतिष का वेश धारण करके उसने औरतों से सुराग लगाने की बात सोची थी।

चंद घंटों बाद ही बाजार के चौराहे पर बहुत से नकीब (मुनादी वाले) आ पहुंचे। वे अमीर का हुक्म सुनाते हुए बोले—'मुल्ला नसरुद्दीन को अमीर का शत्रु व काफिर घोषित किया गया है। यदि कोई उसे पनाह देगा या उसकी तरफदारी की बात करेगा तो उसे मुल्क का दुश्मन माना जाएगा और मौत की सजा दी जाएगी। मगर जो उसे पकड़वाएगा, उसे सरकार की तरफ से तीन हजार तंके इनाम व जासूसे खास के रुतबे से नवाजा जाएगा।'

यह ऐलान सुनते ही लोगों में खलबली मच गई। लोग तरह-तरह से खुसुर-पुसुर करने लगे।

'इसके लिए अमीर को जन्म भर इंतजार करना होगा।'

'बुखारावासी पैसे के लालच में अपने प्यारे नसरुद्दीन को मौत के मुंह में नहीं धकेल सकते।'

उधर सूदखोर जाफर ने जब यह ऐलान सुना तो तिलमिलाकर रह गया। उसने सोचा कि यह तीन हजार तंके उसकी जेब में होते, यदि कल वह हाथ से न निकल गया होता! मगर बचकर जाएगा कहां, मैं भी ऐसा दाना फेकूंगा कि उस कमबख्त को मेरे जाल में फंसना ही होगा।

बड़बड़ाता और सोचता हुआ वह महल की ओर बढ़ने लगा।

सूदखोर की चाल

जब काफी देर तक फाटक खटखटाने के बाद भी सिपाहियों ने फाटक नहीं खोला तो सूदखोर जाफर बुरी तरह तिलमिलाया और चिल्लाकर बोला—'अरे बहादुर सिपाहियों! क्या तुम सब गहरी नींद में सो रहे हो?' फिर वह फाटक में लगा लोहे का कड़ा पकड़कर जोर-जोर से जंजीर हिलाने लगा।

उसके चेहरे पर झुंझलाहट और क्रोध के मिले-जुले भाव दिखाई दे रहे थे।

कुछ देर बाद फाटक का छोटा गेट खुला तो जाफर तेजी से भीतर दाखिल हुआ। उसका सामना सीधे अर्सला बेग से हुआ और उसने अमीर से मिलने की इच्छा जाहिर की।

उसका इरादा जानकर अर्सला बेग ने कहा—'जाफर साहब! मैं आपको यही राय दूंगा कि आप अमीर साहब से न मिलें क्योंकि आज अमीर साहब काफी नाराज दिखाई देते हैं।'

'अर्सला बेग साहब! मेरे पास उनके गम को दूर करने का इलाज है। आप जाकर जरा उनसे इतना फरमा दें कि मैं उनके गम के इलाज के लिए ही उनसे मिलना चाहता हूं।'

और फिर, कुछ देर बाद अमीर ने उसे भीतर बुलवा लिया।

'एक बात समझ लो जाफर!' बड़े ही उखड़े हुए मूड में अमीर बोले—'अगर तुम्हारी बात से मेरा दिल खुश न हुआ तो तुम्हें दो सौ बेंत मारे जाएंगे।'

कुछ डरते हुए सूदखोर ने उसकी खुशामद-सी की—'ऐ शहंशाहे अजीम! मेरी बात सुनकर आपका दिल अवश्य ही खुश होगा, क्योंकि आपके इस नाचीज गुलाम को ज्ञात है कि हमारे नगर में एक ऐसी गुलबदन हसीना है, जिसे मैं हसीनों का हुस्न कहने का हौसला रखता हूं।'

खूबसूरत हसीना का जिक्र सुनते ही अमीर के चेहरे पर रौनक दिखाई दी।

यह देखकर जाफर का जरा हौसला बढ़ा और अपनी बात पर जोर देते हुए वह बोला—'ऐ शहंशाहों के शहंशाह! उसकी जवानी व खूबसूरती के विषय में कुछ भी कहना सूरज को चिराग दिखाने के समान है। खूबसूरती में वह चौदहवीं का चांद है। उसकी आंखें हिरणी जैसी हैं, पतली लचकदार कमर, कमानदार भौंहे, सुतवां नाक, सुराहीदार गर्दन, चम्पे जैसी बांहें, गुलाब की पंखुड़ियों जैसे रसीले होंठ, दहकते अंगारों की तरह सुर्ख गाल, उसके मादक पुष्ट उरोजों की कल्पना तो किसी उभरते पर्वत की चोटियों से ही की जा सकती है। ऐ शहंशाहे आलम! ऐसी कातिल जवानी का बोझ उठाए जब वह गिन-गिनकर कदम रखती है तो न जाने कितने ही मनचलों के सीनों पर सांप लोट जाते हैं।'

इससे अधिक अमीर नहीं सुन सके। वह बोले—'अगर तुम्हारी बात सच है तो वह हमारी सेज की शोभा बढ़ाने के योग्य है। आखिर है कौन वह हसीना, उसका नाम तो बताओ।'

'मेरे आका! यदि आप मुझे माफ करें तो मैं बता दूं कि वह एक कुम्हार की बेटी है। मैं आपको यह भी बता सकता हूं कि वह कहां रहती है? मगर इस कार्य के लिए इस नाचीज को भी तो कुछ इना-मोकराम मिलना चाहिए।'

अमीर ने प्रधानमंत्री की ओर देखा—प्रधानमंत्री ने तुरन्त अशर्फियों की एक थैली सूदखोर जाफर के कदमों में डाल दी। जाफर ने झपटकर उस थैली को उठा लिया।

अमीर ने कहा—'यदि वह लड़की ठीक वैसी ही हुई, जैसी तुम बता रहे हो, तो इतना ही इनाम और दिया जाएगा।'

'हुजूर! इस मामले में अधिक देर करना ठीक नहीं होगा, क्योंकि उस नाजुक कली को मसलने के लिए कोई और उसका बेताबी से पीछा कर रहा है।'

यह सुनते ही अमीर का माथा ठनका—'कौन है वो गुस्ताख?'

'मुल्ला नसरुद्दीन, हुजूर!'

'ओह! ओह!! यहां भी मुल्ला नसरुद्दीन...वहां भी मुल्ला नसरुद्दीन आखिर यह बदमाश चाहता क्या है?'

इस प्रकार विलाप करते अमीर मंत्रियों की ओर पलटे।

'तुम लोग हमारी बेइज्जती के सिवा और कुछ नहीं कर सकते? अर्सला बेग, वह लड़की फौरन हमारे महल में आनी चाहिए, अगर इस मामले में भी तुम असफल रहे तो सीधे जल्लादों के पास जाना पड़ेगा।'

'मैं कामयाब होकर लौटूंगा जहांपनाह।' मुस्तैदी से अर्सला बेग ने कहा—'भला एक लड़की को अगवा करके लाना कौन-सी बड़ी बात है।'

'चलो जाफर, मुझे जल्दी ही वहां ले चलो।'

बाल-बाल बचे

नयाज कुम्हार और मुल्ला नसरुद्दीन अपने कार्य में व्यस्त थे। दोनों के चेहरों पर सुकून और बेफिक्री दिखाई दे रही थी। अभी-अभी मुल्ला नसरुद्दीन ने कोई ऐसा चुटकला छोड़ा था कि बूढ़ा नयाज ठहाका लगाकर हंस पड़ा। मुल्ला नसरुद्दीन ने चोर नजरों से कमरे की खिड़की पर खड़ी गुलजान की ओर देखा, वह भी मंद-मंद मुस्करा रही थी।

ठीक तभी!

बाहर का दरवाजा इस प्रकार खटखटाया गया जैसे वहां कोई भूकम्प आ गया हो। चौंककर नयाज और नसरुद्दीन, दोनों ने एक-दूसरे को देखा, फिर नयाज उठकर दबे पांव द्वार तक आया, झिरी में से झांककर बाहर देखा और उल्टे पांव लौटकर मुल्ला नसरुद्दीन के करीब जाकर कांपते स्वर में बोला—'स...सिपाही...भागो मुल्ला नसरुद्दीन...।'

यह सुनते ही मुल्ला नसरुद्दीन पिछवाड़े की दीवार फांदकर भाग गया।

नयाज ने काफी विलम्ब से सांकल खोला, ताकि मुल्ला नसरुद्दीन को अधिक-से अधिक दूरी तय करने का मौका मिल जाए।

गुलजान का अपहरण

दरवाजा खुलते ही सिपाही धड़धड़ाते हुए भीतर घुस पड़े।

डर के मारे नयाज थर-थर कांप रहा था।

उसके करीब जाकर अर्सला बेग गरजा—'सुन ऐ कुम्हार! हमारे अमीर द्वारा तुम्हारे खानदान को बड़ी भारी इज्जत बख्शी जा रही है। उन्हें पता चला है कि तुम्हारे बगीचे में एक हसीन फूल खिला है। इस हसीन गुलाब से वह अपने महल की शोभा बढ़ाना चाहते हैं।'

'कहां है तुम्हारी बेटी?'

यह सुनते ही बूढ़े नयाज की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। सिपाही अन्दर घुस पड़े और रोती-बिलखती गुलजान को घसीटकर बाहर ले आए। उसकी चीख सुनकर बूढ़ा नयाज कांपता हुआ धरती पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

अर्सला बेग ने सिपाहियों की तरफ देखा—'बेचारा खुशी बर्दाश्त न कर पाने के कारण बेहोश हो गया है। होश आने पर महल में आकर शुक्रिया अदा करेगा—चलो!'

मुल्ला नसरुद्दीन बचता-बचाता एक ऐसी जगह जा छिपा, जहां से पूरा नजारा साफ-साफ देखा जा सकता था। झाड़ियों के पीछे से उसे नयाज के घर का फाटक, दो सिपाही और एक शख्स दिखाई पड़े।

वह शख्स कोई और नहीं, खुद जाफर था।

'अच्छा, लंगड़े कुत्ते! तो यह सब तेरी करतूत है। मुझे गिरफ्तार कराने चला था?' मुल्ला नसरुद्दीन को असली बात मालूम न थी। वह अपनी ही गोटियां फिट कर रहा था—'मगर पूरे घर की तलाशी लेने के बाद तुझे खाली हाथ ही लौटना पड़ेगा लंगड़े!'

लेकिन अगले ही पल...।

मुल्ला नसरुद्दीन इस प्रकार चौंका, मानो उसका पांव जलते तवे पर पड़ गया हो। सिपाही उसकी प्रेमिका गुलजान को घसीटते हुए बाहर ला रहे थे। बेचारी गुलजान छूटने के लिए न केवल हाथ-पांव फेंक रही थी, बल्कि बुरी तरह चीख-चिल्ला भी रही थी।

सिपाहियों ने उसे कसकर पकड़ा हुआ था। वे उसे ढालों की दोहरी कतार से घेरकर ले जा रहे थे। यह देखकर मुल्ला नसरुद्दीन के तन-बदन में आग-सी लग गई।

मुल्ला नसरुद्दीन ने देखा कि सिपाही उधर से ही गुजरने वाले हैं, जिधर वह छिपा हुआ है। मुल्ला नसरुद्दीन ने अपनी कमर से बंधी म्यान में से छोटा-सा खंजर निकाल लिया और दुबककर जमीन पर घुटनों के बल बैठ गया।

कुछ देर बाद जाफर उसके आगे से निकला, जैसे ही उसने हाथ उठाकर जाफर पर वार करना चाहा, वैसे ही एक मजबूत हाथ ने उसके हाथ को वहीं दबा दिया।

यह हाथ यूसुफ लोहार का था।

'चुपचाप पड़े रहो—तुम अकेले हो और वे बीस। तुम उस बेचारी की कोई मदद तो नहीं कर पाओगे, बल्कि अपनी जान से हाथ धो बैठोगे। मेरी बात को समझने की कोशिश करो।'

काफिला आगे निकल गया।

'तुमने मुझे क्यों रोक लिया, यूसुफ भाई। इस जिंदगी से तो लड़ते-लड़ते मर जाना ही बेहतर है।' नसरुद्दीन ने जोश में भरकर कहा।

'मैं बाजार से ही उन सिपाहियों का पीछा कर रहा था। खुदा का शुक्र है कि मैंने ठीक समय पर आकर तुम्हें रोक लिया। शेर या हथियार वालों का निहत्थे मुकाबला करना कोई समझदारी नहीं है। तुम्हारी प्रेमिका की वापसी ताकत से नहीं, बल्कि दिमाग व चालबाजी से सम्भव है, इसलिए ठंडे दिमाग से सोचो। मत भूलो कि ठंडा लोहा हमेशा ही गर्म लोहे को काटता है।' लोहार किसी बुजुर्ग की भांति उसे समझा रहा था।

'श...शुक्रिया लोहार भाई। मैं सचमुच आवेश में आ गया था, मगर अब मैं तुम्हें भरोसा दिलाता हूं कि मैं अपनी बुद्धि, बल और हथियारों का कभी भी दुरुपयोग नहीं करूंगा।'

यह कहकर मुल्ला नसरुद्दीन ने लोहार से विदा ली।

मुल्ला नसरुद्दीन जब वापस जा रहा था तो उसनें सिपाहियों से पीछे छूट गए जाफर को लंगड़ाते हुए अपनी ओर आते देखा। जाफर की नजर भी उस पर पड़ चुकी थी लेकिन उसे देखते ही वह लपककर एक घर में घुस गया और अन्दर से सांकल चढ़ा ली।

मुल्ला नसरुद्दीन क्रोध से चीखा—'सावधान! सांप के बच्चे जाफर! मैंने सब कुछ देख-सुन लिया है और अब तू भी सुन ले कि जिस तालाब से मैंने तुझे बचाया था, एक दिन तुझे उसी में डुबोकर मारूंगा—ये मुल्ला नसरुद्दीन की सौगंध है।'

कहकर वह तेजी से आगे बढ़ गया।

मुल्ला की चाल

बूढ़ा नयाज अभी भी जमीन पर पड़ा सिसक रहा था।

मुल्ला नसरुद्दीन ने जैसे-तैसे दिलासा देकर उसे शान्त किया। नयाज के पास ही अर्सला बेग द्वारा फेंके गए कुछ सिक्के पड़े थे और पास ही गुलजान का रूमाल भी जो शायद जाते वक्त छूट गया था।

बूढ़े के आंसू नहीं सूख रहे थे। उसके तो बस छाती पीटने की कसर बाकी रह गई थी।

उसे इस प्रकार रोते देखकर मुल्ला नसरुद्दीन बोला—'सुनिए बुजुर्गवार! यह गम अकेले आपका ही नहीं है। शायद आप नहीं जानते कि मैं उससे प्यार करता हूं तथा वह भी मुझे उतना ही चाहती है। हम दोनों शादी करना चाहते हैं। मुझे सिर्फ यही इंतजार था कि मैं कुछ पैसा कमा लूं ताकि आपको अच्छा मेहर दे सकूं।'

'अरे बेटा, मुझे मेहर की क्या परवाह है।' रोता-रोता बूढ़ा नयाज बोला—'मैं अपनी बेटी का दिल भला कैसे तोड़ सकता हूं, ल...लेकिन वह चली गई और मैं बूढ़ा कुछ भी न कर सका। मैं...मैं महल में जाऊंगा और अमीर के आगे दामन फैलाकर भीख मांगूंगा? शायद उसे रहम आ जाए और मेरी इज्जत मुझे लौटा दे।'

कहते हुए वह उठा और लाठी टेकता हुआ दरवाजे की ओर बढ़ने लगा।

मुल्ला नसरुद्दीन ने तेजी से आगे आकर उसे रोका—'ठहरिए बुजुर्गवार! क्या आप यह नहीं जानते कि अमीरों के पास ऐसा दिल नहीं होता जो किसी के गम से पिघल सके। ये लोग तो पत्थर से भी अधिक कठोर होते हैं। मैं खुद ही उससे अपनी गुलजान को छीनकर लाऊंगा! आप यहीं बैठिए।'

'बेटे! उनके पास बड़ी ताकत है—तुम अकेले वहां मत जाना। वह तुम्हें देखते ही फांसी का हुक्म जारी कर देगा, फिर तुम अकेले कर भी क्या सकते हो?'

'यह तो मैं अभी नहीं बता सकता कि मैं क्या कर सकूंगा व कैसे करूंगा? हां, इतना अवश्य कहता हूं कि गुलजान उसकी नहीं हो सकती, वह उसे कभी नहीं अपना सकेगा। गुलजान को मैं पाक-साफ निकालकर ले आऊंगा।' फिर कुछ देर तक मुल्ला नसरुद्दीन न जाने क्या सोचता रहा, फिर पूछा—'बुजुर्गवार! एक बात तो बताइए कि आपकी बीवी का तो देहान्त हो चुका है, क्या उनके कुछ कपड़े मुझे मिल जाएंगे?'

'हां-हां क्यों नहीं, यह लो सन्दूक की चाबी, सन्दूक अन्दर ही रखा है।' नयाज ने अपने कुर्ते की जेब से चाबी निकालकर उसकी ओर बढ़ा दी।

मुल्ला नसरुद्दीन ने कपड़े निकाले और फिर कुछ देर बाद बाहर निकला तो वह औरतों के लिबास में था। अपना चेहरा भी उसने नकाब में ढक लिया था, फिर बाहर आकर अपने गधे पर बैठकर वह बोला—'मैं शीघ्र ही लौटकर आऊंगा बुजुर्गवार! आप जल्दबाजी में कोई उल्टा-सीधा कदम न उठाना।'

मुल्ला नसरुद्दीन का हंगामा

मुल्ला नसरुद्दीन सीधा उस दुकान पर पहुंचा जहां दो महीने पहले उसने अपना असली परिचय देकर नयाज कुम्हार के लिए चार सौ तंके जुटाने के लिए नीलामी का सामान एकत्र किया था। उसी दिन से मुल्ला नसरुद्दीन से तुंदियल चाय वाले ने दोस्ती गांठ ली थी।

उचित अवसर देखकर मुल्ला नसरुद्दीन ने उसे पुकारा—'अली!'

अली ने चौंककर द्वार की ओर देखा, सामने खड़ी एक स्त्री को देखकर वह हकबकाया। सामने तो एक औरत खड़ी है, फिर यह मर्दाना आवाज कहां से आई?

बुरके में से मुल्ला नसरुद्दीन पुनः बोला—'अली! तुमने मुझे पहचाना नहीं? अल्लाह के बंदे, मुझे यूं न घूरो। क्या तुम्हें जासूसों की आशंका नहीं है। मैं हूं...मैं!'

और फिर चारों ओर से नजरें बचाकर चाय वाला उसे चायखाने के पिछवाड़े एक भंडार में ले गया। वहां खाली केतलियां तथा ईंधन आदि रखा था, एकदम शान्ति थी वहां।

धीरे से मुल्ला नसरुद्दीन फुसफुसाया—'अली! मेरे गधे को तुम अपने पास रख लो। तुम इसे खिलाना-पिलाना व तैयार रखना, मुझे कभी भी इसकी आवश्यकता पड़ सकती है, मैं आकर ले जाऊंगा, किसी को भी मेरा भेद पता नहीं लगना चाहिए।'

अली ने सावधानीपूर्वक द्वार बंद किया, फिर पलटकर पूछा—'मगर तुमने यह जनानी पोशाक क्यों धारण की हुई है?'

'इसलिए कि मैं महल जाऊंगा।'

चाय वाला चौंका—'पागल हो गए हो क्या? जो जानबूझकर अपना सिर ओखली में देना चाहते हो।'

'अली! मेरे भाई! यह काम मेरे लिए बहुत जरूरी है। तुम जल्दी ही समझ जाओगे कि ऐसी कौन-सी मजबूरी है जो मैं यह जोखिम भरा कदम उठा रहा हूं। आओ...मेरे दोस्त! मुझसे गले मिलो, न जाने...।'

'नहीं—नहीं दोस्त, ऐसा मत कहो।' चायवाला बोला—'तुम खुदा के नेक बन्दे हो और जिस काम से भी वहां जा रहे हो, उससे किसी का भला ही होगा, जो लोग दूसरों की भलाई के लिए जीते-मरते हैं, अल्लाह उनका बाल भी बांका नहीं होने देता।'

उसने आंखों में आंसू लिए गले मिलकर उसे बिदा किया।

बाहर दुकान पर ग्राहक शोर मचाने लगे थे।

उससे विदा लेकर मुल्ला नसरुद्दीन महल के द्वार पर पहुंचा और सिपाहियों के रोकने पर किसी बुढ़िया की भांति कांपती-थर्राती जनानी आवाज में बोला—'ऐ बहादुर सिपाहियों! मुझे हरम में जाने दो। मैं बहुत बढ़िया अम्बर, मुश्क, गुलाब का इत्र वगैरह बेचने आयी हूं। मैं मुनाफे में तुम्हें भी हिस्सा दूंगी।'

'भाग जा बुढ़िया, भाग जा।' एक सैनिक ने उसे झिड़का—'बाजार में जाकर अपना सामान बेच।'

इस प्रकार अपने उद्देश्य में विफल होकर वह काफी गमगीन तथा उदास दिखाई दे रहा था। उसके पास समय बहुत कम था, क्योंकि दोपहर के बाद सूर्य धीरे-धीरे डूब रहा था। उसने महल की चारदीवारी के चारों ओर चक्कर काटा, मगर एक छोटा-सा छेद भी उसे किसी दीवार में न मिला। यहां तक कि नालियों पर भी इस्पात की जालियां लगी हुई थीं। मुल्ला नसरुद्दीन ने सोचा, मुझे महल में जाना ही होगा, इसके लिए चाहे मुझे कुछ भी क्यों न करना पड़े।

यही संकल्प दोहराते हुए वह बाजार की ओर चल दिया।

बाजार में एक तिराहे पर आकर वह इधर-उधर देखने लगा। चारों ओर चहल-पहल थी।

तभी एक आवाज उसके कानों में पड़ी।

'अभी-अभी तुमने बताया था कि तुम्हारा शौहर तुम्हें बिल्कुल भी नहीं चाहता—वह तुम्हारे साथ हम बिस्तर भी नहीं होता और न ही तुमसे प्यार करता है। इस परेशानी का एक उपाय हो सकता है, लेकिन वह उपाय मुझे मुल्ला नसरुद्दीन से पूछना होगा। मुल्ला नसरुद्दीन इत्तफाक से आजकल यहीं हैं, तुम मुझे उसकी खबर दो कि वह कहां रह रहा है...? वह और मैं मिलकर शीघ्र ही तुम्हारे शौहर को जल्दी ही ठीक रास्ते पर ले आएंगे।'

मुल्ला नसरुद्दीन ने इस आवाज के करीब जाकर देखा कि चेचकरू जासूस एक नमदे पर कुछ मनके बिखेरकर एक पुरानी-सी किताब के पन्ने उलट रहा

था। वह कह रहा था—'ऐ औरत सुन! यदि तू मुल्ला नसरुद्दीन का पता न लगा सकी, तो तेरा शौहर तुझसे हमेशा के लिए जुदा हो जाएगा और तुझ पर खुदा की लानत बरसेगी।'

मुल्ला नसरुद्दीन ने तय कर लिया कि इस नजूमी को सबक सिखाना पड़ेगा। वह नमदे के सामने बैठ गया और बोला—'दूसरों के भाग्य का हाल बताने वाले ऐ नजूमी! मेरे भी भाग्य का हाल बता।' यह कहकर उसने उसके मनके बिखेर दिए।

नजूमी को गुस्सा आ गया—'ऐ औरत! तुझ पर खुदा की मार है, मौत अपना काला साया तेरे सिर पर डाले हुए है। हां, यदि तू मुल्ला नसरुद्दीन का पता लगा सके, तो तुझ पर से मौत का साया हट सकता है।'

उसके चारों ओर भीड़ लग चुकी थी।

'अच्छी बात है।' मुल्ला नसरुद्दीन बोला—'मैं मुल्ला नसरुद्दीन को ले आऊंगी।'

यह सुनते ही नजूमी बना चेचकरू जासूस चौंका—'अच्छा! तो तू उसे कब तक मेरे पास ला सकती है?'

'यहीं है वो तो...तुम्हारी आंखों के सामने। जरा आंखें खोलकर देखो।'

'कहां है यहां?' वह पागलों की भांति इधर-उधर देखने लगा, फिर बोला—'मुझे तो कहीं नजर नहीं आ रहा।'

'फिर नजूमी होने का नाटक क्यों कर रहे हो? क्या तुम ग्रहों की चाल देखकर अनुमान नहीं लगा सकते कि वह तुम्हारे पास ही है? लो देखो, ये रहा मुल्ला नसरुद्दीन!' कहकर उसने अपना नकाब उलट दिया।

'बोल, मुझसे क्या पूछना चाहता है? तू झूठा है, अमीर का जासूस है, तू नजूमी नहीं है, बल्कि इन भोले-भाले मासूम लोगों को धोखा दे रहा है।'

यह सुनते ही भीड़ उत्तेजित हो उठी—'जासूस...अमीर का जासूस...गंदा कुत्ता।'

'मारो साले को...!' किसी ने कहा।

यह सुनते ही चेचकरू जासूस ने अपना नमदा लपेटा और पूरी ताकत लगाकर अमीर के महल की ओर दौड़ पड़ा।

महल के मुख्य द्वार के पास एक सीलन युक्त कोठरी में ढेरों सिपाही अलसाए से बैठे थे। चेचकरू वहां पहुंचा और पागलों की भांति चिल्लाया—'न...नसरुद्दीन! मुल्ला नसरुद्दीन...वह बाजार में...औरत के वेश में घूम रहा है...।'

यह सुनते ही सारे-के-सारे सिपाहियों के जिस्म में जैसे बिजली-सी भर गई। सभी ने अपने-अपने हथियार संभाले और द्वार की ओर झपट पड़े। हर कोई एक ही बात कह रहा था—'मैं पकड़ूंगा मुल्ला नसरुद्दीन को...यह इनाम मेरा

होगा...तीन हजार तंके। यह इनाम मुझसे बचकर जाएगा कहां...।'

जैसे ही सिपाही बाजार की ओर झपटे, वैसे ही चारों ओर हड़बड़ी मच गई। लोग जान बचाकर इधर-उधर भागने लगे। औरतें अपनी इज्जत बचाने के लिए सिर पर पांव रखकर जिधर मुंह उठा, उधर ही भाग लीं। इस भगदड़ में न जाने कितने बच्चे नीचे गिरकर पैरों तले रुंद गए।

एक सिपाही ने औरत का नकाब उलट दिया। औरत भय से चीख उठी।

दूसरे सिपाही भी वहां मौजूद औरतों से कुछ इसी प्रकार की हरकतें कर रहे थे।

चारों ओर चीख-पुकार मच गई। पूरे बाजार में किसी भी औरत का नकाब सलामत नहीं बचा। सिपाही उनसे अश्लीलता की हद तक बदतमीजियां करने लगे थे। उनके साथ मारपीट, छेड़छाड़ और वस्त्रहरण जैसी अनहोनी घटनाएं घट रही थीं।

कोई भी कुछ समझ नहीं पा रहा था कि आखिर माजरा क्या है?

औरतें अपनी सहायता के लिए चीख रही थीं—'बचाओ—अरे कोई तो इन दरिंदों से हमें बचाओ...।'

एक भिश्ती अपनी बीवी को बचाने की कोशिश में सिपाहियों से भिड़ गया। उसे देखकर अन्य राह चलते और दुकानदार आदि भी औरतों को बचाने के लिए सिपाहियों से जूझने लगे। सिपाही तलवारों से भीड़ को खदेड़ रहे थे।

भीड़ भी अब हमलावर हो चुकी थी। वे सिपाहियों पर बर्तन, जूते, चप्पलें या और जो भी दूसरी चीज हाथ में आती, फेंक मारते।

लोहारों ने लोहे की नाले उन्हें फेंक-फेंककर मारी, कुम्हारों ने अपने घड़े उनके सिरों पर फोड़ दिए। चाय वालों ने गर्म पानी से भरी केतलियां उन पर फेंकनी शुरू कर दीं।

अब—जब पब्लिक भड़की तो सिपाहियों को अपनी जान बचानी भारी पड़ गई।

चारों ओर हाहाकार मच गया।

अमीर जो अपने महल में चैन की नींद सो रहे थे, इस शोरगुल को सुनकर चौंक पड़े। उन्होंने खिड़की खोलकर बाहर का नजारा देखा तो दंग रह रह गए, फिर घबराकर उन्होंने जल्दी ही उसे बंद कर दिया। अभी हलक फाड़कर वे किसी को पुकारने ही वाले थे कि बख्तियार घबराया हुआ दौड़कर भीतर दाखिल हुआ। उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं।

उसने कांपते हुए अमीर के आगे सिर झुकाया—'ह...हुजूर...हुजूर...।'

'अबे आगे भी तो कुछ बोल कमबख्त...तोपें कहां पर तैनात हैं...अर्सला बेग कहां मर गया?'

अर्सला बेग भी कांपता हुआ अमीर के सामने आ गया। वह घुटनों के बल जमीन पर गिर पड़ा और गिड़गिड़ाते हुए बोला—'मेरे आका! मैं...मैं आपका गुनहगार हूं...मेरा सिर धड़ से जुदा करने का हुक्म जारी करें' कहते-कहते वह रो ही पड़ा।

'अर्सला बेग...अर्सला बेग...धीरज से काम लो...।' अमीर उसके आंसुओं से प्रभावित होकर बोले—'आखिर यह सब क्या हुआ...?'

'ऐ मेरे विद्वान आका! ऐ मेरे...।'

'इस प्रकार मिमियाना छोड़ो...खुलकर बताओ कि आपकी परेशानी और बदहवासी का क्या कारण है? बाजार में क्या हो रहा है...राज्य की हालत कैसी है?'

'म...मुल्ला नसरुद्दीन...मेरे आका! वह औरत के वेश में घूम रहा है। यह सब उसी की करतूत है मेरे मालिक—मैं लाख कोशिश के बाद भी उसे पकड़ नहीं सका...मेरा सिर कलम करवा दीजिए।' अर्सला बेग ने पश्चाताप करते हुए कहा।

यह सुनते ही अमीर ने अपना सिर थाम लिया। उसकी आंखों के सामने अंधकार-सा छा गया और उसे ऐसा लगा मानो वह गम की गहरी खाई में डूबता चला गया हो।

मौलाना हुसैन की शामत

मुल्ला नसरुद्दीन के लिए एक-एक क्षण बड़ा ही कीमती था।

उसने बाजार में अधिक देर घूमना मुनासिब न समझा और सिपाहियों की अक्ल ठिकाने लगाता हुआ अली के चायखाने पर आ पहुंचा। अपना भेद खुलते ही उसने चायखाने पर आकर अपना लिबास बदल लिया और फिर बाजार में चला गया, जहां आग में घी डालकर वह वापस आया।

अभी वह अली से कुछ कहने ही जा रहा था कि एक कांपती हुई आवाज उसके कानों में पड़ी—'हटो-हटो, अरे भाई मुझे जाने दो, आखिर यहां हो क्या रहा है, मुझे जाने दो, मुझे महल में जाना है...।'

'महल।' यह शब्द कानों में पड़ते ही मुल्ला नसरुद्दीन चौंककर पलटा। उसने देखा, झुकी, पतली नाक व सफेद दाढ़ी वाला एक बूढ़ा ऊंट पर बैठा था। देखने में वह अरबी लगता था। उसकी पगड़ी पर एक विशेष चिन्ह अंकित था जो उसका आलिम होना सिद्ध करता था।

वहां मची मार-काट और दंगे-फसाद से भयभीत होकर वह ऊंट के कूबड़ से चिपट गया था और एक आदमी उसे पकड़कर ऊंट से नीचे घसीटने की चेष्टा कर रहा था। बूढ़ा बुरी तरह घबराकर चिल्ला रहा था।

मुल्ला नसरुद्दीन ने समझ लिया कि इसी आदमी के माध्यम से वह महल

में दाखिल हो सकता है, अतः आगे बढ़कर उसने उसे उस व्यक्ति से बचाया, फिर उसके ऊंट को अपने गधे के पास बांधकर उसे अली के चायखाने में सुरक्षित ले आया।

बाहर मचे हंगामे के कारण चायखाना खाली पड़ा था।

'अरे भाई! आखिर यहां यह सब क्या हो रहा है?'

'गदर मच रहा है, गदर।' मुल्ला नसरुद्दीन ने उसे और अधिक डराते हुए पूछा—'आप कौन हैं और कहां जाना चाहते हैं?'

'मुझे तो महल में जाना है—अमीर से मिलने।'

'बुजुर्गवार!' मुल्ला नसरुद्दीन ने उसे समझाया—'अमीर से मिलना इतना आसान नहीं कि आप गए और अमीर से मिल लिए। उनसे मिलने के लिए तो लोगों को हफ्ता-हफ्ता भर प्रतीक्षा करनी पड़ती है।'

'महल में मेरा इंतजार हो रहा होगा।

'अच्छा!' व्यंग्य से मुस्कराया मुल्ला नसरुद्दीन—'आपमें क्या सुर्खाब के पर लगे हैं मेरे बुजुर्गवार! आखिर आप चीज क्या हैं जो अमीर आपका इंतजार कर रहे होंगे?'

मुल्ला नसरुद्दीन की बात सुनकर बूढ़ा चिढ़ गया, फिर एकाकए ही गरूर भरे लहजे में बोला—'तुम्हें यह बात मालूम होनी चाहिए कि मैं एक प्रसिद्ध आलिम, ज्योतिषी और हकीम हूं। मैं बगदाद से अमीर की दावत पर ही यहां आया हूं।'

'ओह, ओह! खुशामदीद ऐ आलीम शेख!' मुल्ला नसरुद्दीन ने उसके सम्मान में सिर को हल्की-सी जुम्बिश दी—'मैं एक बार बगदाद गया था। वहां के सभी आलिमों को मैं जानता हूं, क्या मैं आपका शुभ नाम जान सकता हूं?'

'अगर तुम बगदाद गए हुए हो, तो तुम्हें अमीर के लिए की गई मेरी खिदमतों के बारे में भी पता होगा। मैं वही मशहूर आलिम मौलाना हुसैन हूं जिसने अमीर के लड़के की जान बचाई थी। मैं तो रहने वाला भी बगदाद का हूं।'

'क्या कहा...?' मुल्ला नसरुद्दीन ने गहरा आश्चर्य व्यक्त किया—'मौलाना हुसैन! क्या आप ही मौलाना हुसैन के नाम से जाने जाते हैं बुजुर्गवार?'

'ऐ भले आदमी! मेरी बात सुनकर तुम्हें इतना आश्चर्य क्यों हो रहा है?' मौलाना हुसैन ने हैरानी से पूछा, उसने सोचा कि शायद मुल्ला नसरुद्दीन उससे बहुत ज्यादा प्रभावित हो गया है, अतः अपनी शान में कसीदा पढ़ते हुए वह स्वयं ही बोला—'विद्वता में अद्वितीय, वैद्यक तथा ज्योतिष शास्त्र में निपुण मशहूर आलिम मौलाना हुसैन मैं ही हूं। लेकिन तुम देख रहे हो कि घमंड मुझे छू भी नहीं गया है। देखो, मैं तुम जैसे छोटे आदमी से भी कितनी आत्मीयता से पेश आ रहा हूं।'

बुजुर्ग ने सोचा कि यदि मैं इसके सामने अपने आपको बढ़ा-चढ़ाकर पेश करूंगा तो ये दूसरे लोगों के बीच और अधिक बढ़ा-चढ़ाकर मेरी तारीफ करेगा, इस प्रकार इस मुल्क में मेरा मान-सम्मान होने लगेगा। आम लोगों में होने वाली चर्चा जासूसों और भेदियों की मार्फत अमीर तक पहुंचती है। उसका ख्याल था कि इस प्रकार उसकी विद्वता का सिक्का जम जाएगा।

इसी कोशिश में उसने अपने पुराने आलिम मित्रों के बहुत से वाक्य दोहराए और सितारों के योग व आपस में उनके सम्बंध भी बताने शुरू किए।

मुल्ला नसरुद्दीन ने बड़े गौर से उसकी बातों को सुना। वह एक-एक बात को अपने दिमाग में बैठाता जा रहा था। बूढ़ा अपनी ही रौ में बोले जा रहा था।

वह इस बात से पूरी तरह बेखबर था कि मुल्ला नसरुद्दीन के दिमाग में कुछ और ही खिचड़ी पक रही थी।

मौलाना की सारी बातें बड़े सब्र से सुनने के बाद मुल्ला नसरुद्दीन बोला—'नहीं, विश्वास नहीं होता कि आप ही मौलाना हुसैन हैं?'

अरे दोस्त, विश्वास करो...विश्वास करो कि मैं ही मौलाना हुसैन हूं।' अपने शब्दों पर जोर देते हुए बूढ़े आलिम ने कहा—'इसमें आश्चर्य की क्या बात है—आखिर तुम विश्वास क्यों नहीं करते?'

मुल्ला नसरुद्दीन ने चेहरे पर ऐसे भाव भाव पैदा किए मानो वह गहरी सोच में डूब गया हो, फिर एकाएक ही बोला—'मेरे बुजुर्ग! लगता है, आपकी शांमत आने वाली है। अब आपको कोई नहीं बचा सकता, हे मेरे विद्वान आलिम! बुखारा में कदम रखने से पहले कम-से-कम अपने सितारे तो देख लिए होते...।'

यह सुनते ही बूढ़े आलिम के हाथ से चाय का प्याला छूट गया। चाय का घूंट हलक में जाकर ऐसा लगा कि उस पर खांसी का दौरा-सा पड़ गया। पलक झपकते ही उसकी शेखी गायब हो गई। जैसे-तैसे उसने अपने आप पर काबू पाया, फिर बोला—'अ...आप ऐसा क्यों कह रहे हैं भाई...आखिर बात क्या है?'

मुल्ला नसरुद्दीन ने बाजार की ओर इशारा करके कहा—'क्या आपको मालूम नहीं कि यह सारी गड़बड़ी आपके ही कारण हुई है।'

'मेरे कारण...मेरे कारण कैसे...?'

'क्या यह सच नहीं है कि आपने बगदाद से रवाना होने से पहले यहां खुल्लम-खुल्ला यह ऐलान किया था कि आप अमीर के हरम तक पहुंच जाएंगे और उनकी बेगमों को...छि...छिः कहते हुए भी शर्म आती है...हुसैन साहब! आपको ऐसी बात कहते हुए शर्म नहीं आई।'

यह सुनते ही बुजुर्ग का मुंह खुला-का-खुला रह गया। आंखें फट-सी पड़ीं और डर के मारे हिचकियां आने लगीं। वह कुछ कहना चाहता था, मगर उसकी

अली चायखाना

आवाज ने उसका साथ नहीं दिया। हकलाती-सी आवाज में वह केवल मिमियाकर रह गया।

जबकि लोहा गर्म जानकर नसरुद्दीन ने पुनः चोट की।

'आपने कसम खाई थी कि आप ऐसा करेंगे। अभी कुछ देर पहले मुनादी वाले यही ऐलान करके गए हैं कि आप जैसे ही बुखारा की सरहद में कदम रखें आपको पकड़कर फांसी दे दी जाए। इसी बात के जुनून में यहां के लोग हर छोटे-बड़े, देशी-विदेशी आलिम के खून के प्यासे हो गए हैं और क्या सैनिक, क्या नागरिक...सब आपको ढूंढ़ते फिर रहे हैं। अभी कुछ देर पहले पिछले चौराहे पर लोगों ने इस्ताम्बुल के एक आलिम को जिंदा जलाने की कोशिश की...खुदा खैर करे हुसैन साहब! आपका अब न जाने क्या होगा।'

बूढ़ा आलिम बुरी तरह कराहने लगा। उसका दिमाग कुंद हो गया था और वह समझ नहीं पा रहा था कि उसके खिलाफ यह चाल किसने चली?

'और...अब यदि लोगों को यह पता चल जाए कि आप यहां बैठे हैं तो लोग यहीं आकर आपकी तिक्का बोटी कर देंगे। आपकी तो बात क्या कहूं, आपसे बात करने या यहां ठहराने के जुर्म में मुझे भी सरेआम फांसी पर लटका दिया जाएगा।'

'मैं...मैं बगदाद लौट जाऊंगा।' बूढ़ा आलिम लगभग रो पड़ा—'मुझे फौरन यहां से लौट जाना चाहिए।'

'मगर आप यहां से बाहर नहीं निकल सकते, यदि किसी प्रकार आप फाटक तक पहुंच भी गए तो वहां सिपाही आपको पकड़ लेंगे।'

'ऐ मेरे मेहरबान दोस्त! कसम खुदा पाक की, मैं बिल्कुल निर्दोष हूं। ऐसी गुस्ताख बात मैं कभी कह ही नहीं सकता, हाय कमबख्ती! ये क्या मुसीबत आ गई। ऐ खुदा के नेक बन्दे...।' वह मुल्ला नसरुद्दीन के सामने गिड़गिड़ाया—'ऐसे कठिन वक्त में तू ही मेरी मदद कर...।'

'मैं मदद करूं! मैं कैसे मदद करूं?'

मुल्ला नसरुद्दीन ने आंख तरेरी—'मुझे करना तो यह चाहिए कि अपने आका का सच्चा व वफादार सेवक होने के कारण आपको पकड़कर तुरन्त सिपाहियों को सौंप दूं ताकि मुझ पर आपके साथ सांठ-गांठ करने का इल्जाम न लगे।'

बूढ़ा आलिम बुरी तरह रोने लगा।

जब मुल्ला नसरुद्दीन को महसूस हो गया कि मामला पूरी तरह जम गया है, तब वह बोला—'एक बात बताएं बुजुर्गवार!'

'पूछो—पूछो मेरे भाई।'

'आप कहते हैं कि लोगों ने आपको बदनाम करने के उद्देश्य से ऐसा किया है और आप बिल्कुल निर्दोष हैं?'

'हां भाई, हां—यही सच है।'

'ठीक है, मुझे आपकी बात पर पूरा विश्वास है कि आपको इस साजिश में जानबूझकर फांसा जा रहा है, वरना इस उम्र में आपका किसी हरम से क्या वास्ता?'

'बिल्कुल सही बात है—मगर अब कुछ ऐसा रास्ता तो बताओ मेरे भाई कि इस मुसीबत से मेरी जान छूटे!' रुआंसा होकर बूढ़ा आलिम बोला।

'आप मेरे साथ आइए।'

नसरुद्दीन उसे पीछे वाले कक्ष में ले आया जिसमें ईंधन आदि रखा था फिर जो जनाना कपड़े पहने हुए थे, उनकी पोटली उसकी ओर बढ़ाकर बोला—'ये कपड़े मैंने अपनी बीवी के लिए खरीदे हैं। यदि आप चाहें तो आपकी पोशाक व साफे आदि से मैं इन्हें बदल सकता हूं—जनाने कपड़े पहनकर व नकाब से चेहरा ढककर आप सिपाहियों व जासूसों की नजरों से बच सकते हैं, और हां, अपने ये पोथी-पत्रे भी यहीं छोड़ जाना, वरना इनसे भी आपकी शिनाख्त हो सकती है।'

'हां, हां—यही ठीक रहेगा।' बूढ़ा तुरन्त अपने कपड़े उतारने लगा। उसने जनाने कपड़े पहन लिए।

और जब वह पूरे कपड़े पहनकर तैयार हो गया तो नसरुद्दीन उसे बाहर ले आया और उसे ऊंट पर बैठाकर बोला—'खुदा हाफिज ऐ आलिम! औरतों वाली मधुर व पतली आवाज में बोलना न भूलना।'

इधर आलिम की रवानगी हुई, उधर मुल्ला नसरुद्दीन की आंखें चमक उठीं, अब उसके लिए महल में दाखिल होने का रास्ता साफ हो चुका था।

अब उसकी गुलजान का कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता था।

मौलाना हुसैन बने नसरुद्दीन

लड़ाई लगभग शान्त हो चुकी थी।

अधिकांश नागरिक अपने-अपने घरों में जा चुके थे। सैनिक बाजार के चप्पे-चप्पे पर फैल चुके थे। बहुत से लोग गिरफ्तार हुए थे। अधिकांश बाजार बंद हो चुका था। इक्का-दुक्का छोटी-मोटी दुकानें ही खुली हुई थीं।

उधर अमीर ने दरबार की आपातकालीन सभा बुलाई हुई थी।

मरघट जैसा सन्नाटा सभा में छाया हुआ था। हर छोटा-बड़ा अधिकारी वहां मौजूद था, मगर सभी के चेहरों पर डर-दहशत और आशंका के साए लहरा रहे थे।

अमीर अपने शानदर तख्त के सामने पीठ पर दोनों हाथ बांधे बड़ी बेचैनी से चहलकदमी कर रहे थे।

एक ओर प्रधानमंत्री बख्तियार और अर्सला बेग खड़े थे। उन दोनों के चेहरों

पर फटकार-सी बरस रही थी। दिल-ही-दिल में वे मुल्ला नसरुद्दीन को करोड़ों गालियां बक चुके थे, इसके बावजूद भी गालियों का सिलसिला जारी था।

एकाएक अमीर रुके और सब पर एक दृष्टि डालकर बोले—'यहां जो भी कुछ हुआ या हो रहा है, सब आप लोगों के सामने है, अब आप लोगों की क्या राय है? इस मुसीबत से कैसे छुटकारा पाया जाए, यह सवाल हम पहली बार नहीं कर रहे हैं।'

सब मौन थे, कोई कुछ न बोला। सब सिर झुकाए बैठे रहे।

उन्हें खामोश देखकर एकाएक अमीर की मुखमुद्रा बदल गई। उनके चेहरे पर भूकम्प के से भाव दिखाई देने लगे, अब तो कई लोगों की जुबानें तालू से जा लगीं, हलक सूख गए। सबसे बुरा हाल बख्तियार और अर्सला बेग का था। मुल्क में अमन-चैन का पूरा दारोमदार उन्हीं पर था।

मगर इससे पहले कि अमीर कोई सख्त हुक्म जारी करते कि एक कर्मचारी उनके सम्मुख हाजिर हुआ और बोला—'आका का इकबाल बुलन्द रहे। महल के फाटक पर एक अजनबी आया हुआ है जो खुद को बगदाद का आलिम, मौलादा हुसैन बताता है। उसका कहना है कि...।'

'मौलाना हुसैन...!' अमीर ने उसकी पूरी बात सुने बिना ही हुक्म दनदनाया—'उन्हें अदब के साथ भीतर लाया जाए।'

कर्मचारी चला गया।

अमीर के चेहरे का तनाव तेजी से कम होने लगा। उनके चेहरे पर विश्वास के ऐसे चिन्ह दिखाई देने लगे, मानो अब उनकी सारी परेशानियां दूर होने वाली हों।

कुछ देर बाद आलिम मौलाना हुसैन लगभग दौड़ता हुआ दरबार में आया—'ऐ मेरे आका! इस जगत के चांद-सूरज! दुनिया के सरताज! अमीरे आजम! यह गुलाम आपके लिए दुआ करता हुआ...रात-दिन सफर करके एक बड़े खतरे से आगाह करने आया है। अमीर मुझे बताएं कि क्या आजकल कोई नई औरत आपके जीवन में आई है या आने वाली है...क्या अमीर उससे मिले हैं?'

'क्या कहा—औरत?' अमीर ने तख्त पर बैठे-बैठे बेचैनी से पहलू बदला—'हां, एक औरत लाई तो गई है, मगर हम अभी उससे मिले नहीं, बल्कि इरादा बना रहे हैं।'

'खुदा का शुक्र है...खुदा का लाख-लाख शुक्र है।' मुल्ला नसरुद्दीन ने राहत की सांस ली, फिर उठा और दोनों हाथ आसमान की ओर उठाकर बोला—'अलहम दुलिल्लाह! अल्लाह ने विद्वता और गम्भीरता का सितारा डूबने से बचा लिया। मैं अमीरे आजम को बता देना चाहता हूं कि कल रात सितारों व ग्रहों की स्थिति ऐसी थी जो कि उनके लिए काफी खतरनाक थी। इस

नाचीज गुलाम ने, जो कि अमीर के कदमों की धूल चूमने के काबिल भी नहीं, सितारों की चाल देखकर यह पता लगाया है कि जब तक सितारे शुभ घरों में दाखिल न हो जाएं, तब तक अमीर को किसी भी औरत के सम्पर्क में नहीं आना चाहिए। साथ ही यह भी सच है कि यदि आप ज्योतिष शास्त्र की चेतावनी का अपमान करते हैं तो आपकी बर्बादी सुनिश्चित है। यह तो अल्लाह का शुक्र है कि मैं सही समय पर पहुंचकर आपको सावधान कर सका।'

अमीर ने बीच में ही उसे टोका—'तुम कहना क्या चाहते हो मौलाना हुसैन?'

मुल्ला नसरुद्दीन भी अपनी किस्म के एक ही शख्स थे। पूरे आत्मविश्वास से वह बोलते चले गए—'मेरे आका! मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि मैं ठीक समय आपको सचेत करने आ पहुंचा हूं। मैं आज के दिन अमीर को किसी औरत को छूने से रोक सका, मेरे आका! मैंने सारी प्रजा को गमगीन होने से बचा लिया।'

मुल्ला नसरुद्दीन प्रसन्नता और आत्मविश्वास का ऐसा प्रदर्शन कर रहा था कि अमीर को उसकी बात पर विश्वास करना ही पड़ा।

'जब मुझे अमीरे आजम का हुक्म मिला कि मैं उन्हें अशुभ ग्रह—नक्षत्रों के अनिष्टकारी प्रभाव के विषय में सचेत करूं, तो मुझे बड़ी खुशी हुई और मैं जरूरी तैयारियां करके तुरन्त ही बुखारा के लिए चल दिया। मैंने चलने से कई दिन पहले अमीर की जन्मपत्री तैयार की और उसी समय से अमीर की खिदमत में जुट गया। कल जैसे ही मैंने खगोल नक्षत्रों की जांच की तो पता चला कि वे अमीर के लिए अशुभ व अनिष्टकारी राशि में हैं। सितारा अल्-शुला, जो डंक की अलामत है, सितारा अलकल्ब जो दिल का सूचक है, के मुकाबले गर्दिश में है। आगे मैंने तीन सितारे अलगफ जो कि औरत के नकाब की अलामत हैं, दो सितारे अल-इकलील जो कि ताज की अलामत हैं तथा दो सितारे अश्-शरतान जो सींग की अलामत हैं, देखे...।'

मुल्ला नसरुद्दीन एक पल के लिए रुका, फिर कई गहरी सांसें लीं और दरबार का जायजा लिया। सभी दम साधे उसकी बकवास सुन रहे थे।

वह धारा प्रवाह इस प्रकार बोले जा रहा था, मानो बहुत बड़ा आलिम हो।

'मैंने मंगल को देखा, जो मंगल ग्रह का दिन है तथा यह दिन शुक्रवार के खिलाफ बड़े लोगों व अजीम शख्सियतों की मौत का सूचक है। अमीरों के लिए बड़ी ही बदशगुनी का प्रतीक है। यह सब बुर्ज और रास देखकर मैं समझ गया कि ताजपोश अमीर की मौत के डंक का खतरा बना रहेगा, यदि वह किसी औरत के नकाब को छुएगा। अतः मेरे आका! मैं आपको सावधान करने की गर्ज से फौरन भागा चला आया। मैंने रात-दिन दौड़ाकर दो ऊंट मार डाले, बाद में मैं बाकी रास्ता पैदल तय करके यहां पहुंचा हूं।'

अमीर अत्यधिक प्रभावित दिखाई देने लगे। वह बोले—'मौलाना हुसैन! क्या यह सच है कि माबदौलत पर इतना भारी खतरा मंडराया हुआ है। क्या यह बात तुम दावे से कह सकते हो? कहीं तुमसे कोई गलती तो नहीं हुई?'

'गलती और मुझसे? तौबा-तौबा—हुजुरे आली! बगदाद से बुखारा तक आप एक भी शख्स ऐसा नहीं गिना सकते जो इलाज करने में या सितारों के विषय में मुझसे ज्यादा जानता हो या जो मेरी बराबरी कर सके। ऐ अमीरे आजम! आप अपने आलिमों से मालूम कर लें कि जन्मपत्री में मैंने सितारों को ठीक-ठीक बताया है या नहीं? उनके प्रभाव की खोज ठीक से की है या नहीं।'

अमीर ने टेढ़ी गर्दन वाले आलिम की ओर देखा। वह बामुश्किल अपने स्थान से उठा और बोला—'ज्योतिष विद्या में अद्वितीय मेरे साथी मौलाना हुसैन ने सितारों को सही-सही नामांकित किया है। इससे सिद्ध होता है कि इनके इल्म पर सन्देह नहीं किया जा सकता।'

यहां तक तो ठीक था, मगर इससे आगे उस टेढ़ी गर्दन वाले ने जो कुछ भी कहा, उसमें मुल्ला नसरुद्दीन को बदनीयती और जलन की बू आ रही थी।

वह कह रहा था—'विद्वता में सर्वोपरि मौलाना हुसैन साहब ने अमीरे आजम को चांद की सोलहवीं मंजिल के विषय में तथा उन राशियों के बारे में क्यों नहीं बताया जिनमें वह मंजिल आती है, क्योंकि कैफियतों के बिना यह कहना व्यर्थ है कि मंगल का दिन अजीम शख्सियतों की मौत का दिन है, इनमें ताजपोश भी शामिल है। मंगल ग्रह की मंजिल एक राशि में है, उरुज दूसरे में, ठहराव तीसरे में तथा उतार चौथे में, इस प्रकार मंगल ग्रह के एक नहीं, चार घर हैं लेकिन विद्वान मौलाना हुसैन साहब ने एक ही दर्शाया है।'

अपनी बात कहकर आलिम खतरनाक अंदाज में मुस्कराया।

दरबारी लोग आपस में कानाफूसी करने लगे।

वे सोच रहे थे कि नया आलिम उलझन में फंस गया है, मगर वे क्या जानते थे कि उनके सामने आलिमों का आलिम मुल्ला नसरुद्दीन खड़ा है, जिसने जीवन में कभी हार मानना नहीं सीखा। वह बिना किसी झिझक या परेशानी के, बड़े ही नम्र लहजे में बोला—'मेरे विद्वान व होशियार साथी! इल्म के इस दूसरे क्षेत्र में भले ही आप मुझसे अव्वल जानते हों, लेकिन जहां तक सितारों का सवाल है, उनके शब्दों से साफ जाहिर है कि विद्वान इब्न बज्जा के ज्ञान से वे पूरी तरह नावाकिफ हैं। इब्न-बज्जा का दावा है कि मंगल की मंजिल हमल तथा अकबर (मेष) व वृश्चिक की राशि में है, उसका उतार कर्क, उरुज मकर व ठहराव तुला राशि में है, लेकिन बहरसूरत वह मंगल का ही है तथा उस पर उसकी वक्र दृष्टि होने से ताजपोशों के लिए अनिष्टकारी व घातक है।'

इस प्रकार धारा प्रवाह रूप से बोलते वक्त मुल्ला नसरुद्दीन को इस बात की तनिक भी परवाह नहीं थी कि वह सही बोल रहा है या गलत। वह तो केवल इतना

जानता था कि ऐसे मौकों पर बड़बोले और बातूनी लोगों की ही जीत होती है।

वह आलिम के साथ भिड़ने के लिए पूरी तरह तैयार था, लेकिन आलिम उसकी चुनौती स्वीकार न कर सका। दरबारी उल्टे उसे ही घूरने लगे क्योंकि मुल्ला नसरुद्दीन के धारा प्रवाह बोलने से वे काफी प्रभावित दिखाई दे रहे थे।

'यदि तुमने सभी सितारों का सही नाम व अनुभव बताया है...।' एकाएक ही अमीर बोल उठे—'और तुम्हारी बात पूरी तरह ठीक है तो भी हमारी समझ में एक बात नहीं आ रही है कि हमारी जन्मपत्री में सितारे अश-शरतान कहां से आ गए जो कि सींगों की अलामत (निशानी) हैं? मौलाना हुसैन! तुमने वास्तव में ठीक समय पर आकर हमें सचेत किया है, क्योंकि आज सवेरे ही एक जवान लड़की हमारे हरम में लाई गई है। हम उससे मिलने की तैयारी...।'

'नहीं...मेरे आका...नहीं...।' एकाएक ही खौफजदा होते हुए मुल्ला नसरुद्दीन चीखा—'उसे अपने ख्यालों से ही दूर कर दीजिए। आपके लिए तो उसके बारे में सोचना भी गुनाह है।'

जिस प्रकार चीखकर असभ्य तरीके से वह अमीर को सम्बोधित कर रहा था, हालांकि वह दरबारी सभ्यता के विपरीत था, किन्तु वह जानता था कि इस प्रकार का नाटक करके ही वह अमीर के अधिक निकट पहुंच सकता है। इसे अमीर के प्रति उसकी वफादारी ही माना जाएगा।

इस प्रकार उसने अमीर से उस लड़की को न छूने की पूरी गर्मजोशी से आरजू-मिन्नत की, वह बोला—'ऐ मेरे अमीरे आजम! मैं चाहता हूं कि मुझे आंसुओं का दरिया बहाना न पड़े और न ही गम का काला लिबास पहनना पड़े।'

मौलाना हुसैन के इस परामर्श से और परामर्श देने के ढंग से अमीर अत्यधिक प्रभावित दिखाई देने लगे।

वह बोले—'मौलाना हुसैन! घबराओ मत, तसल्ली रखो, हम अपनी रिआया के दुश्मन नहीं हैं जो हम उसे आंसू बहाने पर मजबूर करें। हम तुम्हें विश्वास दिलाते हैं कि हम अपने जीवन की पूरी हिफाजत करेंगे क्योंकि हमारा जीवन हमारी रिआया की अमानत है। मेरा विश्वास करो कि तुम्हारी सलाह के बिना हम उसका तो क्या, किसी भी औरत का मुंह नहीं देखेंगे।'

फिर उन्होंने हुक्का गुड़गुड़ाया, उसके बाद हुक्के की नली आलिम की ओर बढ़ा दी। नए आलिम ने सिर झुकाकर तहेदिल से अमीर की इस मेहरबानी को कुबूल किया। यह देखकर सभी दरबारी ईर्ष्या से जल उठे।

प्रधानमंत्री बख्तियार और सेनापति अर्सला बेग तो ऐसा महसूस कर रहे थे जैसे उन्हें भरे दरबार में नंगा कर दिया गया हो।

तभी अमीर ने ऐलान किया—'माबदौलत नए आलिम मौलाना हुसैन को अपने राज्य का विद्वान शिरोमणि मुकर्रर करने की मेहरबानी करते हैं, उनकी

विद्वता तथा ज्ञान, साथ ही माबदौलत के प्रति वफादारी, लोगों के लिए मिसाल है।'

अमीर बोलते जा रहे थे और दरबार के मुहर्रिर तेजी से रजिस्टरों पर अपनी कलम चला रहे थे, फिर अमीर ने सभी दरबारियों को सम्बोधित किया—'जहां तक तुम लोगों का सवाल है, माबदौलत अपनी सख्त नाराजगी जाहिर करते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि मुल्ला नसरुद्दीन द्वारा फैलाए गए खतरों के अतिरिक्त भी माबदौलत के सिर पर मौत का खतरा मंडरा रहा था, जिसकी तरफ तुममें से किसी ने भी उंगली न उठाई। मौलाना हुसैन! जरा इन मूर्खों के चेहरे तो देखो, बिल्कुल गधे नजर आते हैं, वास्तव में पूरी दुनिया में किसी भी बादशाह ने ऐसे लापरवाह मंत्री न रखे होंगे।'

मौका अच्छा था, मुल्ला नसरुद्दीन ने फौरन आग में घी डाला—'आप बिल्कुल ठीक कहते हैं आलम पनाह! मैं तो यह भी कहना चाहता हूं कि इन मूर्खों के चेहरों पर नेकी और ईमानदारी की झलक भी दिखाई नहीं देती।'

'ये लोग चोर हैं, सब-के-सब चोर—।' अमीर ने पूरे आत्मविश्वास और क्रोध से कहा—'ये दिन-रात हमें लूटते रहते हैं। हमें महल की हर चीज पर नजर रखनी पड़ती है। बादशाह होकर हमें खुद अपनी छोटी-छोटी वस्तुओं की हिफाजत करनी पड़ती है। ये लोग अक्सर हमारी कोई-न-कोई वस्तु गुम कर देते हैं। आज सुबह ही हम अपना रूमाल बाग में भूल आए...मौलाना हुसैन! हमें बताते हुए बड़ी शर्म आ रही है कि आधा घंटा भी नहीं लगा इन्हें वह रूमाल गायब करने में—तुम तो समझ ही गए होगे न मौलाना कि आखिर यह गंदी और गिरी हुई हरकत किसने की होगी?'

अमीर बोल रहे थे और मुल्ला नसरुद्दीन की पैनी नजरें दरबारियों पर थिरक रही थीं। रूमाल का जिक्र आते ही उसने टेढ़ी गर्दन वाले आलिम को नजरें चुराते देखा, फिर उसने बड़ी सफाई से अपने लिबास की दाहिनी जेब दबाई। मुल्ला नसरुद्दीन की पारखी नजरों से उसकी यह हरकत छुप न सकी। वह बड़ी तसल्ली से अपने स्थान से उठा।

धीरे-धीरे चलता हुआ आलिम के पास पहुंचा, फिर बड़ी सफाई से उसके लिबास की जेब में हाथ डालकर उसने वह रूमाल खींच लिया जो सोने के तारों से कढ़ा हुआ था।

'अमीरे आजम! क्या इसी रूमाल के खो जाने पर आप दुःखी हैं?'

यह देखकर आश्चर्य और भय के मारे सभी दरबारी सकते में आ गए। नया आलिम वास्तव में ही खतरनाक प्रतिद्वंद्वी सिद्ध हो रहा था।

यह टेढ़ी गर्दन वाला वही आलिम था जिसने मुल्ला नसरुद्दीन का विरोध किया था और अब पहले ही झटके में मुल्ला नसरुद्दीन ने उसे तबाह कर दिया। उसका भांडा फूट चुका था।

यह सब देखकर भय के मारे सभी अधिकारियों के दिल बैठे जा रहे थे।

यह देखकर अमीर गरजकर बोले—'वाकई मौलाना हुसैन! वाकई! तुम बड़े काम के आदमी हो, अल्लाह गवाह है, यही हमारा रूमाल है। तुम कमाल के आदमी हो मौलाना हुसैन।'

फिर वह दरबारियों की ओर पलटे—'आखिर तुम रंगे हाथों पकड़े ही गए। तुम लोगों ने हमारा बड़ा नुकसान किया है मगर अब एक धागा भी तुम लोग नहीं चुरा पाओगे। जहां तक इस गंदे चोर का सवाल है, इसके पूरे शरीर के बाल नोंचकर इसके तलवों में सौ बेंत मारे जाएं। इसे नंगा करके उल्टा गधे पर बैठाया जाए तथा 'चोर-चोर' कहते हुए इसे सारे शहर में घुमाया जाए।'

बादशाह का हुक्म सुनते ही अर्सला बेग ने सैनिकों को इशारा किया, अगले ही पल सिपाहियों ने आलिम को दबोच लिया, फिर धकेलते हुए बाहर ले गए।

आलिम बुरी तरह चीख-चिल्ला रहा था।

बाहर सिपाही उस पर बुरी तरह पिल रहे थे।

इस मौके पर जिस किसी सिपाही को उससे कोई खुंदक थी, वह बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहा था।

कुछ देर बाद जब उसे दरबार में पेश किया गया तो वह बिल्कुल नंगा था तथा उसके शरीर के सारे बाल नुचे हुए थे। वह बड़ा ही भद्दा और कुरूप नजर आ रहा था। उसका पूरा शरीर खून से लहूलुहान था। ऐसा लगता था कि उसी दाढ़ी और साफे ने ही आज तक उसकी बदकारी और बदनीयती को छिपा रखा था। ऐसी शक्ल वाला व्यक्ति गुण्डा, बदमाश और चोर ही हो सकता था।

'इस पाजी को मेरी नजरों के सामने से दूर करो—इसके साथ वैसा ही सुलूक किया जाए, जैसा हमारा हुक्म है।'

अगले पल सैनिक उसे किसी जानवर की भांति धकियाते हुए बाहर ले गए।

अमीर उसके जाने के बाद काफी देर तक नए आलिम से बातें करते रहे। दरबारी शान्त भाव से खड़े या बैठे थे। उन सभी के चेहरों पर हवाइयां-सी उड़ रही थीं और अब तो वे नए आलिम से नजरें तक मिलाने से कतरा रहे थे।

सबसे बुरी हालत प्रधानमंत्री बख्तियार की थी। उसे अपने अधिकार छिनकर नए आलिम के हाथों में जाते दिखाई दे रहे थे और दिल-ही-दिल में वह उसे शिकस्त देने की नई योजना सोच रहा था।

अभी मौलाना हुसैन उर्फ नसरुद्दीन और अमीर के बीच सफर आदि की बातें चल ही रही थीं कि तभी एक पहरेदार दौड़ता-हांफता वहां आया और चीखते हुए बोला—'अमीरे आजम को मालूम हो कि राज्य में अशान्ति फैलाने वाले मुल्ला नसरुद्दीन को गिरफ्तार कर लिया गया है।'

'क्या?' अमीर उछलकर खड़े हो गए—'उसे फौरन दरबार में हाजिर किया जाए।'

अगले ही पल कुछ सिपाही एक बूढ़े को घसीटते हुए लाए और तख्त के सामने फर्श पर फेंक दिया।

वह था—असली मौलाना हुसैन। उसे देखते ही मुल्ला नसरुद्दीन को सारा दरबार घूमता हुआ प्रतीत होने लगा।

असली-नकली

बूढ़ा मौलाना हुसैन घुटनों के बल बैठकर बुरी तरह रोने लगा और अमीर से दोनों हाथ उठाकर रहम की भीख मांगने लगा।

'इस काफिर को खड़ा करो।' अमीर ने आदेश दिया।

अमीर का आदेश सुनते ही सिपाहियों ने उसे बाजुओं से पकड़कर खड़ा कर दिया, लेकिन इससे पहले कि अमीर कुछ कह पाते कि अर्सला बेग अपने स्थान से आगे बढ़ा और सिर झुकाकर बोला—'अमीरे आजम! कोई भी हुक्म सुनाने से पहले इस वफादार गुलाम की चंद बातें सुनने की मेहरबानी अता फरमाएं।'

'क्या कहना चाहते हो?'

'शहनशाहे आलम! ये नाचीज गुलाम कहना चाहता है कि ये शख्स मुल्ला नसरुद्दीन नहीं है। ये तो बूढ़ा है जबकि मुल्ला नसरुद्दीन एकदम जवान है। उसकी उम्र तीस-पैंतीस वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए—ये लोग तो किसी को भी मुल्ला नसरुद्दीन समझ बैठते हैं, इनाम के लालच में।'

यह सुनकर सिपाहियों में निराशा छा गई। वे सब इनाम पाने के लालच में थे, मगर अर्सला बेग ने उनकी आशाओं पर पानी फेर दिया।

तब बूढ़े ने कांपते स्वर में कहा—'मैं अमीरे आजम के महल के लिए बगदाद से रवाना हुआ और सीधा यहां आ रहा था। रास्ते में मेरी मुलाकात एक अजनबी व्यक्ति से हुई, उसने मुझे बताया कि बुखारा में पहुंचते ही मेरा सिर कलम कर दिया जाएगा। मेरा सिर काट डालने का हुक्म जारी कर दिया गया है। मैंने भय के कारण वेश बदलकर निकल भागने का मन बना लिया।'

अमीर के चेहरे पर एक अजीब किस्म की मुस्कान उभर आई। ऐसा लगा, मानो वह सब कुछ समझ गए हों—'अच्छा! तो तुम्हारी मुलाकात एक अजनबी व्यक्ति से हुई और तुमने उसका विश्वास भी कर लिया? यह किस्सा तो बड़ा अजीब है? और हम तुम्हारा सिर भला क्यों कलम करवा लेते?'

'क्योंकि कहा गया था कि मैंने खुलेआम...खुलेआम ऐलान किया है कि मैं अमीरे आजम के हरम में घुस जाऊंगा...लेकिन खुदा गवाह है मेरे आका...मेरे दिमाग में तो ऐसा विचार आया ही नहीं। मैं तो इतना बूढ़ा व कमजोर हो चुका हूं कि मैंने काफी दिन पहले ही, औरतों से अपने सम्बंध खत्म कर दिए।'

'हमारे हरम में घुस जाओगे?' अमीर ने होंठ भींचते हुए कहा।

उनके चेहरे के भावों से स्पष्ट था कि बूढ़े पर उनका शक बढ़ता ही जा रहा

है। अमीर इस बार फिर गुर्राए—'तुम कौन हो और कहां से आए हो?'
'मैं बगदाद का रहने वाला आलिम हकीम मौलाना हुसैन हूं। अमीरे आजम के आदेश पर मैं बुखारा आया हूं।'
'त...तुम मौलाना हुसैन?' अमीर ने अत्यधिक आश्चर्य जाहिर किया—'तुम्हारा नाम मौलाना हुसैन है—झूठ, एकदम झूठ, सफेद झूठ, ऐ चालबाज बूढ़े, तुझे झूठ बोलते हुए शर्म आनी चाहिए।'
'हुजूर! मैं बिल्कुल सच कह रहा हूं—मैं ही मौलाना हुसैन हूं।'
'तुम बिल्कुल ही झूठ बोलते हो—यह रहा मौलाना हुसैन!' इसके साथ ही अमीर ने मुल्ला नसरुद्दीन की ओर संकेत किया—मुल्ला नसरुद्दीन फौरन आगे आ गया।
मुल्ला नसरुद्दीन को देखते ही वह बूढ़ा सहमकर पीछे हट गया, फिर एकाएक ही जोर से चीखा—'हां...हां...यही है वह आदमी—मेरे आका! इसी ने मुझे सिर कटने व हरम में घुसने वाली बात कही थी।'
अमीर फौरन मुल्ला नसरुद्दीन की ओर पलटे—'यह क्या हो रहा है मौलाना हुसैन?'
'मौलाना हुसैन तो मैं हूं—यह नकली है, इसने मेरा नाम चुरा लिया है।'
बस, यही एक बात बूढ़ा मौलाना गलत कह गया। इस एक बात ने मुल्ला नसरुद्दीन के दिमाग की खिड़की-दरवाजे खोल दिए।
वह फौरन अमीर की ओर पलटकर बोला—'अमीरे आजम! मेरी गुस्ताखी माफ हो! लेकिन, इसकी बेशर्मी भी वास्तव में हद से गुजर गई है। अभी तो इसने यही कहा है कि मैंने इसका नाम चुरा लिया है। अभी ये कहेगा कि मैंने इसके कपड़े चुरा लिए हैं?'
'हां, हां—यह पोशाक भी मेरी है।'
'और शायद...यह साफा, ये पटका, ये कमरबंद...मेरा ख्याल है कि ये सब चीजें भी आपकी ही हैं, जो कि मैंने चुरा लीं हैं।'
'हां, हां—ये सब चीजें मेरी हैं।'
मुल्ला नसरुद्दीन मुस्कराते हुए अमीर की ओर पलटा—'जहांपनाह! आप खुद ही देख लें कि यह बूढ़ा कितना झूठा और मक्कार है।'
अमीर ने सहमति में सिर हिलाया।
'अमीरे आजम! अभी कुछ देर बाद यह कहने लगेगा कि इस पाक शहर बुखारा का अमीरे आजम ही यही है। ऐसे नापाक इरादे वाला मनुष्य कोई भी गिरी हुई जलील हरकत कर सकता है।'
'तुम्हारी बात बिल्कुल ठीक है मौलाना हुसैन, वाकई यह बड़ा खतरनाक है। मुझे इसकी नीयत पर शक है। हमारी राय में तो इसका सिर फौरन ही धड़ से अलग कर दिया जाना चाहिए।'

यह सुनते ही आलिम चेहरा छिपाकर रोने लगा।

किन्तु मुल्ला नसरुद्दीन ऐसा नहीं चाहता था। वह तो जानता था कि यह बूढ़ा निर्दोष है और किसी निर्दोष को वह इस प्रकार नहीं मरने देना चाहता था, भले ही वह अपने छल-प्रपंच से लोगों को ठगता रहा हो, वह बोला—'अमीरे आजम! मेरी बात सुनने की मेहरबानी फरमाएं। इसका सिर तो बाद में भी काट लिया जाएगा। मैं चाहता हूं कि इसके मरने से पहले इसका नाम पता तथा इसके और कौन-कौन से साथी यहां आए हुए हैं, यह सब पता लगा लिया जाए, हो सकता है कि ये कोई जादूगर हो और आपको कोई शारीरिक या रूहानी नुकसान पहुंचाने का इरादा रखता हो।'

'ठीक है मौलाना, जैसा तुम मुनासिब समझो, करो।' अमीर बोले—'लेकिन यह बदमाश भागने न पाए। यह तुम्हारी जिम्मेदारी होगी।'

'मैं जान की बाजी लगाकर भी यह जिम्मेदारी बखूबी निभाऊंगा मेरे आका।'

और फिर—

लगभग आधा घंटा बाद अमीर के विद्वान शिरोमणि तथा प्रधान ज्योतिषी मुल्ला नसरुद्दीन उर्फ मौलाना हुसैन को नए मकान में पहुंचा दिया गया।

मुल्ला नसरुद्दीन ने उस बूढ़े को ऊंची मीनार नुमा मकान के एक कमरे में डाल दिया, फिर बाहर से ताला लगाकर चाबी अपने पास रख ली।

मुल्ला की मुट्ठी में अमीर

और फिर—

मुल्ला नसरुद्दीन अपने दिमागी कमाल दिखाकर एक के बाद एक सफलता की सीढ़ियां चढ़ता चला गया। महल में आए उसे कई दिन गुजर चुके थे। वह अमीर का इस कदर विश्वासपात्र बन गया कि अब उसके मुंह से निकली बात ही अमीर का हुक्म मानी जाती थी। अमीर आंख मूंदकर उसकी बात का विश्वास किया करते थे।

यह देखकर प्रधानमंत्री बख्तियार और सेनापति अर्सला बेग जलते रहते थे। उनकी ताकत दिन-पर-दिन कम होती जा रही थी। मुल्ला नसरुद्दीन ने कई मौकों पर उन्हें अमीर की नजरों से गिराया था, अब तो वे दोनों बाकी दरबारियों के साथ मिलकर इसी कोशिश में लगे रहते थे कि किस प्रकार मौलाना हुसैन को अमीर की नजरों से गिराया जाए? लेकिन यह मुल्ला नसरुद्दीन की हाजिर जवाबी ही थी कि वे किसी प्रकार भी उसकी साख को धब्बा न लगा पा रहे थे।

कभी-कभी अमीर को मुल्ला नसरुद्दीन की याद भी आ जाती थी और जब वह मौलाना हुसैन से इसका जिक्र करता तो सीना फुलाकर मुल्ला नसरुद्दीन कहता कि वह उसके खौफ से डरकर बगदाद भाग गया है। इस प्रकार वह अमीर को बेवकूफ बना रहा था।

हालांकि अमीर पूरी तरह उसकी मुट्ठी में था, मगर इसके बावजूद मुल्ला नसरुद्दीन को अभी तक हरम में घुसने का मौका नहीं मिला था।

असली मौलाना हुसैन के विषय में उसका कहना था कि उसे अभी सजाएं दी जा रही हैं ताकि वह अपनी असलियत कुबूल कर ले, मगर हकीकत ये थी कि मुल्ला नसरुद्दीन ने सभी खाने-पीने, सोने-बैठने की सुविधाएं देकर समझा दिया था कि वे कुछ दिन आराम से यहां कैद रहें।

दुआ कबूल हुई

मुल्ला नसरुद्दीन अक्सर सोचता था कि ऐसी क्या तिकड़म भिड़ाई जाए जिससे उसे हरम में घुसने का मौका मिले? वह खुदा से दुआएं करता कि या खुदा—तूने कई मुश्किल मौकों पर मेरी मदद की है, इस बार भी कोई ऐसा रास्ता निकाल, जो मैं अपनी मासूम गुलजान को इसके चंगुल से बचा सकूं।

उस बूढ़े बाप की दुआ कुबूल कर मेरे अल्लाह! जिसका कलेजा अपनी बेटी के लिए तड़प रहा है।

और फिर—

एक दिन जैसे खुदा ने उसकी दुआ कुबूल कर ली।

गुमसुम मुल्ला नसरुद्दीन अपने कमरे में बैठा था कि तभी एक सैनिक ने आकर द्वार खटखटाया और अमीर का संदेश दिया कि मौलाना शाही बाग में अमीर के हुजूर में हाजिर हों।

मुल्ला नसरुद्दीन तुरन्त उनके हुजूर में हाजिर हुए। जाकर देखा, अमीर एक दरख्त के नीचे आराम फरमा रहे थे, लेकिन थे बड़े उदास और गमगीन।

मुल्ला नसरुद्दीन ने सलाम अर्ज किया और पूछा—'गुस्ताखी माफ हो आलम पनाह! क्या ये खाकसार जान सकता है कि हुजूर किस गम में डूबे हैं और बंदे को किस सबब से याद किया है?'

'हम बहुत पेरशान हैं मौलाना! दुनिया जहान से परेशान हैं। हमें लगता है कि हम बादशाह हैं ही नहीं।' अमीर अत्यधिक दुःखी स्वर में बोले।

'ऐसी क्या बात है जहांपनाह!' चौंकने की शानदार एक्टिंग करते हुए मुल्ला नसरुद्दीन ने पूछा—'बंदे के होते आप इस प्रकार दुःखी हैं, 'यह तो मेरे लिए बड़ी गैरत की बात है।'

'यूं तो बहुत परेशानियां हैं मौलाना, मगर हमारी सबसे बड़ी सिरदर्दी, हमारी नई रखैल है।'

'न...नई रखैल!' इस बार मुल्ला नसरुद्दीन के चेहरे पर तेजी से चिन्ता के भाव उभरे—'क्या हुआ उसे, जहांपनाह! क्या किया उसने? क्या हरम से भाग गई?'

'नहीं, नहीं मौलाना, यह बात नहीं है।' अमीर बोले—'दरअसल उसने

पिछले तीन दिनों से खाना नहीं खाया है, वह बीमार है। शायद उसकी जान भी खतरे में हो। हमें उसकी बहुत चिन्ता है, यदि हम एक बार भी उसके साथ हमबिस्तर हो लेते तो हमें उसकी बीमारी या मौत का शायद इतना गम न होता—मगर...अब तुम हमारी परेशानी का खुद अंदाजा लगा सकते हो मौलाना।'

'यदि ऐसी बात थी तो मुझे पहले क्यों नहीं बताया गया मेरे आका—आखिर यह आलिम, हकीम मौलाना हुसैन किस मर्ज की दवा है, मेरे आका! आप बिल्कुल भी चिन्ता न करें—हकीम मौलाना हुसैन के होते कोई बीमारी चाहे कितनी ही खतरनाक क्यों न हो, उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकती।'

'मौलाना हुसैन!' अमीर ने अपनी कुर्सी पर बेचैनी से पहलू बदला और बोला—'क्या तुम पूरे विश्वास से कह सकते हो कि वह तुम्हारे इलाज से बच सकती है?'

'माबदौलत अच्छी तरह जानते हैं कि बगदाद से बुखारा तक मेरे जैसा दूसरा कोई होशियार हकीम नहीं है।' खम ठोककर मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा।

'जाओ मौलाना हुसैन! जाओ! उसके लिए अच्छी दवा तैयार करो।'

'अमीरे आजम!' अब मुल्ला नसरुद्दीन ने अपना पत्ता फेंका—'पहले मुझे रोगी से मिलकर उसके रोग का पता लगाना होगा...उसका परीक्षण करना होगा।'

'रोगी का परीक्षण?' अमीर ने आंखें तरेरी—'मौलाना! क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि हरम में पराए मर्दों का झांकना भी गुनाह है—माबदौलत के अलावा वहां किसी के कदम... ।'

'मुझे क्षमा करें शहंशाहे आजम!' घुटनों तक सिर झुकाकर मुल्ला नसरुद्दीन ने बड़े ही नम्र स्वर में कहा—'मैं हकीम हूं और बिना रोगी का परीक्षण किए भला उसे कोई दवा कैसे दे सकता हूं?'

यह सुनकर अमीर लगभग गुर्राते हुए बोला—'अरे नाचीज गुलाम! क्या तू इतना भी नहीं जानता कि हमारी दासियों का मुंह मरने से पहले कोई भी नहीं देख सकता?'

मुल्ला नसरुद्दीन ने फौरन अमीर की बात को लपक लिया—'ऐ मेरे आका! इस नाचीज गुलाम ने कब कहा कि मैं उनका मुंह देखना चाहता हूं, मेरे सरताज! मैं तो अपने इल्म में इतना माहिर हूं कि उनका हाथ...बल्कि हाथ का नाखून देखकर ही उनके रोग को समझ सकता हूं—चेहरे की तरफ नजरें उठाने की गुस्ताखी तो मैं सपने में भी नहीं कर सकता।'

'हाथ देखकर!'

अमीर का गुस्सा पानी के बुलबुले की भांति समाप्त हो गया। वह बोले—'यह तुमने पहले क्यों नहीं बताया, इसमें तो कोई हर्ज नहीं है। तुम्हारे

साथ हम भी हरम में चलेंगे। यदि तुम हमारी रखैल का सिर्फ हाथ ही देखोगे तो हमें कोई ईर्ष्या नहीं होगी।'

मुल्ला नसरुद्दीन ने सोचा कि यहां गुलजान से अकेले में तो मुलाकात सम्भव ही नहीं है, अतः अमीर साथ रहें और मैं उसे दिलासा दे दूं भला इससे अच्छी बात और क्या होगी।

गुलजान से मुलाकात

प्रतीक्षा की घड़ियां जल्दी ही समाप्त हो गईं और वह घड़ी आ पहुंची, जब मुल्ला नसरुद्दीन को अमीर के हरम में घुसने का हसीन मौका मिल गया। गुलजान को एक नजर देखने के लिए उसकी आंखें तरस रही थीं। हरम के मुख्य द्वार तक आते-आते मुल्ला नसरुद्दीन ने रास्ते का पूरा नक्शा अपने दिमाग में बैठा लिया था। पूरे रास्ते में सख्त पहरा था।

हिजड़ा उन्हें लेकर एक कमरे में आया।

कमरे के बीचो-बीच एक पर्दा लटक रहा था, उस बेशकीमती पर्दे के पीछे गुलजान एक नर्म बिस्तर पर बैठी थी।

झीने पर्दे के पार उदास और गुमसुम बैठी गुलजान को मुल्ला नसरुद्दीन साफ-साफ देख रहा था। अपनी प्यारी गुलजान को देखकर मुल्ला नसरुद्दीन के सीने में हूक-सी उठी और उसका दिल चाहा कि पर्दा हटाकर अन्दर घुसे और अपनी गुलजान को सीने से लगा ले, मगर चाहकर भी वह ऐसा न कर सका।

किसी प्रकार उसने अपने पर काबू पाया और धीरे से गुलजान को पुकारा।

'गुलजान!'

उसकी आवाज सुनते ही गुलजान के मुख से हैरत और दहशत भरी चीख निकल पड़ी।

मुल्ला नसरुद्दीन को आशंका हुई कि घबराहट में कहीं गुलजान उसे असली नाम से न पुकार बैठे, अतः बड़ी जल्दी से वह बोला—'मेरा नाम मौलाना हुसैन है। मैं नया हकीम नजूमी और आलिम हूं और अमीर की खिदमत के लिए बगदाद से आया हूं। तुम समझ रही हो न गुलजान! मैं...।' बोलते-बोलते वह रुका और अमीर की तरफ पलटा—'शायद यह मेरी आवाज सुनकर डर गई है। हो सकता है कि अमीरे आजम की गैर मौजूदगी में इस हिजड़े ने इसके साथ कोई बदसलूकी की हो।'

अमीर ने क्रोधित नजरों से हिजड़े को घूरा।

हिजड़ा कांपता हुआ जमीन तक झुक गया। दहशत के मारे एक शब्द भी उसके हलक से न फूटा।

'ऐ गुलजान!' मुल्ला नसरुद्दीन पुनः गुलजान से मुखातिब हुआ—'तुम्हारे

सिर पर मौत का साया मंडरा रहा है, लेकिन विश्वास रखो कि मैं तुम्हें बचा लूंगा। तुम्हें मुझ पर पूरा भरोसा करना चाहिए। मैं हर परेशानी, मुसीबत और रोग पर काबू पा सकता हूं।'

मुल्ला नसरुद्दीन की आवाज वह लाखों में पहचान सकती थी। यह जानकर कि मुल्ला नसरुद्दीन उस तक आ पहुंचा है, उसकी खुशी का ठिकाना न रहा, मगर सावधान भी थी, वह जानती थी कि उसकी कोई भी गलत हरकत मुल्ला नसरुद्दीन का सिर कलम करवा सकती है, अतः बड़ी बारीक और धीमी आवाज में वह बोली—'मैं आपकी बातें सुन रही हूं। मैं आपको जानती हूं तथा आपका विश्वास करती हूं।'

'ऐ गुलजान! तुम जरा मुझे अपना हाथ दिखाओ, ताकि मैं तुम्हारे नाखूनों के रंग से तुम्हारी बीमारी का कारण जान सकूं।'

धीरे से रेशम का पर्दा हिला और रुई जैसा नाजुक हाथ बाहर आया।

मुल्ला नसरुद्दीन ने धीरे से गुलजान का हाथ थाम लिया।

सिर्फ उसका हाथ दबाकर ही सांकेतिक भाषा में वह अपने दिल की बात कह सकता है, वह जानता था कि जब उसने उसका हाथ दबाया तो धीरे से गुलजान ने भी उसका हाथ दबा दिया।

मुल्ला नसरुद्दीन के दिल में हूक-सी उठी।

वह कोई और भी हरकत कर सकता था यदि अमीर उसके कंधे पर न झुका होता। वह बड़े गौर से एक-एक हरकत देख रहा था। मुल्ला नसरुद्दीन को अपने कंधे पर उसके सांस लेने की सरसराहट स्पष्ट सुनाई दे रही थी।

मुल्ला नसरुद्दीन ने उसकी छोटी उंगली पकड़ ली और गौर से उसका नाखून देखने लगा। उसने चिंतित दृष्टि से अमीर की ओर देखा, और गुलजान से पूछा—'कहां दर्द है गुलजान?'

'दिल में।'

वह एक लम्बी सांस लेकर बोली—'मेरा दिल गम और चाहत से लबरेज है।'

'तुम्हारे गम का कारण क्या है?'

'मैं जिससे मोहब्बत करती हूं, उससे जुदा हूं।'

मुल्ला नसरुद्दीन ने अमीर के कान में कहा—'यह अमीरे आजम की जुदाई में बीमार है।'

यह सुनते ही अमीर का चेहरा खिल उठा।

गुलजान पुनः बोली—'जिसे मैं दिलोजान से चाहती हूं, वह मुझसे जुदा है। मुझे लगता है कि मेरा प्यार मेरे बिल्कुल करीब है, लेकिन न तो मैं उसे गले ही लगा सकती हूं और न ही प्यार कर सकती हूं। हाय! न जाने वह मुबारक घड़ी कब आएगी, जब वह प्यार से मुझे अपने गले लगाएगा।'

मुल्ला नसरुद्दीन ने गहरा आश्चर्य जाहिर किया—'या अल्लाह! इतने थोड़े समय में ही शहंशाह ने इनके दिल पर कैसा जादू कर दिया है। वल्लाह! मरहवा!'

यह सुनकर अमीर की खुशी का कोई ठिकाना न रहा। वह एक जगह खड़े नहीं हो पा रहे थे, बल्कि आस्तीन में मुंह छिपाए पागलों की भांति खीं-खीं करके हंस रहे थे।

अमीर की हरकतें देखकर पर्दे के पीछे बैठी गुलजान बड़ी मुश्किल से अपनी हंसी रोक पाई।

मुल्ला नसरुद्दीन ने पुनः उसे सांकेतिक भाषा में समझाना शुरू किया—'गुलजान! तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करो। मैं तुम्हें प्रत्येक खतरे से बचा लूंगा। फिलहाल तो अमीरे आजम तुम्हारे करीब नहीं आ सकेंगे, क्योंकि मैंने उन्हें आगाह कर दिया है कि सितारों का आदेश है कि वे किसी औरत का नकाब न उल्टे, लेकिन इसके बावजूद तुम्हारी खुशी का दिन निकट ही है, सितारे धीरे-धीरे अपना अंदाज बदल रहे हैं। तुम समझ रही हो न गुलजान! सितारे शीघ्र ही मुबारक होंगे और तुम अपने प्यारे...अपने सपनों के शहजादे की बांहों में होगी। मैं जिस रोज तुम्हें दवा भेजूंगा, उससे अगले रोज तुम्हारी खुशी का दिन होगा। हां, दवा पीने के अगले रोज तुम तैयार रहना अपने दामन में खुशियां भरने के लिए।'

गुलजान से यह खुशी बर्दाश्त नहीं हो पा रही थी। वह कभी रोती, कभी हंसती। वह बोली—'शुक्रिया ऐ मौलाना हुसैन! आपका लाख-लाख शुक्रिया, ऐ हकीम मौलाना हुसैन! मैं समझ गई कि मेरा प्यार मेरे बिल्कुल नजदीक है। मुझे लगता है कि उसके और मेरे दिल की धड़कनें एक हो गई हैं। मैं उसके बिना नहीं रह सकूंगी।'

और फिर—

उसे समझा-बुझाकर मुल्ला नसरुद्दीन और अमीर हरम से वापस लौट आए। दरबार में आकर अमीर ने सोने के सिक्कों से भरी थैलियां मुल्ला को भेंट कीं, फिर मुल्ला नसरुद्दीन अपने आवास की ओर बढ़ गया।

चेचकरू जासूस पर कहर

उसने निर्णय कर लिया था कि अब जल्दी ही कुछ करना होगा। स्वच्छंद घूमने वाले मुल्ला नसरुद्दीन का अब उस महल में दम घुटने लगा था।

रात होने लगी थी।

बुखारा के मेहनतकश नागरिक खा-पीकर सोने की तैयारियां करने लगे थे।

मुल्ला नसरुद्दीन घूमने का बहाना करके महल से निकल आया था।

बुखारा की गलियों में ठंडक व अंधेरा था। मुल्ला नसरुद्दीन अपने दोस्त अली के चायखाने की ओर चल दिया। रास्ते में उसने शाही शख्स होने के सभी चिन्ह अपनी पोशाक से उतार दिए।

अब वह एक साधारण नागरिक की भांति था।

द्वार पर दस्तक होते ही अली ने दरवाजा खोला, उसे पहचानते ही गले लगा लिया, फिर उसे लेकर वह गुप्त कक्ष में आ गया, वहां बैठकर मुल्ला नसरुद्दीन ने उसे महल के अन्दर घटी सारी घटना बता दी और आगे का प्रोग्राम भी समझा दिया।

सारी बात जानने-समझने के बाद अली ने—'मैं चायखाने में ही गुलजान की प्रतीक्षा में बैठा रहूंगा। तुम्हारे गधे पर हर वक्त जीन कसी रहती है। वह काफी मोटा ताजा हो गया है। गुलजान के लिए भी मैंने एक मर्दाना पोशाक और पगड़ी का बंदोबस्त किया हुआ है।'

'अली!' उसकी बातें सुनकर मुल्ला नसरुद्दीन बोला—'अली! मैं तुम्हारा ये अहसान जीवन भर नहीं भूलूंगा।'

'यह समय इन बातों का नहीं है मेरे दोस्त—लो।' केतली से कप में चाय डालते हुए अली ने कहा—'चाय पीओ और अपने ठिकाने पर पहुंचो।'

उस कक्ष और चायखाने के बीच पतला-सा पर्दा पड़ा था जिसके इस तरफ अंधेरा होने की वजह से इधर का कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, मगर दूसरी ओर अर्थात् चायखाने की तरफ रोशनी होने के कारण वहां के हर ग्राहक और उसकी एक-एक हरकत को देखा जा सकता था।

वे दोनों चाय पीने में मशरूफ थे कि तभी चायखाने की तरफ से चेचकरू जासूस की आवाज सुनाई दी। वह वहां मौजूद लोगों से कह रहा था—'दोस्तो! जो आदमी मुल्ला नसरुद्दीन के नाम से यहां घूमता है वह नकली है, असली मुल्ला नसरुद्दीन तो मैं हूं। काफी समय पहले मैंने अपनी भूलों का पश्चाताप कर लिया है। मुझे अपनी नापाक भूलों का अहसास हो चुका है।'

यह सुनकर मुल्ला नसरुद्दीन ने अली को कोहनी मारते हुए कहा—'ओह! ये लोग तो ये मान बैठे हैं कि मैंने बुखारा छोड़ दिया है। लगता है भेष बदलकर मुझे इन लोगों को अपनी याद दिलानी ही पड़ेगी।'

यह कहकर उसने जल्दी से चाय का प्याला खाली किया, फिर वहीं पड़ी अली की मैली-कुचैली एक पुरानी पोशाक पहनी और पिछले दरवाजे से बाहर निकल गया? फिर गलियों का चक्कर काटकर चायखाने के एक अंधेरे कोने में आकर बैठ गया।

जासूस अभी भी अपनी हांक रहा था—'भाई लोगों! मैं मुल्ला नसरुद्दीन अपनी भूलों पर काफी शर्मिन्दा हूं। अब मैंने इस्लाम पर चलने व दीनदार मुस्लिम बनने का निश्चय कर लिया है। जब से मैंने अमीर के हुक्म की तामील करनी शुरू की है, तब से मुझे खुशियां-ही-खुशियां मिल रही हैं।'

ठीक तभी एक व्यक्ति बोला—

'ऐ मुल्ला नसरुद्दीन! लो चाय पीयो। मैं कोकन्द से बुखारा आया हूं। मैं तुमसे एक सवाल पूछना चाहता हूं।'

'हां, हां—पूछो भाई, क्या पूछना चाहते हो?'

'यदि मैं नहा रहा होऊं व मुअज्जिन की आवाज सुनाई दे तो मैं किस तरफ मुड़ूं?'

'बेशक मक्का की तरफ।' जासूस ने कहा।

तभी अंधेरे कोने से एक स्वर उभरा—'अपने कपड़ों की तरफ। घर तक नंगा जाने से बचने का एक यही उपाय है।'

यह सुनकर सभी मुंह छिपाकर हंसने लगे।

'कोने में यह कौन भिखमंगा बड़बड़ा रहा है, क्या मुल्ला नसरुद्दीन से मुकाबला करने का विचार है?'

'मुल्ला नसरुद्दीन के मुकाबले, तो मैं कुछ भी नहीं हूं।'

वह व्यक्ति पुनः जासूस से मुखातिब हुआ—'ऐ पाक मुल्ला नसरुद्दीन! मैं यह जानना चाहता हूं कि इस्लाम के मुताबिक मैयत में शामिल होने के लिए ताबूत के आगे रहना चाहिए या पीछे?'

इससे पहले कि जासूस कोई उत्तर दे पाता, कोने से पुनः आवाज आई—'यदि तुम खुद ताबूत में नहीं हो, तो आगे रहो या पीछे, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।'

इस उत्तर पर लोग ठहाका लगाकर हंस पड़े।

मुल्ला नसरुद्दीन बना जासूस तिलमिलाकर बोला—'अबे नामुराद! तेरा नाम क्या है? कौन है तू? मैं बहुत देर से तेरी बक-बक सुन रहा हूं, कहीं अपनी जान से हाथ तो धोना नहीं चाहता?' फिर वह लोगों की ओर मुखातिब हुआ—'मैं चाहूं तो इसे एक ही जवाब से चुप कर सकता हूं, लेकिन यह वक्त गम्भीर बातों पर चर्चा करने का है, किसी मूर्ख की छींटाकशी पर ध्यान देने का नहीं।'

कहकर वह एक पल को रुका, फिर बोला—'हां तो मैं कह रहा था कि

अमीर व उसके नुमायंदों का कहना मानो, तुम्हारे जीवन में खुशहाली छा जाएगी। यदि कोई नकली मुल्ला नसरुद्दीन तुम्हें मिले तो उसे अमीर के सिपाहियों और जासूसों के हवाले कर दो।'

यह सुनते ही मुल्ला नसरुद्दीन ने अपना नकली वेश उतारा और असली सूरत में सामने आ खड़ा हुआ।

उसे देखकर सभी लोग हैरत में पड़ गए।

मुल्ला नसरुद्दीन जासूस के सामने आकर दोनों कुल्हों पर हथेलियां जमाकर बोला—'तो तुम हो असली मुल्ला नसरुद्दीन?'

'हां—मैं ही असली और सच्चा मुल्ला नसरुद्दीन हूं, बाकी सब नकली हैं। तुम भी नकली हो।' जासूस ने अपनी घबराहट को छिपाने की कोशिश की।

तभी मुल्ला नसरुद्दीन चिल्लाया—'ऐ नेक मुसलमानो! शुभ काम में देरी कैसी? पकड़ लो इस नकली मुल्ला नसरुद्दीन को। इसने खुद कुबूल किया है कि यह असली मुल्ला नसरुद्दीन है। अमीर के हवाले कर दो इसे, वरना तुम पर इसकी साजिश में शरीक होने का इल्जाम भी लग सकता है।'

कहते हुए उसने उसकी नकली दाढ़ी उखाड़ ली।

सबने पहचान लिया कि वह अमीर का जासूस है।

'मारो साले को, ये अमीर का जासूस है।'

और फिर—

पलक झपकते ही भीड़ उस पर पिल पड़ी। घूंसे-लात, तमाचे और कुछ जूते उसके सिर पर चटकाने लगे।

'हाय! हाय मरा! मुझे छोड़ दो।' पिटते-पिटते वह बुरी तरह चिल्ला रहा था—'माफ कर दो, मैं तो आप लोगों से मजाक कर रहा था।'

मगर लोग यह जानकर और अधिक भड़क उठे कि वो उन्हें बेवकूफ बना रहा था। भीड़ उसे मारती-पीटती और घसीटती हुई अमीरे आजम के महल की ओर ले जाने लगी।

मुल्ला नसरुद्दीन अपना काम करके और अपनी मौलाना वाली पोशाक पहनकर महल की ओर चल दिया।

मुल्ला नसरुद्दीन ने महल में पहुंचकर देखा कि चेचकरू जासूस जमीन पर पड़ा जख्मी हालत में कराह रहा है। उसके पास लालटेन लिए अर्सला बेग खड़ा है।

'क्या बात है अर्सला बेग?' बड़ी ही नम्रता से मुल्ला नसरुद्दीन उर्फ मौलाना हुसैन ने पूछा—'इतनी रात गए कैसे परेशान हो?'

'बहुत बुरी खबर है मौलाना हुसैन साहब। वह बदमाश मुल्ला नसरुद्दीन फिर से बुखारा लौट आया है। उसने देखिए...।' धरती पर पड़े चेचकरू

जासूस की ओर इशारा करके कहा—'देखिए उस काफिर ने हमारे सबसे होशियार जासूस की क्या हालत की है। मेरा यह जासूस मेरे ही हुक्म से खुद मुल्ला नसरुद्दीन बनकर लोगों में अमीर की वफादारी और मजहब की बातें बता रहा था, मगर उसका नतीजा यह निकला...।'

'तौबा! तौबा!!' जासूस अपने जिस्म को सहलाते हुए बोला—'मेरे बाप की तौबा जो अब मैं इस नामुराद के मामले में पड़ूं। मैं...मैं तो अब यह शहर ही छोड़कर चला जाऊंगा।'

'शुक्र कर पाजी...।' उसकी हालत देखकर मुल्ला नसरुद्दीन दिल-ही-दिल में बोला—'अगर महल कुछ दूर होता तो लोगों ने तुझे जिन्दा नहीं छोड़ना था।'

मुल्ला का भेद खुला

सुबह का वक्त गुजरता जा रहा था। ज्यों-ज्यों सूरज चढ़ रहा था, त्यों-त्यों गर्मी बढ़ती जा रही थी। दोपहर तक इतनी गर्मी बढ़ चुकी थी कि लोगों को शरीर के कपड़े उतार देने का मन करने लगा था।

मुल्ला नसरुद्दीन अपने कक्ष से निकलकर कैदी के कक्ष में पहुंचा।

'ऐ परम विद्वान और गुणी मौलाना हुसैन! आज आपकी कैद की मियाद खत्म हो जाएगी। आज की रात मैं खुद भी इस महल को छोड़ दूंगा, मगर मैं एक शर्त पर आपके भागने के लिए आपका द्वार खुला छोड़ सकता हूं कि आप यहां से दो दिन और न निकलें। यदि आपने मेरी यह बात न मानी तो यह भी हो सकता है कि उस समय मैं महल में ही रहूं तो आप अमीर को मेरा असली नाम और इस सारी घटना के विषय में अवश्य बता दें।'

'अ...आखिर तुम हो कौन?' बूढ़े आलिम ने कांपते स्वर में पूछा।

'मुल्ला नसरुद्दीन!'

'क...क्या...मुल्ला नसरुद्दीन?' बूढ़ा आलिम इस प्रकार हड़बड़ाकर पीछे हटा मानो उसका पांव जलते तवे पर पड़ गया हो। वह फटी-फटी, आश्चर्य और दहशत भरी नजरों से मुल्ला नसरुद्दीन का चेहरा देखता रह गया। आतंक की हालत यह थी कि भय के मारे उसकी घिग्गी बंध गई। मुंह से आवाज तक नहीं निकली।

मुल्ला नसरुद्दीन ने अब अधिक देर वहां रुकना मुनासिब न समझा।

वह आहिस्ता से कक्ष से बाहर आ गया।

वह कमरा एक मीनार में बना हुआ था, इसके नीचे सिपाहियों का पहरा था।

मुल्ला नसरुद्दीन के जाते ही बूढ़े आलिम ने अपने द्वार की सांकल बंद कर ली और होंठों-ही-होंठों में बड़बड़ाया—'नहीं! नहीं! मेरा मुल्ला नसरुद्दीन से कोई वास्ता ही नहीं है, चाहे मुझे यहां एक महीना कैद रहना पड़े, मगर मैं चुप रहूंगा, बिल्कुल चुप। यह मुल्ला नसरुद्दीन इंसान नहीं, शैतान है।'

मुल्ला का पहला दांव

रात हो गई थी।

मुल्ला नसरुद्दीन को इसी क्षण का इंतजार था। वह अपने कक्ष से मिट्टी की एक सुराही लेकर बाहर निकला और सीढ़ियां उतरकर दबे पांव हरम के पहरेदारों तक जा पहुंचा।

'वह देखो, एक सितारा और टूटा।' एक मोटा पहरेदार सिपाही बोला—'यदि तुम कहते हो कि सितारे टूटकर जमीन पर गिरते हैं, तो वे जमीन पर पड़े दिखाई क्यों नहीं देते?'

'वे शायद समुद्र में गिर जाते हों।' दूसरे ने कहा।

तभी मुल्ला नसरुद्दीन ने टोका—'ऐ सिपाहियों! ख्वाजासरा (पहरेदार हिजड़े) को बुलाओ, मैं अमीर की नई रखैल के लिए दवा लाया हूं।'

खबर मिलते ही ख्वाजासरा दौड़ता हुआ आया।

उसने बड़ी ही सावधानी से सुराही थाम ली।

उसमें सफेद खड़िया का पानी था। मुल्ला नसरुद्दीन ख्वाजासरा को बड़ी बारीकी से इस दवा की सेवन विधि समझाने लगा।

तभी मोटा तुंदियल सिपाही बोला—'ऐ परम गुणी मौलाना हुसैन! आप तो सब कुछ जानने वाले हैं, कृपया ये बताएं कि ये सितारे टूटकर कहां चले जाते हैं?'

मुल्ला नसरुद्दीन के सामने चाहे कैसी भी परिस्थिति क्यों न हो, वह मजाक का वक्त और मौका निकाल ही लेता था। उसने बड़ी गम्भीरता से उन्हें बताया—'ये सितारे! मेरे बच्चों! ये सितारे टूटकर जमीं पर गिरते हैं और छोटे-छोटे चांदी के सिक्कों में तबदील हो जाते हैं। सुबह भिखारी लोग इन्हें बटोर लेते हैं। इस प्रकार मैंने बहुत से लोगों को अमीर बनते देखा है।'

सिपाही आश्चर्य से एक-दूसरे का मुंह देखने लगे।

मुल्ला नसरुद्दीन उन्हें बेवकूफ बनाकर आगे बढ़ गया। उसे इस बात का बिल्कुल पता न था कि यह मूर्खतापूर्ण तुक्का भविष्य में उसके लिए बड़ा ही कारगर साबित होने वाला है।

वह अपनी मीनार पर चला गया।

करीब आधी रात को वह अपनी मीनार से फिर नीचे उतरा और दबे पांव अमीर के शयनकक्ष की ओर बढ़ने लगा। उसका विचार था कि पहरेदार अब तक सो गए होंगे, मगर ऐसा नहीं था। कक्ष के करीब जाने पर उसे कुछ फुसफुसाहटें सुनाई दीं।

'काश!' एक पहरेदार कह रहा था—'काश! यहां भी कोई सितारा टूटकर गिर जाता तो हम भी अमीर बन जाते।'

'भाई! मुझे तो इस बात में कुछ दम नजर नहीं आता।'
'अरे भई विश्वास कर, बगदाद के आलिम ने यही कहा था। उनका इल्म बहुत गहरा है, क्या इतनी-सी बात के लिए वे गलत कहेंगे?'
'बात तो ठीक है।'
उनकी बातें सुनकर मुल्ला नसरुद्दीन के दिमाग में तुरन्त एक विचार कौंधा। हालांकि पहले उसे उनकी बातें सुनकर बहुत गुस्सा आया था कि बेवकूफ किस अहमकाना बात को लेकर अपनी रात खराब कर रहे हैं, मगर अब—?
उसने आसमान की ओर देखा, तभी एक सितारा टूटा और तेजी से नीचे गिरने लगा। मुल्ला नसरुद्दीन ने तुरन्त अपनी जेब से एक सिक्का निकालकर पहरेदारों की ओर उछाल दिया।
'कु...कुछ सुना तुमने...।' पहले पहरेदार ने कांपती आवाज में पूछा।
'हां—सुना तो...।'
तभी मुल्ला नसरुद्दीन ने दूसरा सिक्का फेंका।
दोनों पहरेदारों ने पलटकर उस ओर देखा, फिर झपटकर उसे कब्जाने के लिए पेट के बल उस पर लेट गया। दूसरा दूसरे सिक्के की ओर लपका।
इस मौके का भरपूर फायदा उठाया मुल्ला नसरुद्दीन ने। उसने एक मुट्ठी सिक्के वहां से कुछ आगे की ओर उछाल दिए।
वे दोनों उस ओर लपके।
और मुल्ला नसरुद्दीन लपककर दरवाजे में घुस गया।
कुछ ही पलों बाद वह हरम में गुलजान के कक्ष में था। उसे देखते ही गुलजान उससे लिपट गई, मगर यह समय प्यार मोहब्बत का नहीं था। मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा—'जल्दी करो गुलजान! यह समय प्यार मुहब्बत का नहीं है।'
ख्वाजासरा बेफिक्री की नींद सोया पड़ा था।
मुल्ला नसरुद्दीन गुलजान को लेकर दरवाजे पर पहुंचा, वे दोनों सिक्के बटोरने के बाद अब आसमान की ओर ताक रहे थे। मुल्ला नसरुद्दीन ने एक मुट्ठी सिक्के अपनी दाहिनी ओर उछाल दिए।
खनखनाहट की आवाज होते ही सिपाही उधर लपके और इधर बिना एक पल भी गवाएं मुल्ला नसरुद्दीन गुलजान को लेकर अपनी मीनार की ओर लपका।
कुछ पलों बाद ही वह सही-सलामत मीनार पर स्थित अपने कक्ष में था।
उसके कमरे की खिड़की से एक रस्सा महल के पिछवाड़े की ओर लटका था। उसने गुलजान को समझाया कि उसे क्या करना है।
'मगर इतनी ऊंचाई से...?' गुलजान घबराई।
'घबराओ मत गुलजान...कुछ नहीं होगा...।'
बड़ी मुश्किल से समझा-बुझाकर उसने गुलजान को रस्सी के सहारे उतार

दिया। हांफती-कांपती गुलजान नीचे उतरने लगी।

और जब उसके पांव जमीन पर टिक गए तो मुल्ला नसरुद्दीन ने खिड़की पर आधा झुककर फुसफुसाया—'जाओ गुलजान, वहीं जाना, जहां मैंने तुम्हें बताया है।'

गुलजान तेजी से एक ओर भाग गई।

महल में भूकंप

महल में भूकंप आ गया था।

चारों ओर अफरा-तफरी का माहौल था, सिपाही पागलों की भांति इधर-से-उधर भाग रहे थे। हुआ ये था कि मुल्ला नसरुद्दीन और गुलजान के वहां से निकलने के बाद ही ख्वाजासरा की आंख खुल गई थी और नई दाश्ता को उसके बिस्तर पर न पाकर उसने सीधे जाकर अमीर को इत्तिला दी, फिर अमीर की चीख-पुकार और दहाड़ सुनकर सभी एकत्रित हो गए। अमीर ने जल्दी-जल्दी अर्सला बेग को सारी स्थिति बताई, अगले ही पल मशालें जल उठीं और महल में चप्पे-चप्पे पर गुलजान को खोजा जाने लगा।

अमीर के हुक्म से उसे भी उनके समक्ष हाजिर होना पड़ा था। उसे देखते ही अमीर जैसे फूट पड़े—'मौलाना हुसैन! यह सब क्या हो रहा है। माबदौलत को अब अपने महल में भी उस काफिर मुल्ला नसरुद्दीन से हिफाजत महसूस नहीं होती? ऐसा पहली बार हुआ है कि किसी बादशाह के हरम से कोई दाश्ता चुरा ली जाए।'

'माबदौलत!' साहस बटोरकर प्रधानमंत्री बख्तियार ने कहा—'ऐसा भी तो हो सकता है कि यह काम मुल्ला नसरुद्दीन के बजाय किसी और का हो?'

'किसी और का! किसका?' अमीर दहाड़े—'और कौन ऐसी गुस्ताखी कर सकता है? आज सुबह ही हमें खबर मिली थी कि नसरुद्दीन बुखारा में लौट आया है और आज रात ही महल से दाश्ता चुरा ली गई? हम पूछते हैं कि उसके अलावा यह हरकत और कौन कर सकता है? हम कहते हैं, फुर्ती से उसकी खोज करो, चप्पे-चप्पे पर सिपाहियों का पहरा लगा दो—अर्सला बेग! यदि हमारी दाश्ता न मिली तो तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा।'

फिर सुई की भांति उसकी खोज शुरू हुई। पहरेदारों ने महल का कोना-कोना छान मारा। इस तलाशी के काम में मुल्ला नसरुद्दीन बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहा था। वह ऊट-पटांग हरकतें कर रहा था। कभी कालीन हटाता, कभी पानी से भरे हौजों में छड़ें घुमाकर देखता। कभी बेवजह ही शोरगुल मचाता, इधर-उधर भागता फिरता। केतली, मर्तबान यहां तक कि चूहों के बिलो में भी झांकने से न चूका था।

कुछ देर बाद वह अमीर की ख्वाबगाह में वापस लौट आया और काफी देर

तक उस काफिर बदमाश मुल्ला नसरुद्दीन को पकड़ने की युक्तियां अमीर को सुझाता रहा।

ये युक्तियां बड़ी चालाकी भरी थीं। इन्हें सुनकर अमीर काफी खुश दिखाई देने लगे। और फिर, अमीर से सोने के सिक्कों से भरी एक थैली लेकर ही वह वहां से टला। उस रात वह अंतिम बार अपनी मीनार की सीढ़ियां चढ़ा। कक्ष में जाकर एक चमड़े की थैली में उसने उन सिक्कों को रखकर अपने लिबास में जज्ब कर लिया, फिर कक्ष का द्वार बंद करके सीढ़ियां उतरकर मीनार से नीचे आ गया। आज वह आजाद पंछी की भांति लम्बी उड़ान भरना चाहता था।

इस सोने के महल में अब उसका दम घुटने लगा था।

मगर जैसे ही वह फाटक के निकट पहुंचा, उसके पांव जाम होकर रह गए। सामने का दृश्य देखकर उसका रंग पीला पड़ गया।

एक-एक करके उसके सभी साथियों को फाटक के अन्दर लाया जा रहा था। आने वालों में सबसे आगे बूढ़ा नयाज, फिर चायखाने का मालिक अली उसके बाद यूसुफ लोहार और...इस प्रकार पन्द्रह लोगों का काफिला था।

सबको कैद में डाल दिया गया।

अमीर के हुक्म से कल सुबह उनकी किस्मत का फैसला होना था।

अब इतने लोगों को वहां फंसा छोड़कर भला मुल्ला नसरुद्दीन कैसे भाग सकता था? अब उसका सबसे पहला काम था, अपनी जान जोखिम में डालकर उनकी रिहाई।

मुल्ला का असली रूप

खुले मैदान में अमीर ने अपनी अदालत लगाई।

सुबह होते ही ऐलान करवा दिया गया कि आज मुल्ला नसरुद्दीन को पनाह देने वालों को कठोर दण्ड दिया जाएगा, अतः हजारों नागरिक वहां एकत्रित हो गए थे।

जब अमीर और बाकी ओहदेदारों ने अपने-अपने आसन संभाल लिए तो कैदियों को पेश किया गया। उन्हें देखकर प्रधानमंत्री बख्तियार बोला—'इन लोगों में नयाज कुम्हार, अली चाय वाला और यूसुफ लोहार आदि को कानून का दोषी पाया गया है। इन लोगों का दोष यह है कि इन्होंने अमन में खलल डालने वाले, फूट डालने वाले, शरारत पसंद, काफिर इंसान मुल्ला नसरुद्दीन को पनाह देकर गुनाह किया है, अब अमीर का हुक्म है कि बहुत दिनों तक मुल्ला नसरुद्दीन को अपने घर में पनाह देने वाले नयाज कुम्हार को सबसे पहले मौत की सजा दी जाए। इसका सिर कलम कर दिया जाए।'

'याद रहे!' फिर वह भीड़ से मुखातिब हुआ—'भविष्य में मुल्ला नसरुद्दीन को पनाह देने वाले हर व्यक्ति को सजा मिलेगी। उसे जल्लादों को सौंप दिया

जाएगा। यदि कोई अपराधी मुल्ला नसरुद्दीन का पता बताएगा तो उसकी सजा माफ कर दी जाएगी और उसकी इच्छा से अन्य अपराधियों को भी माफ कर दिया जाएगा।' इसके बाद बख्तियार नयाज कुम्हार की ओर घूमा—'नयाज! क्या तुम अपनी जान के बदले मुल्ला नसरुद्दीन का पता बताते हो?'

'हरगिज नहीं।' दृढ़ता से बूढ़े नयाज ने कहा।

यह सुनते ही जल्लाद उसे घसीटकर लकड़ी के कुन्दे तक ले गए। बूढ़े नयाज ने सिर झुकाकर कुन्दे पर रख दिया।

'ठहरो!' तभी मुल्ला नसरुद्दीन भीड़ को चीरता हुआ तख्त पर जा पहुंचा।

वह तख्त पर पहुंचकर काफी तेज आवाज में चीखा—'शहंशाहे आजम! जल्लादों को हुक्म दें कि तामील रोक दी जाए। मैं अभी और यहीं मुल्ला नसरुद्दीन को पकड़कर दिखा दूंगा।'

अमीर ने आश्चर्य से जल्लादों को रुकने का संकेत किया। जल्लादों के कुल्हाड़ी लिए हाथ नीचे आ गए।

मुल्ला नसरुद्दीन पुनः बुलंद आवाज में बोला—'अमीरे आजम! क्या इन नाचीज पनाह देने वालों को सजा देनी उचित होगी? वह भी उस हालत में कि पनाह देने वालों का सरदार बच जाए, क्या उस शख्स को छोड़ दिया जाए जिसके यहां मुल्ला नसरुद्दीन रहता, खाता व इनाम पाता रहा है, जिस शख्स ने उसकी पूरी देख-रेख और हिफाजत की?'

'कौन है वह नामाकूल!' एकाएक ही अमीर गुस्से से दहाड़े—'ऐसे शख्स का सिर तो सबसे पहले कलम किया जाना चाहिए, लेकिन वह है कौन? उसे फौरन हमारे सामने पेश किया जाए।'

'पहले हुजूर वादा करें कि यदि हुजूर उसे सजा न दे पाए तो इन छोटे गुनहगारों को माफ कर देंगे।'

'हां, हम वादा करते हैं कि यदि उसे सजा न दे पाए तो इन सबको माफ कर दिया जाएगा।'

अब मुल्ला नसरुद्दीन तेजी से भीड़ की तरफ घुमा—'सुना आप लोगों ने! अमीर का कौल है कि यदि उसे सजा न दे पाए तो इन सबको माफ कर देंगे।'

'अब उसे हाजिर करो।' अमीर दहाड़े—'हम उस काफिर की सूरत देखना चाहते हैं।'

'हुजूर!' मुल्ला नसरुद्दीन अपने असली रूप में आ गया—'मैं हूं मुल्ला नसरुद्दीन और आप हैं मुझे पनाह देने वाले सबसे बड़े गुनहगार—मैंने आपके साथ इतना समय गुजारा, खाया-पिया व इनाम भी पाया। क्या आप मुझे पहचान पाए?'

यह सुनते ही अमीर पर जैसे घड़ों पानी पड़ गया। वह सकते की हालत में बैठे रह गए।

सिपाहियों ने लपककर मुल्ला नसरुद्दीन को पकड़ लिया। मुल्ला नसरुद्दीन ने इसका कोई विरोध नहीं किया, बल्कि भीड़ से मुखातिब होकर बोला—'अमीर ने वादा किया है कि सजा-ए-मौत के लिए चुने गए लोगों को माफ कर दिया जाएगा।'

ये आवाम के लिए इशारा था कि अब वे इन बेगुनाह लोगों को छुड़वा लें, अतः पलक झपकते ही अफरा-तफरी मच गई। भीड़ सुरक्षा घेरे को तोड़कर तख्त की ओर बढ़ती हुई चिल्लाई—'कैदियों को रिहा करो, रिहा करो।'

अमीर और बख्तियार में कुछ काना-फूसी हुई, फिर अमीर के इशारे पर कैदियों को रिहा कर दिया गया। मुल्ला नसरुद्दीन को पकड़कर सिपाही एक ओर ले जाने लगे तो लोगों के गले रुंध गए और भर्राई हुई आवाज में बोले—'अलविदा! अलविदा मुल्ला नसरुद्दीन।'

मौत की विशेष सजा

आज फिर अमीर की अदालत लगी।

हथकड़ियों और बेड़ियों से जकड़ा जब मुल्ला नसरुद्दीन दरबार में लाया गया तो शर्म के मारे दरबारियों की नजरें झुक गई। उसे देखकर आलिम भवें चढ़ाकर अपनी दाढ़ियां सहलाने लगे। वे एक-दूसरे से नजरें भी नहीं मिला पा रहे थे।

अमीर भी सकपकाकर दूसरी ओर ताकने लगे।

बगदाद के मौलाना हुसैन भी दरबार में हाजिर थे।

अमीरे आजम ने बहुत लम्बी कार्यवाही न करके मुल्ला नसरुद्दीन को फौरन ही मृत्युदण्ड की सजा सुना दी, अब यही तय होना था कि मुल्ला नसरुद्दीन को मौत की सजा किस प्रकार दी जाए?

सबसे पहले अर्सला बेग ने अपनी राय पेश की—'माबदौलत! इसे सूली पर चढ़ा दिया जाए, ताकि लोग इसकी दर्दनाक मौत को अपनी आंखों से देख सकें।'

'नहीं, तुर्की के सुलतान ने इसें यही सजा दी थी, मगर यह नामुराद जिन्दा बच गया।'

बख्तियार ने कहा—'अमीरे आजम! इस काफिर का सिर कलम कर देना चाहिए।'

'नहीं! यह भी कोई कारगर तरीका नहीं है।' अमीर ने बुरा-सा मुंह बनाया—'क्योंकि बगदाद के खलीफा ने एक बार ऐसा ही किया था, लेकिन यह शैतान वहां से भी साफ-साफ बच गया।'

इस प्रकार एक के बाद एक दरबारी अपनी-अपनी राय पेश करते रहे, मगर अमीर को किसी की भी राय न जंची।

सबसे अंत में बगदाद के आलिम मौलाना हुसैन ने अपना मत प्रस्तुत

किया—'अमीरे आजम! मौत का एक तरीका बाकी है जो आज तक किसी ने नहीं आजमाया। वह है—पानी में डूबोकर किसी को मारना। मैंने अपने इल्म से पता लगाया है कि बुखारा में एक पाक तालाब है जो कि शेख तुरखान के तालाब के नाम से मशहूर है। गंदी ताकतें ऐसे पाक तालाब के पास भी नहीं फटकतीं। इस मुजरिम को यदि काफी समय तक पानी में डूबोया जाए, तो यकीनन इसकी मौत हो जाएगी।'

'वाकई!' अमीर के चेहरे पर खुशी के भाव दिखाई दिए—'यकीनन ये राय काबिले तारीफ है। इस पर फौरन अमल किया जाए।'

और फिर, प्रधानमंत्री सहित सभी दरबारियों ने तय किया कि मुल्ला नसरुद्दीन को चमड़े के थैले में बंद कर तालाब में काफी देर तक डुबोए रखा जाए। इस प्रकार वह यकीनन मर जाएगा। तय हुआ कि सूर्योदय के बाद उसे एक थैले में बंद कर ले जाया जाएगा। साथ ही चार थैले चिथड़ों से भरे भी ले जाए जाएंगे ताकि असली मुल्ला नसरुद्दीन किस थैले में है, किसी को पता ही न चले। खाली बोरे आम रास्ते से तथा असली बोरा सुनसान रास्ते से ले जाया जाएगा ताकि लोगों को किसी प्रकार का हंगामा करने का मौका न मिले।

सूदखोर जाफर की शामत

शाम हो रही थी। तालाब के किनारे एक मंच बना दिया गया था जिस पर यथासमय अमीर को आकर बैठना था। वे यह नजारा अपनी आंखों से देखना चाहते थे। बोरे महल से रवाना कर दिए गए। खाली बोरों के साथ आठ-आठ और मुल्ला नसरुद्दीन वाले बोरे के साथ केवल तीन सैनिक भेजे गए।

यथासमय अमीर भी आकर अपने तख्त पर विराजमान हो गए। उन्होंने अर्सला बेग से पूछा—'अर्सला बेग! अब क्या देर है?'

'बस मेरे आका! सिपाही पहुंचते ही होंगे।'

तभी मस्जिद की बुर्जियों से अजान की आवाज सुनाई दी।

आधी मंजिल तय हो चुकी थी जब मुल्ला नसरुद्दीन के कानों में अजान की आवाज पड़ी। वह बोरे में बंद एक सिपाही की पीठ पर लदा हुआ था। बारी-बारी से सिपाही उसका बोझा ढो रहे थे। एक उसे पीठ पर लादता तो दो नंगी तलवार लेकर उसके पीछे चलते।

अजान की आवाज सुनकर मुल्ला नसरुद्दीन बोला—'ऐ सिपाहियों! मैं मरने से पहले दुआ करना चाहता हूं ताकि अल्लाह मेरी रूह को कुबूल फरमाए।'

'ठीक है, बोरे में ही दुआ कर लो।' सैनिक ने बोरा नीचे रखकर कहा—'हम तुम्हें खोल नहीं सकते।'

'हम लोग कहां हैं, अल्लाह के लिए मेरा मुंह मस्जिद की ओर कर दो।'

'हम लोग कर्शी फाटक के पास हैं, यहां चारों ओर मस्जिदें-ही-मस्जिदें हैं,

अब जल्दी से दुआ कर लो।'

मुल्ला नसरुद्दीन दुआ पढ़ने लगा—'या अल्लाह! तू कुछ ऐसा करिश्मा कर कि जिस किसी को भी मेरे दस हजार तंके मिलें, वह उनमें से एक हजार किसी मस्जिद को देकर मेरे लिए मुल्ला से एक वर्ष तक दुआ की खैर मनाए।'

दस हजार तंकों का नाम सुनते ही सिपाहियों के मुंह में पानी आ गया। एक ने कहा—'हम भी इंसान हैं, हमारे सीने में भी प्यार भरा दिल है, हम तुमसे नर्मी का बरताव करेंगे। यदि हम अमीर की तनख्वाह बिना गुजारे लायक धन पा जाते, तो हम तुम्हें छोड़ देते।'

दूसरे ने कहा—'मैं एक मस्जिद की तीमारदारी के लिए चंदा देता हूं। यदि कोई व्यक्ति ऐसा मिल जाता जो सात-आठ हजार तंके चंदा देता, तो उससे वादा कर लेता कि अल्लाह के तख्त के पास बादलों से लिपटा उसका नाम रोज ऊपर आता रहेगा।'

'ऐ नेक व पाक सिपाही! मैं तुम्हें दस हजार तंके देना चाहता हूं जो कि कर्शी कब्रिस्तान में गड़े हैं, वे कब्रिस्तान के पश्चिमी कोने में कब्र के पत्थर के नीचे दबे पड़े हैं, यदि तुम दस वर्षों तक मेरा नाम मस्जिद में लिवा सको, तो उन्हें तुम्हीं निकाल लेना। इनमें तीनों कोनों के नीचे मैंने तीन हजार तीन सौ तैंतीस व एक तिहाई तंके गाड़ रखे हैं। अब तुम्हें कोई दिक्कत न होगी।'

सिपाहियों की नजरें आपस में मिलीं, निर्णय हुआ, फिर एक सिपाही को बोरे के पास छोड़कर दो सिपाही कब्रिस्तान की ओर चले।

बेसब्री का मारा तीसरा सिपाही भी उसी ओर चल दिया।

तभी उधर से कोई लंगड़ा व्यक्ति गुजरा। यह सूदखोर जाफर था। बोरे पर नजर पड़ते ही उसका लालची मस्तिष्क जाग उठा—'इसमें क्या हो सकता है?'

मुल्ला नसरुद्दीन ने तुरन्त उसकी आवाज पहचान ली। वह धीरे से खांसा।

'उफ्फ! इसमें तो लगता है कोई आदमी है।' फिर बोरे के करीब चेहरा करके उसने पूछा—'ऐ भाई! क्या तुम्हें जबरन किसी ने इस बोरे में बंद किया है?'

मुल्ला नसरुद्दीन का शैतानी दिमाग जाग उठा। उसे अपनी वह कसम याद आई जो उसने सभी नागरिकों के सामने खाई थी।

'सूदखोर जाफर को उसी तालाब में डूबोकर मारूंगा।'

वह बोला—'अरे भले आदमी! क्या मैं छः सौ तंके इसलिए खर्च करूंगा कि कोई मुझे बोरे में बंद कर दे।'

'छः सौ तंके—? क्यों खर्च किए तुमने छः सौ तंके?'

'पहले वादा करो कि मेरी पूरी कहानी सुनोगे?'

'मैं वादा करता हूं भाई।'

'यह बोरा एक अरब से मैंने इसलिए किराए पर लिया था क्योंकि मैं लंगड़ा, काणा व कुबड़ा हूं। मेरी प्रेमिका का बाप मुझे पसंद कर सके, इसलिए मैं

इस बोरे में बंद हो गया। इस बोरे की खासियत यह है कि इसमें चार घंटे बंद रहकर कोई भी आदमी विकार रहित और सुन्दर हो जाता है। अब मुझे ही देख लो, मैं बिल्कुल ठीक और खूबसूरत हो गया हूं। मैं चाहता तो दो घंटे के लिए किसी को इस बोरे में साझी कर लेता तो मेरे तीन सौ तंके बच जाते, क्योंकि मैं तो दो घंटे में ही बांका जवान हो गया हूं। खैर... छः सौ तंकों की अब मुझे कोई परवाह नहीं। इसका इलाज कब्रिस्तान के पास ही होता है। अरब ने मुझे बताया था कि अकेला होने पर तीन जिन्न आकर पूछेंगे कि बता दस हजार तंके कहां हैं। उत्तर में मुझे कहना होगा—तांबे जैसी ढाल है जिसकी, उसका माथा तांबे का, उकाब के दर पर उल्लू! ऐ जिन्न! तू पता पूछता है उस रकम का जो तूने नहीं छिपाई, इसलिए पलट व चूम मेरे गधे की दुम।'

'जैसा अरब ने कहा था, वैसा ही हुआ। अब मैं बिल्कुल ठीक हूं, अब तुम यहां से चलते बनो, मेरी कहानी खत्म!'

'ऐ नेक इंसान! मैं भी बिल्कुल वैसा हूं जैसे तुम थे। मैं भी सुन्दर होना चाहता हूं। क्या तीन सौ तंके में यह बोरा तुम मुझे नहीं दे सकते?'

'दे सकता हूं, लेकिन रकम पेशगी देनी होनी। हो सकता है ठीक होने के बाद तुम मुकर जाओ।'

'बेशक-बेशक—पेशगी ले लो।' उसने जल्दी-जल्दी बोरे का मुंह खोला, मुल्ला नसरुद्दीन खटाक से बाहर आ गया। जाफर ने उसे एक थैली थमाई और बड़ी बेताबी से बोरे में घुस गया।

जल्दबाजी और उतावलेपन में उसने यह भी नहीं देखा कि बोरे में से कौन निकला है और उसने तीन सौ तंकों की थैली किसे थमाई है?

उतनी ही तेजी से मुल्ला नसरुद्दीन ने बोरे का मुंह बांधा और लपककर एक पेड़ की ओट में जा छिपा। वह छिपा ही था कि सिपाही क्रोध से पांव पटकते हुए वहां आ पहुंचे। उनके चेहरे क्रोध से तमतमा रहे थे। आते ही वे बोरे पर पिल पड़े। बेहिसाब ठोकरें उन्होंने बोरे में बैठे जाफर पर रसीद कर दीं।

वे बोले—'क्यों बे चालबाज! तेरी यह मजाल! हमें चकमा देना चाहता था—दगाबाज!'

अन्दर बैठा जाफर किसी मंत्र की भांति वह सब बोल रहा था, जो मुल्ला नसरुद्दीन ने उसे बताया-पढ़ाया था। उसकी ऊल-जुलूल बकवास सुनकर सिपाहियों को अधिक क्रोध आ गया और वे तबीयत से उसकी धुनाई करने लगे।

'अबे गीदड़ की औलाद! हमें बेवकूफ बनाकर भागना चाहता था।'

जाफर अपनी हांके जा रहा था और सिपाही क्रोध में भरकर उसकी कुटाई कर रहे थे। अंत में जब सिपाही थक गए तो उसे कन्धे पर लादकर चल दिए।

अब मुल्ला नसरुद्दीन ओट से बाहर निकला। उसने एक नहर पर हाथ-मुंह धोए और मस्ती में एक ओर चल दिया, खुली हवा में आजादी की सांसें लेता हुआ।

कुछ देर बाद सिपाहियों ने तालाब के किनारे मंच की सीढ़ियों पर चढ़कर बोरा बेरहमी से एक ओर पटक दिया।

तभी जाफर भीतर से कराहा—'अरे भाई जिन्न! जरा संभलकर, अगर इस प्रकार बोरा पटकोगे तो, मेरी तो हड्डी-पसलियां ही टूट जाएंगी।'

'पाक शेख तुरखान के तालाब की तह में जाकर तू शीघ्र ही ठीक हो जाएगा।'

वहां काफी शोर-शराबा मचा हुआ था। आवाजों के बीच अमीर, बख्तियार व अर्सला बेग की आवाजें पहचानकर जाफर घबरा गया।

'अलहम दुलिल्लाह! बुखारा के अमीरे आजम के हुक्म से कुफ्र फैलाने वाला मलअुन बदमाश, अमन की शान्ति भंग करने वाला, फूट डालने वाला मुल्ला नसरुद्दीन पानी में डुबोया जा रहा है।'

इस घोषणा के बाद ही कुछ जल्लादों ने बोरा उठाया और सिर से ऊंचा उठाकर हवा में लहराते हुए पानी के हवाले कर दिया।

बोरे में बंद जाफर बुरी तरह चिल्ला रहा था—'बचाओ! बचाओ, मैं मुल्ला नसरुद्दीन नहीं, जाफर हूं! जाफर! मुझे छोड़ दो! मैं जाफर हूं।'

मगर उसकी चीख-पुकार पर भला किसे ध्यान देना था।

उसकी चीख गुलजान की उस तेज चीख के नीचे दब गई जो कि नयाज के कंधे पर सिर रखकर रोने लगी थी।

जबकि अमीर के खेमें में खुशियां छा गईं थीं।

अमीर सहित सभी दरबारियों के चेहरे खिले हुए थे।

मुल्ला नसरुद्दीन की विदाई

इधर—अमीर के महल में जश्न मनाया जा रहा था, उधर नसरुद्दीन के चहेतों ने तालाब में से पांचों बोरे निकाल लिए थे। चिथड़ों से भरे चार बोरे इधर-उधर फेंक दिए गए। पांचवें बोरे का जब लोग मुंह खोलने लगे तो गुलजान दहाड़े मार-मारकर रोने लगी। अली और नयाज भी सिसकने लगे।

लेकिन यूसुफ लोहार ने जैसे ही बोरा पलटा, वैसे ही सबकी चीखें हैरत और दहशत में तब्दील हो गईं।

'जाफर—जाफर!'

हैरानी से चीखते हुए सभी के मुंह से ये शब्द निकले।

'ये तो जाफर की लाश है।' यूसुफ लोहार चीखा।

गुलजान रोते-रोते हंस पड़ी, फिर हंसते-हंसते रो पड़ी—'ऐ परवर दिगार! तेरा लाख-लाख शुक्र है कि मेरा नसरुद्दीन जिन्दा है।'

'मगर वह है कहां?' अली चीखा।

'मैं यहां हूं—दोस्तों! मुल्ला नसरुद्दीन कभी नहीं मर सकता।'

लोगों में हर्ष की लहर दौड़ गई।

'मगर भाई नसरुद्दीन! तुमने जाफर को इस बोरे में बंद कैसे किया?'
यूसुफ भाई! तुम्हें मेरी कसम तो याद होगी न? मैंने अपनी उसी कसम पूरा किया है। क्या तुम्हें इसकी तलाशी में इसका बटुआ मिला?'
'हां ये लो, इसमें रसीदे हैं।'
नसरुद्दीन ने हजारों तंकों की वे रसीदें निकालीं और फाड़कर फेंक
'आज से आप सबका कर्जा माफ।' कहकर वह गुलजान से मुखा हुआ—'अब आप लोग मुझे इजाजत दें। गुलजान! क्या तुम मेरे चलोगी?'
'हां, मैं आपके साथ जीवन की हर डगर पर चलने के लिए तैयार हूं, वह फूलों भरी हो या कांटों भरी। मैं हर जन्म में तुम्हारी थी, तुम्हारी हूं तुम्हारी ही रहूंगी।'
और फिर, बुखारा के निवासियों ने बड़ी शानो-शौकत से मुल्ला नसरु को विदा किया। सबने उसे कुछ-न-कुछ भेंट दी। कुम्हारी टोले के सभी खामोश खड़े थे। सूदखोर के सूद और अमीर के टैक्सों के बाद उनके पास बचा ही नहीं था, तभी एक बूढ़े व्यक्ति ने कहा—'कौन कहता है कि ह कुछ नहीं दिया? क्या हमने अपना कलेजे का टुकड़ा गुलजान नहीं दी जो मुल्ला नसरुद्दीन का घर आबाद करेगी।'
फिर टोले की औरतें गुलजान को कुछ शिक्षा देने लगीं।
तभी मुल्ला नसरुद्दीन गुलजान को अपने गधे पर बैठाकर बोला—'अच बुखारा वासियों! शहर के फाटक खुलने वाले हैं, अब मेरा यहां से चुपचा निकल जाना ही ठीक रहेगा। अल्लाह करे, आज के बाद तुम सब चैन की नी सोओ। दुर्भाग्य का साया भी तुम पर न पड़े।'
कहते-कहते मुल्ला नसरुद्दीन की आंखों में आंसू आ गए।
'अल्लाह करे तुम्हारा सफर बखैरो-खूबी पूरा हो, मुल्ला नसरुद्दीन! अप वतन को न भूल जाना।'
'विदा—विदा ऐ मेरे खैरख्वाहों, विदा।'
और फिर वे अलग-अलग गधों पर सवार होकर विदा हो गए।
बूढ़ा नयाज एक टीले पर खड़ा डबडबाई आंखों से उन्हें तब तक देखत रहा, जब तक कि वे नजर आते रहे, फिर एक दीर्घ सांस छोड़कर अपने दोने हाथ दुआ की शक्ल में आसमान की ओर उठाकर बोला—'ऐ परवरदीगार मेरे बच्चों की हिफाजत करना।'
बड़बड़ाते हुए उसकी आंखों से खुशी के आंसू बह रहे थे क्योंकि मुल्ला नसरुद्दीन की बदौलत अपने घर की आबरू को वह आज इज्जत से विदा कर सका था।

❑ ❑ ❑